

मूल्य : 40/-

JHAHIN01072

राष्ट्रीय मासिक

वर्ष : 04 | अंक 33

June, 2026

रफ्तार मीडिया



साथ आएंगी दो मजबूत आवाजें?



पहले भय का परिवेश आज पर्यटन प्रदेश



2017 में
23.7 करोड़ पर्यटक

2025 में
156 करोड़+
पर्यटक

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

PAGE 05

JUNE 2026

रफ्तार मीडिया



तृणमूल का कांग्रेस में होगा विलय! सोनिया गांधी से मिलीं ममता बनर्जी

कोलकाता, 1 जून: तृणमूल कांग्रेस (TMC) के अध्यक्ष ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी से मिलीं। दोनों नेताओं ने एक घंटे से अधिक समय तक बातचीत की। ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी को तृणमूल कांग्रेस के बारे में जानकारी दी। सोनिया गांधी ने ममता बनर्जी को तृणमूल कांग्रेस के बारे में जानकारी दी।

रफ्तार मीडिया कवर स्टोरी

प्रबंध संपादक **गौरव कुमार**

डिप्टी एडिटर **अरविंद कुमार**

संपादकीय कार्यालय

उत्तम निवास, हरमू हाउसिंग कॉलोनी, नियर अरगोड़ा
थाना, हरमू, रांची, पिन-834002

ईमेल: articleraftaar@gmail.com

विज्ञापन: 9709289751



पिछला अंक

मुद्रक : प्रकाशक एवम स्वतत्वाधिकारी गौरव कुमार के पक्ष में शिवसाईं पब्लिकेशन प्रा.लिमिटेड, काठौटाड़, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, पोस्ट एवं थाना रांची 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

सियासी गर्मी, बदलते समीकरण बदलते समीकरणों, रणनीतियों और सत्ता संघर्ष का महीना

भारतीय राजनीति में जून का महीना इस बार केवल कैलेंडर का एक सामान्य पड़ाव नहीं, बल्कि बदलते राजनीतिक समीकरणों, नई रणनीतियों और सत्ता की नई बिसात का संकेत देता दिखाई दे रहा है। देश की राजनीति अब केवल दिल्ली के गलियारों से तय नहीं होती, बल्कि राज्यों की जमीन से उठने वाली आवाजें राष्ट्रीय दिशा तय करती हैं। यही कारण है कि जून में देश के लगभग हर हिस्से में राजनीतिक गतिविधियां तेज होती नजर आ रही हैं। केंद्र की राजनीति के साथ-साथ राज्यों में भी राजनीतिक दल अपनी ताकत का आकलन कर रहे हैं। सत्ता पक्ष अपनी योजनाओं, उपलब्धियों और संगठन की मजबूती के सहारे जनता के बीच अपनी पकड़ बनाए रखना चाहता है, वहीं विपक्ष सरकार के फैसलों पर सवाल उठाकर अपनी भूमिका मजबूत करने की कोशिश में है। इस पूरे माहौल में जनता के मुद्दे राजनीति के केंद्र में बने हुए हैं। उत्तर प्रदेश देश की राजनीति में हमेशा से सबसे महत्वपूर्ण राज्यों में रहा है। यहां की राजनीतिक दिशा का असर राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देता है। सामाजिक समीकरण, विकास के मुद्दे और संगठन की ताकत हर दल के लिए बड़ी चुनौती हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में उठने वाला हर कदम आने वाले समय की राष्ट्रीय रणनीति को प्रभावित कर सकता है। बिहार की राजनीति भी जून की हलचल में खास महत्व रखती है। यहां गठबंधन की राजनीति लंबे समय से सत्ता के समीकरणों में बड़ी भूमिका निभाती रही है। अलग-अलग दलों के बीच तालमेल, नेतृत्व और जनता से जुड़े मुद्दे राज्य की राजनीति को लगातार प्रभावित करते हैं। बिहार की राजनीतिक चालों पर देशभर की नजर रहती है। पश्चिम बंगाल में क्षेत्रीय ताकत

और राष्ट्रीय राजनीति के बीच मुकाबला हमेशा चर्चा का विषय रहता है। यहां राजनीतिक दल अपनी-अपनी जमीन मजबूत करने में जुटे रहते हैं। राज्य की राजनीति में नेतृत्व, विकास और जनता के मुद्दों के साथ-साथ राजनीतिक पहचान भी बड़ा विषय बनी रहती है।

महाराष्ट्र की सियासत भी देश की राजनीति में अहम स्थान रखती है। यहां गठबंधन, नेतृत्व और सत्ता संतुलन की राजनीति ने कई बार राष्ट्रीय स्तर पर संदेश दिया है। महाराष्ट्र में होने वाली राजनीतिक गतिविधियां अक्सर देश के दूसरे राज्यों की रणनीतियों को भी प्रभावित करती हैं। दक्षिण भारत की राजनीति भी अब राष्ट्रीय समीकरणों में पहले से ज्यादा प्रभावशाली हो चुकी है। तमिलनाडु में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव मजबूत रहा है, जहां स्थानीय मुद्दे और राज्य की प्राथमिकताएं राजनीति की दिशा तय करती हैं। कर्नाटक में विकास, नेतृत्व और संगठन की राजनीति महत्वपूर्ण बनी हुई है। तेलंगाना में भी राजनीतिक दल अपनी पकड़ मजबूत करने और जनता के बीच विश्वास बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश और ओडिशा जैसे राज्यों में भी क्षेत्रीय राजनीति का अपना अलग प्रभाव है। यहां स्थानीय नेतृत्व, विकास योजनाएं और जनता की अपेक्षाएं राजनीतिक फैसलों को प्रभावित करती हैं। पश्चिम और मध्य भारत के राज्यों में भी राजनीतिक गतिविधियां तेज हैं। गुजरात में संगठन और विकास मॉडल की राजनीति लंबे समय से चर्चा में रही है। मध्य प्रदेश और राजस्थान में सरकारों के कामकाज, प्रशासन और जनता की उम्मीदें राजनीतिक बहस का हिस्सा बनी रहती हैं। झारखंड की राजनीति भी अपने क्षेत्रीय मुद्दों और सामाजिक समीकरणों के कारण महत्वपूर्ण है। यहां आदिवासी हित, विकास, रोजगार और संसाधनों से जुड़े विषय हमेशा राजनीति के केंद्र में रहते हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में भी विकास, ग्रामीण मुद्दे और जनकल्याण योजनाएं राजनीतिक चर्चा का हिस्सा हैं।



अरविंद कुमार
डिप्टी एडिटर

स्तर पर दिखाई देता है। सामाजिक समीकरण, विकास के मुद्दे और संगठन की ताकत हर दल के लिए बड़ी चुनौती हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में उठने वाला हर कदम आने वाले समय की राष्ट्रीय रणनीति को प्रभावित कर सकता है। बिहार की राजनीति भी जून की हलचल में खास महत्व रखती है। यहां गठबंधन की राजनीति लंबे समय से सत्ता के समीकरणों में बड़ी भूमिका निभाती रही है। अलग-अलग दलों के बीच तालमेल, नेतृत्व और जनता से जुड़े मुद्दे राज्य की राजनीति को लगातार प्रभावित करते हैं। बिहार की राजनीतिक चालों पर देशभर की नजर रहती है। पश्चिम बंगाल में क्षेत्रीय ताकत

कॉर्पोरेट एवं व्यावसायिक कार्यालय : अजीत कुमार, 8/18 सेकेंड फ्लोर, नेहरू नगर, नई दिल्ली 110065 ईमेल: raftaarhr@gmail.com CONTACT NO. 6203592707

सुबई कार्यालय : चंद्रमान विश्वनाथ मौर्य, रुम नंबर A56/3/5 संत रोहिदास मार्ग खंभादेव नगर धारावी मुंबई- 400017

देहरादून कार्यालय : आयुष निगम, खबर हाउस, नेवासा रोहन मोर्टर्स के पीछे, जीएमएस रोड, देहरादून, उत्तराखंड, 248001 |

राजकुमार, एस.सी.एफ. 254, प्रथम मंजिल, सेक्टर 16, पंचकूला (हरियाणा) | स्वरूप भट्टाचार्य, रफ्तार मीडिया CG-MP H-14, डेवर पिंग सिटी, गायत्री नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़ | शाहिद सिद्दीकी, 21, बीसी गोमती रीजेंसी, साड़ी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ | रवि नंदन सिंह (स्टेट हेड), 200/1D, डीजी मिश्रा पथ, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी पटना (बिहार) 800013 |



नितिन नबीन ने कॉफ़र ज़नता पार्टी लेकर तंज कसा

विदेश में बैठे लोगों की कठपुतली नहीं हमारे युवा : नितिन नबीन

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने दिल्ली में चल रहे कॉफ़र ज़नता पार्टी के प्रदर्शन को लेकर इशारों ही इशारों में तंज कसा है। नितिन नबीन दो दिनों के झारखंड दौरे पर शनिवार को रांची पहुंचे। यहां उन्होंने प्रबुद्ध नागरिक संवाद में अपने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने उन लोगों को चेतावनी दी जो युवाओं को निगेटिव पॉलिटिक्स की ओर ले जाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भारत का युवा पॉजिटिव पॉलिटिक्स करेगा।

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने इस दौरान कहा कि आज का युवा देश के निर्माण के लिए काम करना चाहता है, अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए काम करना चाहता है। लेकिन कुछ लोगों ने इस देश के युवाओं को एंटी-एस्टैब्लिशमेंट नाम दे दिया है। मैं मानता हूँ कि देश का युवा इनोवेशन और क्रिएशन के लिए जाना जाए। भारत का युवा अनुशासन के साथ देश के निर्माण के लिए काम करेगा। उन्होंने आगे कहा कि जो लोग इस देश के युवाओं को निगेटिव पॉलिटिक्स के लिए ले जाना चाहते हैं, मैं उनको चेतावनी देता हूँ कि भारत का युवा पॉजिटिव पॉलिटिक्स

नितिन नबीन ने प्रबुद्ध संवाद को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी सरकार देश की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करती है आज कोई एक ईंट फेंकता है तो हम उसका जवाब पत्थर से देते हैं। विश्व की कोई भी ताकत हो, हम देश की सुरक्षा से कभी समझौता नहीं कर सकते हैं रक्षा समानों का निर्यात कर रहे हैं, नक्सलवाद को समाप्त करने में हमारी सरकार सफल हुई है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने देश को सांस्कृतिक दृष्टि से भी मजबूत बनाया। राम मंदिर और काशी कॉरिडोर बनाकर देश की सांस्कृतिक धरोहर और मूल्यों को स्थापित कर इसे जीवंत रखा।



करेगा। हम लोकतंत्र के आधार पर निश्चित रूप से विरोध करेंगे, लेकिन लोकतंत्र के मापदंड को खत्म नहीं होने देंगे। आज 2 लाख स्टार्टअप बन चुके हैं, इतने मेडिकल

और इंजीनियरिंग कॉलेज बने हैं, हम देश को IT का हब बनाना चाहते हैं। तो ये कहीं न कहीं देश के युवाओं का पुरुषार्थ है, इसके बल पर हम ये काम करना चाहते

हैं। नितिन नबीन ने कहा कि कुछ लोग विदेश में बैठकर ये सोच लेते हैं कि हम भारत के युवाओं को दिशा दे देंगे। भारत का युवा किसान के साथ चौपाल में रहता है, कोचिंग इंस्टीट्यूट में रहता है, कॉलेज कैंपस में रहता है। लेकिन भारत का युवा दिल्ली में बैठे कुछ लोगों की मुष्ठी की कठपुतली बनकर आगे नहीं बढ़ने वाला। उन्होंने कहा कि आज देश के लोगों को एक बहुत बड़ा मैसेज मिला है कि डिजिटल का उपयोग सकारात्मक रूप से हो सकता है, डिजिटल का उपयोग देश और युवाओं के निर्माण के लिए हो सकता है। लेकिन डिजिटल का उपयोग देश की युवा क्रांति को निगेटिव दिशा में ले जाने के लिए नहीं हो सकता। उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि आप सब को जागने की आवश्यकता है।



तृणमूल का कांग्रेस में होगा विलय! सोनिया गांधी से मिलीं ममता बनर्जी

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 में तृणमूल कांग्रेस (TMC) की हार और पार्टी के दो भागों में बंटने के बाद अब तृणमूल के कांग्रेस में विलय की चर्चा तेज है। जी हां, ममता बनर्जी अपनी 28 साल पुरानी पार्टी तृणमूल कांग्रेस का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) में पूर्ण विलय (Merger) करने की सबसे बड़ी और अंतिम योजना पर विचार कर रही हैं। खबर है कि दिल्ली में 10 जनपथ से लेकर कांग्रेस के शीर्ष हलकों में बैक-टू-बैक 2 हाई-प्रोफाइल बैठकें हुई हैं। कलकत्ता से लेकर दिल्ली तक जांच एजेंसियों के बढ़ते शिकंजे और 20 लोकसभा सांसदों की बगावत से पूरी तरह टूट चुकीं ममता बनर्जी कांग्रेस के धरण में हैं। सोनिया गांधी ने उन्हें सलाह दी कि वे अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दें। अपने और अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी के राजनीतिक व कानूनी वजूद को बचाये रखने की आखिरी कोशिश के तहत ममता बनर्जी संभवतः इस पर सहमत हो गयीं हैं। अगर ऐसा हुआ, तो 28 साल के बाद ममता बनर्जी फिर वहीं पहुंच जायेंगी, जहां से उन्होंने नयी यात्रा शुरू की थी। सोमवार को नयी नल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में इंडिया (INDIA) गठबंधन की बैठक के बाद राजनीतिक घटनाक्रम तेजी से बदला है। ममता बनर्जी कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी से मिलने उनके आवास 10 जनपथ पहुंचीं। करीब 45 मिनट की गोपनीय बैठक में ममता

बनर्जी अपने 20 सांसदों के एनडीए (NDA) स्खे में जाने और रीतब्रत बनर्जी के नेतृत्व में 58 विधायकों के विद्रोह का जिक्र करते हुए भावुक हो गयीं। कभी दिल्ली की सत्ता में किंगमेकर बनने का स्वाद देखने वाली ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी के सामने स्वीकार किया कि बंगाल में शुभेदु अधिकारी सरकार के आने के बाद उनके लिए अपना संगठन बचाये रखना संभव नहीं है।

गांधी और तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी के बीच दिल्ली में अज्ञात ठिकाने पर लंबी बैठक हुई। सूत्रों का दावा है कि विधायकों के जाली हस्ताक्षर मामले में सीआईडी (CID) द्वारा कालीघाट आवास पर भेजे गये तीसरे समन और प्रवर्तन निदेशालय (ED) के शिकंजे में घिरे अभिषेक बनर्जी ने राहुल गांधी से राजनीतिक व कानूनी सुरक्षा की मांग की है। यदि यह विलय

स्थापना की थी, उन्होंने तब नारा दिया था कि असली कांग्रेस वही है। 28 साल बाद इतिहास खुद को दोहरा रहा है। ममता बनर्जी उसी कांग्रेस के दरवाजे पर पहुंच गयीं हैं। जानकारों का मानना है कि यदि टीएमसी का आधिकारिक तौर पर कांग्रेस में विलय हो जाता है, तो ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी को एक क्षेत्रीय क्षत्रप की बजाय देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के राष्ट्रीय चेहरे



अधीर रंजन चौधरी और प्रदेश कांग्रेस का अंदरूनी विरोध

दिल्ली में आलाकमान के स्तर पर चल रही इस खिचड़ी से पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (WBPPCC) के नेता बिल्कुल भी खुश नहीं हैं। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी के स्खे के नेताओं का मानना है कि जिसने बंगाल में कांग्रेस को खत्म करने के लिए 3 दशक तक हिंसक राजनीति की, उसे पार्टी में वापस शामिल करना आत्मघाती साबित होगा। युसुफ पठान और शत्रुघ्न सिन्हा जैसे टीएमसी के शीर्ष सांसदों की इस पूरे विलय योजना पर रहस्यमयी चुप्पी इस बात का इशारा कर रही है कि पार्टी के भीतर बिखराव अब अंतिम चरण में है।

ममता-सोनिया और राहुल-अभिषेक की गुप्त बैठक में तैयार हो रही नयी स्क्रिप्ट एक तरफ सोनिया गांधी ने ममता बनर्जी को दाढ़स बंधाया, तो दूसरी तरफ कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल

हो जाता है, तो भारतीय राजनीति के इतिहास का सबसे बड़ा यू-टर्न होगा। ममता बनर्जी ने तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व से बगावत करके 1 जनवरी 1998 को तृणमूल कांग्रेस (TMC) की

के रूप में केंद्रीय सुरक्षा और हाल मिल जायेगा। इतना ही नहीं, बंगाल में कांग्रेस के पुराने कैडर को साथ मिलाकर वे जमीन पर शुभेदु अधिकारी सरकार के खिलाफ मोर्चा खड़ा कर सकेंगे।



‘आपके विश्वास को जनसेवा में बदलने का प्रयास करूंगा’, MLC उम्मीदवार बनने पर बोले पवन सिंह

भारतीय जनता पार्टी ने बिहार से भोजपुरी गायक और अभिनेता पवन सिंह को एमएलसी का उम्मीदवार बनाया है। उनके साथ ही पार्टी ने संजय मयूख, अनिल कुमार ठाकुर और शीला पंडित को कैंडिडेट बनाया है। इन चारों नामों में एक जिस एक नाम की चर्चा सबसे ज्यादा हो रही है, वह नाम पावर स्टार पवन सिंह का है। बिहार और पूर्वांचल में लोकप्रिय हैं पवन सिंह: कहा जा रहा है कि पवन सिंह की लोकप्रियता और समाज के विभिन्न वर्गों में मजबूत पहचान को देखते हुए बीजेपी ने यह फैसला लिया है। सिर्फ बिहार ही नहीं बल्कि पूर्वांचल में भी उनके प्रशंसकों की लंबी फेहरिस्त है। लॉलीपॉप लागे लू... ने दिलायी बड़ी पहचान: पवन सिंह ने पहली बार भोजपुरी गीत को देश के सरहद के बाहर भी पहुंचाया है। लॉलीपॉप लागे लू... गीत ग्लोबल हिट हुआ। यहां तक की हिंदी फिल्मों से लेकर कई वेब सीरीज में इस गाने को लिया गया था। इसके अलावा पवन सिंह ने हिंदी फिल्मों में और साउथ की फिल्मों में भी गाने गाये हैं। जो काफी हिट रहे हैं। आसनसोल से चुनाव लड़ने से किया था इनकार: पवन सिंह को बीजेपी ने लोकसभा चुनाव 2024 में पश्चिम बंगाल के आसनसोल से टिकट दिया था। लेकिन भोजपुरी में बंगाली गीतों को लेकर अश्लीलता परीक्षण के नाम पर

पवन सिंह टोल हो गए। इसके बाद भोजपुरी कलाकार पवन ने टिकट वापस कर दिया। काराकाट से लड़ा था चुनाव: हालांकि पवन सिंह ने उसी चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारी रोहतास के काराकाट से की थी। उन्होंने अपने निकट प्रतिद्वंदी उपेंद्र कुशवाहा को कड़ी टक्कर दी, लेकिन वह चुनाव हार गए। कहा यह भी

रहे। अगले ही साल 2025 में जब बिहार विधानसभा का चुनाव हुआ तो, पवन सिंह ने भारतीय जनता पार्टी के लिए खूब प्रचार किया, खूब भीड़ इकट्ठा की और कई हवाई दौरे भी किये। 2029 के चुनाव की तैयारी में BJP: माना जाता था आरा लोकसभा सीट से आरके सिंह के हार जाने के बाद 2029

है अब अगले 6 साल तक पवन सिंह भारतीय जनता पार्टी के साथ रहेंगे ही रहेंगे। उसके बीच में 2029 में आरा लोकसभा का चुनाव यदि पवन सिंह लड़ते हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। भोजपुर के जोकहरी गांव निवासी: पवन सिंह भोजपुर के जोकहरी गांव के रहने वाले हैं। बचपन से ही भोजपुरी गीत गाते रहे



पवन सिंह की पहली शादी नीलम सिंह से हुई थी। यह शादी दिसंबर 2014 में हुई थी, लेकिन मार्च 2015 में उन्होंने खुदकुशी कर ली। हालांकि अब तक यह खुलासा नहीं हुआ है कि नीलम सिंह ने इतना बड़ा फैसला क्यों किया और उनके साथ पवन सिंह का क्या विवाद रहा था।

जाता है कि भाजपा ने पवन सिंह को बिहार से चुनाव ना लड़ा कर शाहाबाद की सभी सीटों को गंवा दिया। 2025 में खूब किया प्रचार: हालांकि इसके बावजूद भी पवन सिंह बीजेपी के साथ जुड़े

हैं। पवन सिंह को वहां से लोकसभा का उम्मीदवार बनाया जाएगा लेकिन, उससे पहले भारतीय जनता पार्टी ने पवन सिंह को अपने फोल्डर में रखने के लिए एमएलसी का उम्मीदवार बना दिया है। जाहिर सी बात

हैं। उनके चाचा इनके पहले गुरु बताए जाते हैं और अब तक इन्होंने अपनी शिक्षा की जानकारी कहीं साझा नहीं की है। तो इन्होंने कितने तक पढ़ाई की है यह किसी को जानकारी नहीं है।



MLC का टिकट देने के पीछे क्या है BJP का प्लान?

भोजपुरी स्टार पवन सिंह का विवाद भोजपुरी अभिनेत्री अक्षरा सिंह के साथ भी हो चुका है. कहा यह जाता है कि दोनों के बीच में अफेयर था. दोनों जल्द ही शादी करने वाले थे. लेकिन किसी बात पर विवाद हुआ और दोनों अलग हो गए. फिर दोनों ही मीडिया में आकर एक दूसरे पर जमकर आरोप प्रत्यारोप किया. हालांकि दोनों अलग हो चुके हैं अब एक दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करते हैं.

2018 में पवन सिंह ने दूसरी शादी की ज्योति सिंह से शादी हुई, लेकिन यह शादी भी बहुत दिनों तक नहीं चल सकी. हालांकि बीच में लोकसभा चुनाव के समय दोनों के बीच में सुलह जरूर हुआ था. लेकिन अभी तलाक का मामला आरा सिविल कोर्ट में चल रहा है. दोनों पति-पत्नी मीडिया में आकर एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करते रहे हैं. फिलहाल दोनों अलग रहते हैं. हालांकि ज्योति सिंह अभी भी राजनीति में एक्टिव हैं. काराकाट से वह विधानसभा चुनाव लड़ चुकी हैं, उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा था.

पवन सिंह का विवाद भोजपुरी कलाकार खेसारी लाल यादव के साथ भी खूब रहा है. मंच पर छीटाकशी के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहे हैं. अब एक दूसरे के साथ मंच साझा नहीं करते हैं और ना ही फ़िल्म करते हैं. अंजलि राघव के साथ मंच पर विवाद: एक प्रमोशनल इवेंट के दौरान पवन सिंह का एक वीडियो वायरल हुआ



था, जिसमें वह हरियाणवी एक्ट्रेस अंजलि राघव की कमर को गलत तरीके से छूते हुए दिखे थे. इस घटना के बाद अंजलि काफी असहज हो गई और उन्होंने सार्वजनिक रूप से नाराजगी जताते हुए भोजपुरी इंडस्ट्री छोड़ने तक की बात कह दी थी. बाद में पवन सिंह ने इस पर माफी मांगी और अंजलि ने मामला आगे न बढ़ाने का फैसला किया वरिष्ठ पत्रकार के के लाल बताते हैं कि पवन सिंह क्राउड पुलर स्टार

हैं. जहां जाते हैं हजारों लाखों भीड़ उनके सामने होती है. जहां से गुजरते हैं उनको देखने के लिए लोग रुकते हैं और उन्हें सुनना पसंद करते हैं. यह उनकी प्रसिद्धि है और उनका भोजपुरी में किया गया काम है. बड़ा राजपूत चेहरा: के के लाल आगे कहते हैं कि पवन सिंह के पीछे बीजेपी लगातार काम कर रही थी. पवन सिंह भोजपुरी के बड़े कलाकार तो हैं ही, साथ ही सामाजिक समीकरण भी उनके साथ है. शाहाबाद

में एक बड़े राजपूत चेहरे के तौर पर पवन सिंह को भारतीय जनता पार्टी के साथ जोड़ा गया है. यह उस समय हुआ जब आरा लोकसभा सीट से आरके सिंह चुनाव हार गए. यूपी में भी फेमस हैं पवन सिंह: के के लाल कहते हैं कि उसके बाद पवन सिंह लगातार भाजपा के लिए कैंपेन करते रहे हैं. आने वाले समय में भाजपा पवन सिंह का उपयोग उत्तर प्रदेश के चुनाव में भी करेगी.



विरोधी भी हुए CM शुभेंदु अधिकारी के मुरीद पूर्व CM की पत्नी ने जमकर की तारीफ

पश्चिम बंगाल में हुए बड़े सियासी उलटफेर और शुभेंदु अधिकारी के मुख्यमंत्री बनने के बाद राज्य की राजनीति से एक बेहद दिलचस्प और चौकाने वाली खबर सामने आ रही है। राजनीतिक मैदान में शुभेंदु अधिकारी के घुर विरोधी रहे दलों के नेता और उनके परिवार भी अब उनके मुरीद होते दिख रहे हैं। चर्चा है कि पश्चिम बंगाल के एक पूर्व मुख्यमंत्री की पत्नी ने सीएम शुभेंदु अधिकारी के कामकाज, संवेदनशीलता या उनके किसी बड़े फैसले की जमकर तारीफ की है। इस पूरे घटनाक्रम की मुख्य बातें इस प्रकार हैं: 1. विरोधियों का बदला रुखपश्चिम बंगाल में लंबे समय तक चले राजनीतिक गतिरोध और कड़े मुकाबलों के बाद शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की कमान संभाली है। पद संभालते ही उन्होंने अपनी कार्यशैली से न सिर्फ अपनी पार्टी बल्कि विपक्ष के खेमे में भी खलबली मचा दी है। विरोधी दलों के नेताओं द्वारा की जा रही यह सराहना इसी का नतीजा मानी जा रही है। 2. पूर्व मुख्यमंत्री के परिवार से मिली तारीफखबरों के अनुसार, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री (जो राजनीतिक रूप से शुभेंदु अधिकारी और भाजपा के घुर विरोधी रहे हैं) के परिवार और विशेषकर



उनकी पत्नी ने मुख्यमंत्री के एक कदम या उनके व्यवहार की खुले दिल से प्रशंसा की है। राजनीति में जहां अमूमन एक-दूसरे पर कीचड़ उछाला जाता है, वहां इस तरह की तारीफ ने राज्य का सियासी तापमान

बढ़ा दिया है। 3. जनता के बीच बढ़ती लोकप्रियताहाल ही में शुभेंदु अधिकारी के 'जनता दरबार' और आम लोगों से सीधे जुड़ाव के फैसलों को काफी पसंद किया जा रहा है। विपक्ष के कुछ नेताओं

और प्रवक्ताओं ने भी सार्वजनिक रूप से यह माना है कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने राज्य में शांति व्यवस्था बनाए रखने और जमीनी स्तर पर काम करने में परिपक्वता दिखाई है।

राजनीतिक गलियारों में हलचल: इस तारीफ के बाद तृणमूल कांग्रेस और अन्य विरोधी खेमों में आंतरिक चर्चाएं तेज हो गई हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि शुभेंदु अधिकारी अपनी "सबको साथ लेकर चलने" वाली छवि बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें वे काफी हद तक कामयाब होते दिख रहे हैं।



रामलिंगा रेड्डी ने अपना इस्तीफा वापस लिया कांग्रेस महासचिव सुरजेवाला का दावा

कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने दावा करते हुए कहा कि, रामलिंगा रेड्डी ने मंत्री पद से इस्तीफा वापस ले लिया है। उन्होंने कहा कि, रेड्डी का अनुभव और विशेषज्ञता कांग्रेस पार्टी के लिए बहुत कीमती है।

सुरजेवाला ने यहां तक कहा कि, रामलिंगा रेड्डी कांग्रेस पार्टी की संपत्ति हैं। सुरजेवाला ने मीडिया को जानकारी देते हुए यह बात कही। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वह इस विवाद का राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश कर रही थी। उन्होंने कहा कि, रेड्डी एनएसयूआई के दिनों से कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बीके हरिप्रसाद के साथ काम कर रहे हैं।

सुरजेवाला ने कहा कि, रामलिंगा रेड्डी 1973 से कांग्रेस पार्टी के लिए काम कर रहे हैं। उस समय कांग्रेस पार्टी के कुछ नेता तो तब पैदा भी नहीं हुए थे। सुरजेवाला ने कहा कि, रेड्डी 1989 से कांग्रेस पार्टी से 8 बार विधायक रह चुके हैं। वह कई बार मंत्री भी बने हैं।

उन्होंने साफ किया, “रामलिंगा रेड्डी, सीएम डीके शिवकुमार, केपीसीसी अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद और कई दूसरे नेताओं का राज्य भर के लाखों कार्यकर्ता के साथ एक अटूट रिश्ता है। वह कांग्रेस पार्टी के एक वफादार

सिपाही और मंत्री के तौर पर काम करते रहेंगे।

सुरजेवाला ने इस घटना को गलतफहमी का नतीजा बताया और कहा कि वरिष्ठ नेता कांग्रेस सरकार में मंत्री के रूप में अपना कार्य जारी रखेंगे। रेड्डी के इस्तीफे की घोषणा को लेकर सुरजेवाला ने पत्रकारों से कहा,

मध्यम सिंचाई विभाग की जिम्मेदारी दी गई थी। कांग्रेस नेता ने रेड्डी को पार्टी के सबसे अनुभवी नेताओं में से एक बताया और कहा कि इस मुद्दे को सुलझाने के लिए पार्टी के पूरे शीर्ष नेतृत्व ने हस्तक्षेप किया था। सुरजेवाला ने रामलिंगा रेड्डी को कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण नेता बताते हुए कहा कि

ने कहा, “मुझे लगता है कि उन्होंने (रेड्डी) आपको पहले ही सूचित कर दिया है कि उन्होंने अपना इस्तीफा वापस ले लिया है।” भाजपा पर निशाना साधते हुए सुरजेवाला ने कहा कि विपक्ष ने सत्तारुढ़ पार्टी के भीतर हुए घटनाक्रम का समय से पहले ही जश्र मनाना शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा,



“मैं विजयेंद्र और अशोक दोनों को बता दूँ कि जनता की अदालत में आपको बार-बार करारी हार मिलेगी; जनता का विश्वास जीतने के लिए आपको ईमानदारी, प्रतिबद्धता और जनता की सेवा की आवश्यकता है, जिसे कांग्रेस सरकार ने अपनी पांच गारंटियों के माध्यम से करके दिखाया है।” कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि सभी मंत्रियों ने अपने-अपने विभागों का कार्यभार संभाल लिया है और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री शिवकुमार के नेतृत्व वाली नयी सरकार राज्य में विकास के एक नये चरण की शुरुआत करेंगी।

“कुछ गलतफहमी हुई थी और वह (रेड्डी) पार्टी के एक वफादार सिपाही और मंत्री के रूप में काम करना जारी रखेंगे।” रेड्डी ने शुक्रवार को इस्तीफे की घोषणा की थी, क्योंकि उन्हें बेंगलुरु विकास विभाग के बजाय वृहद और

मुख्यमंत्री डी के शिवकुमार, पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धरमैया, कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) के अध्यक्ष बी के हरिप्रसाद और उन्होंने खुद रेड्डी के इस्तीफे की खबरें सामने आने के बाद उनसे बात की थी। सुरजेवाला

“भाजपा वास्तव में सदमे में है, क्योंकि उसे लगा था कि सत्ता के सुचारु हस्तांतरण में उसे कोई मुद्दा मिल गया है और वे कुछ राजनीतिक लाभ उठाने की उम्मीद कर रहे थे।”



खान सर के अस्पताल को नोटिस..नियम का पालन नहीं होने पर 15 दिनों में सील करने की चेतावनी

राजधानी पटना के कोचिंग सेंटर में हुई फायरिंग के मामले में खान सर की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। दूसरी ओर, अब खान सर के अस्पताल को भी एक नोटिस जारी किया गया है। यदि 'खान हेल्थ केयर' द्वारा आगामी 15 दिनों के भीतर अस्पताल की कमियों को दूर नहीं किया गया, तो अस्पताल को सील कर दिया जाएगा। इस पूरे मामले की जानकारी पटना अग्निशमन विभाग के कमांडेंट रितेश पांडे ने दी है। अग्निशमन विभाग के कमांडेंट रितेश पांडे ने बताया कि पटना स्थित खान सर के हॉस्पिटल को नोटिस जारी कर 15 दिनों का समय दिया गया है। खान सर के इस अस्पताल में जांच के दौरान सुरक्षा से जुड़ी कई गंभीर कमियां पाई गई थीं, जिसे संज्ञान में लेते हुए अग्निशमन विभाग की ओर से यह सख्त नोटिस जारी किया गया है।

“15 दिन में सारी कमियां फुल-फील नहीं की जाती है तो हॉस्पिटल सील किया जाएगा। 10 दिन के बाद फिर जांच की जाएगी और नोटिस के माध्यम से पूछा जाएगा कि आखिर आपके हॉस्पिटल को क्यों नहीं सील किया जाए?”

-रितेश पांडे, कमांडेंट, अग्निशमन विभाग पटना दिल्ली और मुजफ्फरपुर के अस्पतालों में आग लगने की घटनाओं के बाद बिहार अग्निशमन विभाग पूरी तरह अलर्ट मोड में आ गया है। संभावित हादसों को रोकने और

लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पटना में अस्पतालों और होटलों की व्यापक फायर सेफ्टी जांच शुरू की गई है। जांच के दौरान कई संस्थानों में सुरक्षा मानकों की अनदेखी सामने आने पर विभाग ने सख्त कदम उठाते हुए पांच अस्पतालों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। 60 से 70 अस्पतालों और होटलों का निरीक्षण: अग्निशमन

संस्थानों में उपलब्ध अग्निशमन उपकरणों, इमरजेंसी एग्जिट, सीसीटीवी कैमरों, पानी की उपलब्धता, फायर अलार्म सिस्टम और कर्मचारियों को दिए गए प्रशिक्षण की गहन जांच की गई।

जांच में सामने आई गंभीर कमियां: निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि कई अस्पतालों और होटलों में फायर सेफ्टी से जुड़े नियमों

कर्मचारियों को आग लगने की स्थिति में बचाव और राहत कार्यों का पर्याप्त प्रशिक्षण भी नहीं दिया गया था। जांच के दौरान पांच ऐसे अस्पताल चिह्नित किए गए हैं, जहां गंभीर स्तर की सुरक्षा खामियां पाई गईं। इन संस्थानों में किसी भी आपात स्थिति के दौरान मरीजों और अन्य लोगों की जान को बड़ा खतरा हो सकता था। इसी को देखते हुए



विभाग के डीआईजी मनोज कुमार नट ने बताया कि पिछले दो दिनों के भीतर विभाग की विभिन्न टीमों ने पटना शहर के लगभग 60 से 70 अस्पतालों और होटलों का निरीक्षण किया है। इस विशेष अभियान के तहत

का पूरी तरह पालन नहीं किया जा रहा था। कुछ जगहों पर अग्निशमन यंत्र या तो अनुपयोगी स्थिति में मिले, जबकि कई संस्थानों में आपातकालीन निकास मार्गों की व्यवस्था संतोषजनक नहीं थी। इसके अलावा

नियमों की अनदेखी पर चेतावनी: खान ग्लोबल स्टडीज कोचिंग संस्थान और अस्पताल से जुड़े सवाल पर डीआईजी ने कहा कि फायर सेफ्टी नियमों की अनदेखी करने वाले किसी भी व्यक्ति या संस्थान को बर्खा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि जांच और कार्रवाई की पूरी प्रक्रिया जिला अग्निशमन पदाधिकारी रितेश पांडे के नेतृत्व में लगातार मॉनिटर की जा रही है। मनोज कुमार नट ने कहा कि इस कार्रवाई का उद्देश्य किसी संस्था को दंडित करना नहीं, बल्कि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। अस्पतालों और होटलों जैसी जगहों पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहते हैं।

विभाग ने एडवांस पटना सेंट्रल अस्पताल, आरोग्यवर्धन अस्पताल, पिनकल अस्पताल, श्याम ट्रस्टेड रिसर्च अस्पताल और अपेक्स अस्पताल के खिलाफ सीलिंग की प्रक्रिया शुरू कर दी है।



कॉक्रोच जनता पार्टी की मांग के समर्थन में उतरे प्रशांत किशोर

जन सुराज पार्टी के सूत्रधार प्रशांत किशोर शनिवार को बगहा पहुंचे। इस दौरान कॉक्रोच जनता पार्टी द्वारा दिल्ली के जंतर-मंतर पर किए जा रहे प्रदर्शन और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग के सवाल पर उन्होंने बड़ा बयान देते हुए कहा कि हम उसका समर्थन करते हैं।

इस्तीफे की मांग का समर्थन: शनिवार को मीडिया से बातचीत के दौरान प्रशांत किशोर ने कहा कि जन सुराज यह पहले भी स्पष्ट रूप से कह चुका है कि बार-बार पेपर लीक होने की घटनाओं के आधार पर शिक्षा मंत्री का इस्तीफा बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था। पेपर लीक पर तंज: प्रशांत किशोर ने देश और राज्य की शिक्षा व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष करते हुए कहा कि यह कोई पहली बार नहीं है कि जब देश या बिहार में कोई प्रश्नपत्र लीक हुआ है। आज के दौर में खबर यह बिल्कुल नहीं है कि कहां पेपर लीक हुआ है, बल्कि असली खबर तो तब बनती है जब कोई परीक्षा पूरी ईमानदारी से हो जाए और उसका पेपर लीक न हो मूल्यांकन में भारी घालमेल: उन्होंने देश की मौजूदा परीक्षा प्रणाली की कमियों

को उजागर करते हुए आगे कहा कि इस बार तो खुद बारहवीं की परीक्षा के मूल्यांकन में कुछ युवाओं ने पूरी प्रक्रिया की पोल खोलकर रख दी है। युवाओं ने पूरी तरह उजागर किया है कि इसमें कितना बड़ा घालमेल चल रहा है, जहां किसी की उत्तर पुस्तिका होती है, किसी का नंबर होता है और किसी को यह तक पता नहीं है कि यह सब कौन कर रहा है, इसलिए धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा होना ही चाहिए। “अगर मैं बिहार के नजरिए से बताऊं तो यह वही धर्मेंद्र प्रधान हैं, जिन पर बिहार में विधानसभा चुनाव के दौरान प्रत्याशियों की खरीद-फरोख्त करने और उन्हें डराने-धमकाने के बेहद गंभीर आरोप लगे थे।” उन्होंने पिछले चुनाव की घटनाओं को याद दिलाते हुए दावा किया कि खास तौर पर जन सुराज ने इनके खिलाफ प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी और इनकी तस्वीरें भी सार्वजनिक तौर पर जारी की थीं। उन तस्वीरों में साफ दिख रहा था कि कैसे धर्मेंद्र प्रधान जन सुराज के प्रत्याशियों से गुप्तचर तरीके से मिलकर उन्हें प्रभावित करने, डराने-धमकाने या फिर सीधे तौर पर खरीदने का प्रयास कर रहे थे।





धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा पहले हो जाना चाहिए था

शिक्षा व्यवस्था पर सवाल: प्रशांत किशोर ने सख्त लहजे में कहा कि इस तरह के पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति के शिक्षा मंत्री रहते हुए देश में शिक्षा की स्थिति कभी भी सुधरने वाली नहीं है। उन्होंने जंतर-मंतर पर डटे छात्रों को अपना खुला समर्थन देते हुए कहा कि जो बच्चे मंत्री के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं और दिल्ली के जंतर-मंतर पर लगातार धरना दे रहे हैं, उनके समर्थन में हम लोग पूरी मजबूती के साथ खड़े हैं।

दरअसल प्रशांत किशोर इन दिनों अपनी पार्टी के जमीनी संगठन को पूरी तरह मजबूत करने के लिए 'बिहार नवनिर्माण अभियान' के तहत बिहार के तमाम जिलों का लगातार दौरा कर रहे हैं।

वे बिहार के हर एक जिले में जमीनी स्तर पर खुद जाकर संगठन के प्रमुख नेताओं और सक्रिय कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर रहे हैं। इसी क्रम में आज बगहा स्थित कमला टॉकीज श्रीवास्तव मैरिज हॉल में जन सुराज की जिला कार्यकारिणी कार्यशाला सह संगठनात्मक बैठक का भव्य आयोजन किया गया था। इस महत्वपूर्ण बैठक में जिले की

सभी सांगठनिक इकाइयों के शीर्ष पदाधिकारी और जमीनी स्तर के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए थे। जन सुराज के इस बड़े मंच से प्रशांत किशोर ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पार्टी के भविष्य के रोडमैप और रणनीतियों को विस्तार से साझा किया।



घर-घर जाने का संकल्प: बैठक के उद्देश्य पर बात करते हुए प्रशांत किशोर ने कहा कि मैं आज यहां विशेष रूप से जन सुराज की जिला कार्यकारिणी की इस पहली महत्वपूर्ण बैठक में शामिल

होने के लिए आया हूँ, उन्होंने आगे बताया कि वर्तमान में जन सुराज के पूरे संगठन को नए सिरे से पुनर्गठित करने की प्रक्रिया को बहुत तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। बिहार बदलने का संकल्प: पीके ने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए आगे कहा कि आने वाले तीन से चार महीनों के भीतर हम लोग

हैं और विकल्प की तलाश में हैं। नीतीश कुमार पर निशाना: इसके बाद विधानसभा चुनाव के दौरान एनडीए (NDA) द्वारा महिलाओं को प्रति माह 2 लाख रुपये देने के वादे के अब तक पूरा न होने के सवाल पर प्रशांत किशोर ने नीतीश सरकार को जमकर आड़े हाथों लिया।

उन्होंने तीखा हमला जारी रखते हुए कहा कि वह बहुमत जनता के वास्तविक समर्थन का नहीं बल्कि जनता के ही पैसे से खरीदे गए वोटों का एक तात्कालिक परिणाम था। उन्होंने साफ किया कि जन सुराज इस मुद्दे को लेकर जमीनी स्तर पर अभी कोई बड़ा आंदोलन इसलिए नहीं कर रही है क्योंकि नई सरकार को बने अभी केवल छह महीने का ही समय हुआ है।

जन सुराज के मूल विचार और बिहार बदलने के इस पवित्र संकल्प को राज्य के घर-घर तक लेकर जाएंगे। उन्होंने दावा किया कि जनता अब बिहार की मौजूदा व्यवस्था से पूरी तरह ऊब चुकी

“बिहार की गरीब महिलाओं को 2 लाख रुपये का सीधा लालच देकर उनके बहुमूल्य वोट को पूरी तरह प्रभावित करने का काम किया गया था।”



सीएम ने पार्टी विधायकों-सांसदों संग की बैठक जेएमएम के राज्यसभा उम्मीदवार को जीत दिलाने की बनाई रणनीति

झामुमो ने राज्यसभा चुनाव के लिए बैद्यनाथ राम को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। इस निर्णय के बाद झामुमो विधायकों और सांसदों की रांची के कांके रोड स्थित सीएम आवास पर अनौपचारिक बैठक हुई। बैठक में सांसद महुआ माजी, मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू, हफीजुल हसन अंसारी, झामुमो के विधायक डॉ. स्टीफन मरांडी, सचेतक मथुरा प्रसाद महतो, विधायक राम सूर्य मुंडा, विधायक विकास सिंह मुंडा, विधायक सोमेश चंद्र सोरेन सहित कई नेता मौजूद रहे। इस बैठक में झामुमो की ओर से राज्यसभा के घोषित उम्मीदवार बैद्यनाथ राम भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि पार्टी ने उन्हें जो मान और सम्मान दिया है उसे कभी भुला नहीं सकता हूँ। झामुमो नेता ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उन पर भरोसा कर उन्हें अपना ऋणी बना दिया है। बैठक में रणनीति बनी कि कैसे पूरी एकजुटता से झामुमो प्रत्याशी को जीत दिलाकर राज्यसभा भेजना है। बैठक के दौरान झामुमो विधायक और सांसद की



ओर से बैद्यनाथ राम को बधाई और एक कार्यकर्ता को उम्मीदवार बनने के लिए केंद्रीय अध्यक्ष को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। बैठक के बाद झारखंड से झामुमो की राज्यसभा सांसद डॉ. महुआ माजी ने मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने पूर्व

मंत्री और अनुभवी नेता बैद्यनाथ राम को राज्यसभा का उम्मीदवार बनाने के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि केंद्रीय नेतृत्व का यह फैसला उन लोगों को जवाब है, जो झामुमो को परिवार की पार्टी कह कर तंज कसते थे। राज्यसभा

सदस्य डॉ. महुआ माजी ने कहा कि बैद्यनाथ राम एक बेहद अनुभवी और मझे हुए राजनेता हैं और वह झारखंड की समस्याओं को अच्छी तरह समझते हैं। उनके राज्यसभा जाने से राज्य की आवाज को संसद में मजबूती से उठाने में मदद मिलेगी।



कांग्रेस के ऑब्जर्वर भूपेश बघेल और अजय शर्मा ने सीएम हेमंत सोरेन से की मुलाकात

राज्यसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस की ओर से पर्यवेक्षक बनाए गए भूपेश बघेल और अजय शर्मा ने सीएम हेमंत सोरेन से मुलाकात की. करीब दो घंटे चली मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री आवास से बाहर निकलने पर भूपेश बघेल ने मीडिया से बातचीत की.

उन्होंने कहा कि कहीं कोई गतिरोध नहीं है और महागठबंधन के उम्मीदवार राज्यसभा की दोनों सीटों पर जीत दर्ज करेंगे. उन्होंने साफ कहा कि महागठबंधन के दलों के बीच कोई मिसअंडरस्टैंडिंग नहीं है. भूपेश बघेल ने कहा कि काफी सौहार्दपूर्ण माहौल में मुख्यमंत्री के साथ वार्ता हुई है.

वहीं अजय शर्मा ने कहा कि हमारा गठबंधन बहुत मजबूत है और महागठबंधन दोनों सीटें जीतने जा रहा है, जहां तक जामुमो के नेताओं की भावना का सवाल है, पार्टी के अंदर ऐसी भावनाएं आती हैं, लेकिन अंतिम फैसला नेता को लेना होता है. हमारी बात मुख्यमंत्री और जामुमो के केंद्रीय अध्यक्ष हेमंत सोरेन से हुई है. कहीं कोई कंप्यूजन वाली स्थिति नहीं है.

दरअसल, कांग्रेस ने प्रणव झा को राज्यसभा की एक सीट के लिए उम्मीदवार बनाया है. इसके बाद

झारखंड मुक्ति मोर्चा के तेवर बेहद तल्व हो गए थे. पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं बैठक बुलाई थी. बैठक के बाद जामुमो के विधायकों ने कांग्रेस पर एकतरफा उम्मीदवार के नाम की घोषणा कर ठेस पहुंचाने का आरोप लगाया और कहा कि जामुमो

शर्मा को ऑब्जर्वर बनाकर रांची भेजा. झारखंड में राज्यसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच शनिवार को कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी (AICC) के ऑब्जर्वर (पर्यवेक्षक) भूपेश बघेल और अजय शर्मा ने रांची पहुंचकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से उनके आवास पर मुलाकात

सियासी समीकरण इस प्रकार हैं: 1. "गठबंधन में ऑल इज वेल" बैठक के बाद कांग्रेस पर्यवेक्षक भूपेश बघेल और अजय शर्मा ने मीडिया से बात करते हुए साफ किया कि महागठबंधन के भीतर कोई गलतफहमी (misunderstanding) नहीं है। भूपेश बघेल ने कहा, "मुख्यमंत्री



को राज्यसभा की दोनों सीटों पर उम्मीदवार खड़ा करना चाहिए. इसके बाद कांग्रेस की ओर से डैमेज कंट्रोल का प्रयास तेज हुआ. कांग्रेस की केंद्रीय नेतृत्व ने भूपेश बघेल और अजय



की। करीब दो घंटे चली इस बैठक में दोनों दलों के बीच राज्यसभा सीटों के तालमेल और आगामी चुनावी रणनीति पर विस्तार से चर्चा हुई। इस मुलाकात से जुड़ी मुख्य बातें और

हेमंत सोरेन से बहुत ही अच्छे और सकारात्मक माहौल में बातचीत हुई है। हमारा गठबंधन पूरी तरह मजबूत है और हम राज्यसभा की दोनों सीटें जीतने जा रहे हैं।"



रांची की बेकन फैक्ट्री का होगा कायाकल्प, मंत्री शिल्पी नेहा तिकी की बैठक में रणनीतिक रोडमैप तैयार

झारखंड की कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिकी ने राज्य के पशुधन बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। कृषि एवं पशुपालन मंत्री की अध्यक्षता में हुई एक उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक में रांची के कांके स्थित ऐतिहासिक बेकन फैक्ट्री के पुनरुद्धार और आधुनिकीकरण के लिए रणनीतिक रोडमैप तैयार किया गया है।

आज की बैठक में ICAR-राष्ट्रीय मांस अनुसंधान संस्थान (NMRI), हैदराबाद के निदेशक डॉ. एसबी बरबुधे, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एम मुथुकुमार, पशुपालन विभाग के निदेशक रोबिन टोप्पो और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। कृषि मंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिया कि इस परियोजना को उच्च प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। फैक्ट्री के आधुनिकीकरण और त्वरित क्रियान्वयन (Fast-Tracking) के लिए NMRI, हैदराबाद के विशेषज्ञों और राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों की एक संयुक्त समिति गठित की गई है, जो आगामी कुछ

हफ्तों में एक ठोस कार्य योजना (Action Plan) सौंपेगी। मंत्री शिल्पी नेहा तिकी ने फैक्ट्री को पर्यावरण अनुकूल और 'जीरो-वेस्ट' (शून्य अपशिष्ट) प्रसंस्करण इकाई बनाने पर विशेष जोर दिया है। इसके लिए कई

को उच्च प्रोटीन वाले पशु आहार घटकों में बदलकर व्यावसायिक लाभ सुनिश्चित करेगा। साथ ही परिसर में एक समर्पित प्रशिक्षणार्थी हॉस्टल का निर्माण किया जाएगा, ताकि स्थानीय युवाओं और उद्यमियों को आधुनिक

संचालित करें, जो भविष्य में सरकारी अनुदान पर निर्भर न रहे। कांके बेकन फैक्ट्री को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों और संस्थागत बिक्री के माध्यम से वित्तीय स्वायत्तता और आत्मनिर्भर (Self-Sustainability) बनाया



पशुधन आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए मंत्री ने राजकीय पशुधन फार्मों को 'मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना' (MMPVY) के साथ जोड़ने का निर्देश दिया है। इसके तहत, सरकारी फार्म नर्सरी के रूप में कार्य करेंगे, जहां से लाभार्थियों को रोग-प्रतिरोधी और उच्च गुणवत्ता वाले पशुओं की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही, बेकार हो गए उपकरणों की नीलामी और नई तकनीकी निविदाओं की प्रक्रिया को तेज करने का निर्देश दिया गया है।

निर्देश दिए गए। जिसमें अत्याधुनिक इफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (ETP) और उन्नत रेंडरिंग प्लांट की स्थापना की प्रक्रिया तुरंत शुरू की जाएगी। यह रेंडरिंग प्लांट बूछड़खाने के उप-उत्पादों

मांस प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन का तकनीकी प्रशिक्षण दिया जा सके। मंत्री ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस प्रोजेक्ट को एक ऐसे व्यावसायिक मॉडल के रूप में

जाएगा। उन्होंने कहा कि यह पुनरुद्धार केवल एक संयंत्र को शुरू करना नहीं, बल्कि पशुपालकों के लिए आर्थिक समृद्धि का नया जरिया है।



भारतीय हॉकी की ताकत बन रहा रांची रेल मंडल, राष्ट्रीय टीम में शामिल हैं कई खिलाड़ी

खिलाड़ियों को रोजगार उपलब्ध कराने और उन्हें राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने में भारतीय रेल की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे का रांची रेल मंडल आज झारखंड में खिलाड़ियों के लिए सबसे बड़े मंच के रूप में उभरकर सामने आया है।

खेल कोटा के माध्यम से खिलाड़ियों को नौकरी देने के साथ-साथ उन्हें बेहतर प्रशिक्षण, आधुनिक सुविधाएं और प्रतिस्पर्धी माहौल उपलब्ध कराकर रांची रेल मंडल भारतीय खेल जगत, विशेषकर हॉकी में अपनी अलग पहचान बना चुका है। वर्तमान समय में भारतीय पुरुष और महिला हॉकी टीम में शामिल कई खिलाड़ी रांची रेल मंडल से जुड़े हुए हैं, जो इस संस्थान की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

रांची रेल मंडल की पहचान आज भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सलीमा टेरे से भी जुड़ी हुई है। झारखंड के सिमडेगा से निकलकर अंतरराष्ट्रीय हॉकी में अपनी अलग पहचान बनाने वाली सलीमा वर्तमान में भारतीय महिला टीम का नेतृत्व कर रही हैं और रांची रेल मंडल में कार्यरत हैं। उनके साथ ओलंपियन निक्की प्रधान भी लंबे समय से भारतीय टीम की महत्वपूर्ण खिलाड़ी रही हैं। निक्की ने टोक्यो ओलंपिक सहित कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में

भारत का प्रतिनिधित्व किया है और आज भी युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं। लगातार राष्ट्रीय टीम में खिलाड़ियों की मौजूदगी यह साबित करती है कि रांची रेल मंडल झारखंड की प्रतिभाओं को अवसर देने के साथ-साथ उन्हें शीर्ष स्तर तक पहुंचाने में भी सफल रहा है। पुरुष हॉकी में भी रांची रेल मंडल की उपस्थिति लगातार मजबूत होती जा रही है। युवा खिलाड़ी अमनदीप

उनके प्रदर्शन की चर्चा हो रही है। आगामी विश्व स्तरीय प्रतियोगिताओं और राष्ट्रीय कैंप में भी वे भारतीय टीम का हिस्सा हैं। इसके अलावा सुमित लकड़ा और सुनील जोगो जैसे खिलाड़ी जूनियर विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और रांची रेल मंडल के गौरव को बढ़ा चुके हैं। रेल मंडल से जुड़े खेल अधिकारियों के अनुसार वर्तमान में पुरुष और महिला हॉकी वर्ग में दर्जनभर

मजबूत नर्सरी माना जाता है। भारतीय हॉकी में रांची रेल मंडल का योगदान केवल खिलाड़ियों तक सीमित नहीं है। भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान असुता लकड़ा, जो वर्तमान में राष्ट्रीय (भारतीय) हॉकी टीम की चयनकर्ता हैं, रांची रेल मंडल की ही खिलाड़ी हैं। उनकी भूमिका नई प्रतिभाओं को आगे लाने और भारतीय हॉकी को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण रही है। इसी



लकड़ा भारतीय हॉकी के उभरते सितारों में शामिल हैं। उन्हें देश के सबसे प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ियों में गिना जाता है। पेनाल्टी कॉर्नर विशेषज्ञ के रूप में उनकी पहचान तेजी से बनी है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी

से अधिक खिलाड़ी ऐसे हैं जो भारतीय टीम, राष्ट्रीय शिविर या अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं से जुड़े हुए हैं। यह किसी भी संस्थान के लिए बड़ी उपलब्धि है। यही वजह है कि रांची रेल मंडल को झारखंड में खिलाड़ियों की सबसे

प्रकार पूर्व कप्तान सुमराय टेरे ने भी भारतीय हॉकी में झारखंड की पहचान स्थापित करने में अहम योगदान दिया। रांची रेल मंडल का इतिहास कई दिग्गज खिलाड़ियों की उपलब्धियों से भरा हुआ है।



Satellite News Channel 24X7

Also Available on All Leading
MSO & OTT Platform



658



276

TATA | sky
coming soon

Also Available on cable network



@raftaarmedia
 @raftaarmedia
 @raftaarmedia
 @raftaarmedia47

www.raftaarmedia.com



रांची रेल मंडल ने कई खिलाड़ियों को संवारा

महिला हॉकी में रांची रेल मंडल का योगदान केवल इन दो नामों तक सीमित नहीं है। संगीता कुमारी, दीपिका सोरेण, बेला रानी टोपनो, ब्यूटी डुंगडुंग और निराली टोपनो जैसी कई खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुकी हैं। इनमें से कई खिलाड़ी भारतीय टीम के कैप और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का हिस्सा रही हैं। सावित्री पूर्ति को एकीकृत बिहार-झारखंड क्षेत्र की पहली अंतरराष्ट्रीय महिला हॉकी खिलाड़ी माना जाता है। उन्होंने उस दौर में राष्ट्रीय टीम में जगह बनाई, जब महिला हॉकी को आज जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। बाद में वे राष्ट्रीय चयनकर्ता भी बनीं और भारतीय हॉकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा विश्वासी पूर्ति, अल्मा गुड़िया और दयामनी सोय ने 1986 एशियाई खेलों में भारत के लिए कांस्य पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। वहीं, सुमराय टेरे और मसीरा सुरीन राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा रहीं। असुता लकड़ा ने भी भारतीय टीम की कप्तानी करते हुए कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का नेतृत्व किया। रांची रेल मंडल की उपलब्धियों केवल वर्तमान और अतीत तक सीमित नहीं हैं। अनुभवी खिलाड़ियों

में भी इसकी मजबूत उपस्थिति दिखाई देती है। एशियन पदक विजेता सरिता टोप्पो और पूनम टोप्पो जैसे खिलाड़ी वेटर्न वर्ग में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। हाल ही में वेटर्न विश्व कप में शानदार प्रदर्शन के बाद एक बार फिर उनका चयन राष्ट्रीय शिविर के लिए हुआ है। यह

ने अत्याधुनिक हॉकी स्टेडियम, जिम, फिजियोथेरेपी सेंटर और प्रशिक्षण सुविधाएं विकसित की हैं। अनुभवी प्रशिक्षकों की देखरेख में खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। खेल कोटा के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को रोजगार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्ष 2019 से 2023 के बीच 25 से

हैं। झारखंड के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में छिपी प्रतिभाओं को खोजने के लिए भी रांची रेल मंडल लगातार प्रयास कर रहा है। विशेष भर्ती और प्रतिभा खोज अभियान के माध्यम से युवाओं को अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। यही कारण है कि आज रांची रेल मंडल केवल एक सरकारी संस्थान नहीं, बल्कि भारतीय



दर्शाता है कि रांची रेल मंडल खिलाड़ियों को लंबे समय तक खेलों से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करता है। खिलाड़ियों के विकास के लिए रांची रेल मंडल

अधिक खिलाड़ियों को रेलवे में नियुक्ति दी गई, जबकि हाल के वर्षों में भी कई खिलाड़ियों को नौकरी देकर खेल और करियर दोनों में स्थिरता प्रदान की गई

पुरुष वर्ग में अमनदीप लकड़ा जैसे युवा खिलाड़ी भारतीय हॉकी का भविष्य माने जा रहे हैं। हमारा प्रयास सिर्फ खिलाड़ियों को नौकरी देना नहीं है, बल्कि उन्हें बेहतर प्रशिक्षण, आधुनिक सुविधाएं और ऐसा माहौल उपलब्ध कराना है, जिससे वे देश के लिए पदक जीत सकें। रांची रेल मंडल आगे भी झारखंड के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों की प्रतिभाओं को अवसर देने, उन्हें खेल से जोड़ने और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के लिए लगातार काम करता रहेगा।

हॉकी की ऐसी मजबूत नर्सरी बन चुका है, जहां से निकलने वाले खिलाड़ी लगातार देश का नाम विश्व पटल पर रोशन कर रहे हैं।



पहाड़ का दर्द! बीमार महिला को चारपाई में उठाकर 3 KM चले ग्रामीण, सरकार के दावे को दिखाया आइना

विकास के दावों के बीच सल्ट विकासखंड की जाख ग्रामसभा का पणचुरा तोक आज भी सड़क जैसी बुनियादी सुविधा से वंचित है। इसका दर्द उस समय फिर सामने आया, जब कल 75 वर्षीय बुजुर्ग महिला भागुली देवी को उपचार के लिए ग्रामीणों को चारपाई पर लिटाकर करीब तीन किलोमीटर दूर सड़क तक पहुंचाना पड़ा। दुर्गम पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए ग्रामीणों ने लगभग दो घंटे की मशक्कत के बाद उन्हें वाहन तक पहुंचाया, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए ले जाया जा सका। यह घटना एक बार फिर पहाड़ के उन गांवों की हकीकत बयां करती है, जहां आज भी बीमारी, बुजुर्गवस्था और आपात स्थिति में लोगों का सहारा सड़क नहीं, बल्कि ग्रामीणों के कंधे बनते हैं। भागुली देवी अपने बुजुर्ग पति के साथ पणचुरा गांव में रहती हैं, उनके तीनों बेटे गोविंद सिंह, गोपाल सिंह और दान सिंह रोजगार के सिलसिले में बाहर निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। कुछ महीने पहले भागुली देवी घर के चबूतरे से गिरकर घायल हो गई थीं,

चोट लगने के बाद उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाने की जरूरत थी, लेकिन गांव तक सड़क न होने के कारण समय पर उपचार संभव नहीं

तीनों बेटे घर पहुंचे, जब उन्होंने अपनी मां की बिगड़ती हालत देखी तो बेहतर इलाज के लिए उन्हें अपने साथ ले जाने का निर्णय लिया,

शुरू किया। रास्ता आसान नहीं था, ऊबड़-खाबड़ पगड़ंडियां, चढ़ाई और उतराई से भरे तीन किलोमीटर लंबे सफर में ग्रामीणों को कई बार



जहां आज भी बीमारी, बुजुर्गवस्था और आपात स्थिति में लोगों का सहारा सड़क नहीं, बल्कि ग्रामीणों के कंधे बनते हैं। भागुली देवी अपने बुजुर्ग पति के साथ पणचुरा गांव में रहती हैं, उनके तीनों बेटे गोविंद सिंह, गोपाल सिंह और दान सिंह रोजगार के सिलसिले में बाहर निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। कुछ महीने पहले भागुली देवी घर के चबूतरे से गिरकर घायल हो गई थीं...

हो पाया, मजबूरी में उनका इलाज घर पर ही चलता रहा और उनकी स्थिति लगातार कमजोर होती गई। हाल ही में गांव में आयोजित जागर और पूजा-पाठ कार्यक्रम में उनके

इसके बाद गोपाल सिंह, दान सिंह, जगत सिंह और अन्य ग्रामीणों ने मिलकर भागुली देवी को चारपाई पर लिटाया और कठिन पहाड़ी रास्ते से सड़क तक पहुंचाने का अभियान

रुकना पड़ा। करीब दो घंटे की मेहनत के बाद बुजुर्ग महिला को मुख्य सड़क तक पहुंचाया जा सका, जहां से उन्हें वाहन के माध्यम से उपचार के लिए ले जाया गया।



यूपी में फिर से झुलसाने वाली गर्मी, पारा 40 के पार

उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटे की बात की जाए तो 1-2 जगह पर छुटपुट बूदाबांदी हुई. अधिकतम तापमान में वृद्धि हुई, तापमान लगभग 40 डिग्री सेल्सियस पार कर गया है जो कि सामान्य सामान्य से 2-3 डिग्री सेल्सियस अधिक है. दिन में आसमान साफ होने की वजह से तेज धूप निकल रही है, एक बार फिर से झुलसाने वाली भीषण गर्मी प्रदेश में शुरू हो गई है. मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार अभी 3 दिनों के अंदर अधिकतम तापमान में 2 से 5 डिग्री सेल्सियस की और अधिक वृद्धि हो सकती है. न्यूनतम तापमान में विशेष बदलाव नहीं होगा. बांदा एक बार फिर से सबसे अधिक गर्म जिला रहा. जहां पर तापमान 43 डिग्री सेल्सियस पार कर गया. मौसम विज्ञान विभाग ने मंगलवार से प्रदेश से कुछ जिलों में हीट वेव चलने की चेतावनी जारी की है. मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार सोमवार को तपिश में और वृद्धि होगी, अधिकतम तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की जाएगी. अधिकतम तापमान 42 और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है. राजधानी लखनऊ में झुलसाने वाली गर्मी का सिलसिला फिर से शुरू हो

गया है. अधिकतम तापमान में शुक्रवार के मुकाबले 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गई. अधिकतम तापमान 40.01 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया

जिले: रविवार को उत्तर प्रदेश का झांसी और बांदा जिला सबसे गर्म रहा. जहां पर अधिकतम तापमान 43.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जो कि सामान्य से 2

सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश में इन दिनों ड्राई हवाएं चल रही हैं. आसमान साफ है, पश्चिमी विक्षोभ का असर न होने के कारण 3 दिनों तक मौसम साफ बना



जो कि सामान्य से 1 डिग्री सेल्सियस अधिक है. वहीं न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जो कि सामान्य से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक है. झांसी और बांदा सबसे गर्म

डिग्री सेल्सियस अधिक है. वहीं सबसे कम न्यूनतम तापमान बिजनौर जिले में 20 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जो कि सामान्य से 4 डिग्री सेल्सियस कम है. मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर अतुल

रहेगा. अधिकतम तापमान में 2 से 5 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि दर्ज की जाएगी. तेज धूप खिलने और तापमान में वृद्धि होने के कारण बुंदेलखंड के कुछ इलाकों में मंगलवार से हीट वेव चल सकती है.



सीएम योगी का तोहफा: अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड दिखाने पर रोडवेज बस किराए में 50 फीसदी छूट

उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी (सिपाही) नागरिक पुलिस सीधी भर्ती-2025 की बहुप्रतीक्षित लिखित परीक्षा कल से प्रारंभ हो रही है। युवाओं के भविष्य से जुड़ी यह वृहद परीक्षा आठ, नौ और 10 जून को प्रदेश के सभी 75 जिलों में एक साथ आयोजित की जाएगी। इस ऐतिहासिक भर्ती प्रक्रिया के तहत कुल 32,679 रिक्त पदों को भरने के लिए रिकॉर्ड 28,86,797 अभ्यर्थियों ने अपना ऑनलाइन आवेदन किया है। परीक्षा के सफल, पारदर्शी व निष्पक्ष संचालन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेशभर में कुल 1,183 अत्याधुनिक परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। अभ्यर्थियों को बस किराए में मिलेगी भारी छूट: उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस महा-परीक्षा में शामिल होने वाले लाखों युवाओं को ध्यान में रखते हुए एक बड़ा और संवेदनशील फैसला लिया है। सरकार ने परीक्षार्थियों को परिवहन निगम (रोडवेज) की बसों में यात्रा करने पर सीधे किराए में 50 फीसद की भारी छूट देने की आधिकारिक घोषणा की है। जिन अभ्यर्थियों के पास भर्ती परीक्षा का वैध प्रवेश पत्र होगा, वे बस परिचालक को उसे दिखाकर किराए में 50 फीसद की इस विशेष छूट का लाभ उठा सकेंगे। यह

परीक्षा प्रतिदिन पूरी विधिक सुरक्षा के बीच दो मुख्य पालियों में आयोजित की जाएगी। दो पालियों में परीक्षा, अतिरिक्त समय की व्यवस्था: नियमों के तहत प्रथम पाली

अतिरिक्त पांच मिनट का अतिरिक्त समय देने का भी निर्णय लिया है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पूरे अभियान में कुल छह पालियों में परीक्षा प्रक्रिया को शांतिपूर्ण

शामिल होंगे। सुरक्षा के कड़े इंतजाम और सीसीटीवी से निगरानी: इस महा-परीक्षा को सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए स्थानीय प्रशासन, पुलिस विभाग और



सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक और द्वितीय पाली दोपहर तीन बजे से शाम पांच बजे तक संचालित की जाएगी। उत्तर प्रदेश भर्ती बोर्ड ने इस बार अभ्यर्थियों को प्रश्नपत्र हल करने के लिए निर्धारित समय के

दंग से संपन्न कराया जाएगा। डीजी भर्ती बोर्ड एसबी शिरडकर ने बताया कि भर्ती परीक्षा में पंजीकृत कुल अभ्यर्थियों की विशाल संख्या को देखते हुए प्रत्येक पाली में लगभग 4,81,416 अभ्यर्थी

गोरखपुर-लखनऊ के बीच चलेंगी परीक्षा स्पेशल ट्रेनें: परीक्षार्थियों के भारी आवागमन को सुगम बनाने के लिए गोरखपुर-लखनऊ रूट के बीच 10 जून तक दो विशेष अनारक्षित परीक्षा स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। रेलवे प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यदि आवश्यकता पड़ी तो नियमित ट्रेनों में तत्काल अतिरिक्त कोच (डिब्बे) लगाने की तैयारी भी पूरी कर ली गई है। स्टेशनों पर परीक्षार्थियों की सहायता के लिए पुलिस हेल्प डेस्क और भीड़ से बचने के लिए अतिरिक्त टिकट काउंटर क्रियाशील कर दिए गए हैं।

जिला प्रशासन की ओर से प्रदेश भर में व्यापक तैयारियां की गई हैं। सभी चयनित परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था को पहले के मुकाबले काफी सुदृढ़ और अभेद्य किया गया है।



मुख्यमंत्री योगी ने विज्ञान भारती अधिवेशन में कहा प्रगति का आधार विज्ञान, ज्ञान संग विज्ञान का करें स्वागत

मुख्यमंत्री ने कहा कि विज्ञान का मतलब ही लोक कल्याण है, दुनिया के अंदर जिस भी देश ने प्रगति की है उसके पास विज्ञान का यही भाव था. आधुनिक विज्ञान का कुल समय चार से पांच सौ साल का रहा है. भारत के प्राचीन गौरवशाली परम्परा को अध्ययन करेंगे, तो ये देखने को मिलता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी 44 से 45 प्रतिशत थी, चार सौ साल पहले भी लगभग 24-25 प्रतिशत हिस्सेदारी हमारी थी पर स्वतंत्रता के समय हम डेढ़ से दो प्रतिशत पर आ गए. हमको ये देखना होगा कि ऐसा क्यों हुआ. पहले किसान केवल किसान नहीं था, वो इनोवेटर था. उन्होंने कहा कि कृषि कभी घाटे का सौदा नहीं था. उस समय का किसान स्वयं नवाचार करता था. हमारा व्यापारी केवल व्यापारी नहीं था, बल्कि वो देश को जोड़ने महत्वपूर्ण कड़ी था. हमारी अर्थव्यवस्था खेती बाड़ी से जुड़े हुए थे, अपने उत्पाद को दुनिया में भेजने का काम करता था. भारत एक कृषि प्रधान देश माना जाता है. हमारी सबसे बड़ी ताकत एमएसएमई और कृषि क्षेत्र था. मुख्यमंत्री ने जगदीश चंद्र बसु के दो पौधे लगाने वाले कहानी बताई और कहा कि जीव में ही नहीं जंतुओं में भी चेतना होती है. बचपन में उन्होंने अपने माँ के द्वारा पौधे लगाये जाना का जिक्र किया. उन्होंने कहा

कि ज्ञान जहाँ से भी आये उसका स्वागत होना चाहिए उन्होंने जगदीश चंद्र बसु की लाइंस को भी उल्लेखित किया. भारत व उसकी परंपरा को धिक्कारा गया, जिसके फलस्वरूप सभी सुविधाओं से लैस भारत हो गया. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने

हुए भी रसायनों के अनावश्यक प्रयोग से खेतों को होने वाले नुकसान की तरफ भी ध्यान दिलाया. उन्होंने कहा कि 2014 पहले कारीगरों को बदहाल बनाया गया, उनके बनाए उत्पादों को बेकार कहा गया, परिणामस्वरूप वो बाजारों से बाहर हो गए.

आदर भाव से विज्ञान की उपलब्धियां रखने हेतु हुई थी.

इससे पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान में विशेषकर बुजुर्गों के स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान



एक जिला एक उत्पाद शुरू करके डिजाइन, पैकेजिंग को शुरू किया. बाजार से कारीगरों को जोड़ने का काम किया. आज हमारा निर्यात दो लाख करोड़ को पार कर गया है, इसका सबसे प्रमुख कारण हमारा एमएसएमई सेक्टर है. एमएसएमई सेक्टर को हमने खुली छूट दी, जिसके परिणामस्वरूप 96 लाख यूनिटों में तीन करोड़ लोग कार्य कर रहे. आज हमारा रोजगार रेट 3 प्रतिशत के नीचे आ चुका है. अनुसंधान एवं नवाचार पर सभी को जोड़ने की जरूरत है.

कहा कि मां गंगा के प्रति भारत की प्राचीन सनातन आस्था है. कोई कार्य ऐसा नहीं है जिसमें विज्ञान नहीं हो. उन्होंने ऑर्गेनिक खेती तथा जीरो बजट खेती की बात करते

विज्ञान भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो शेखर पांडेय ने अपने संबोधन में सभी का स्वागत करते हुए बताया गया कि विज्ञान भारती की शुरुआत 1991 में समाज के सामने बहुत

हेतु लगभग 150 करोड़ की लागत से 200 बिस्तरों वाला 7 मंजिला बन रहे अत्याधुनिक 'नेशनल सेंटर फॉर एजिंग' का स्थलीय निरीक्षण किया.



गोरखपुर में 31 खेलों में दमखम दिखाएंगे माध्यमिक और बेसिक स्कूलों के छात्र-छात्राएं

जिले में 31 खेलों में प्राथमिक और जूनियर हाईस्कूल के छात्र-छात्राएं अपना दमखम दिखाएंगे। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश का नए शैक्षिक सत्र (2026-27) में जारी खेल कैलेंडर में इन खेलों का जिक्र किया गया है। इससे संबंधित जिला स्तरीय आवश्यकता और औपचारिकता को पूरा करने की जिम्मेदारी जिला विद्यालय निरीक्षक को सौंपी गई है। इसकी रिपोर्ट 30 जून तक निदेशालय को भेज देनी है। इस आदेश के तहत कस्तूरबा स्कूल की छात्रों की अलग से टीम बनेगी। पहली बार ऐसा हो रहा है जब माध्यमिक शिक्षा के इस आदेश में जूनियर कक्षा के छात्रों को भी शामिल करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इससे कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों को खेल खेलने का मौका मिलेगा। छात्रों के लिए जिला और मंडल स्तर पर अलग प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। इस वर्ष बुधु, मलखंभ, गतका, कलारीपयट्टु, शतरंज, योगासन, थांगता मार्शल आर्ट, कुराश और सेपक टाकरा को

ट्रायल आधार पर प्रतियोगिता में शामिल किया गया है।

इसके अलावा बास्केटबॉल, स्केटिंग, तलवारबाजी, साइकलिंग, टेनिस और मॉडर्न पेंटाथलॉन जैसे खेलों के लिए चयन ट्रायल के जरिए होगा। प्रतियोगिता 14 से 19 वर्ष आयु वर्ग में आयोजित होगी। जो तीन आयु वर्ग में बंटेगी। तैराकी और एथलेटिक्स जैसी व्यक्तिगत स्पर्धा में प्रथम और द्वितीय स्थान पर प्राप्त खिलाड़ियों को प्रदेश टीम में शामिल किया जाएगा। जबकि एथलेटिक्स की रिले टीम का चयन अलग से होगा। मंडल के स्कूलों में कबड्डी, एथलेटिक्स, फुटबॉल हॉकी और वॉलीबॉल जैसी प्रतियोगिताओं में लगातार बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी सामने आते रहते हैं ऐसे में उन्हें राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी मौका मिले इस खेल कैलेंडर से यह तय करने की कोशिश की गई है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने जो खेल कैलेंडर जारी कर दिया किया है उसके तहत 30 जून से शुरू होकर 17 नवंबर तक चलने वाली



प्रतियोगिताओं में 31 खेलों को शामिल किया गया है। पहली बार बेसिक शिक्षा विभाग के कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों को भी सभी स्तरों पर प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलेगा। प्रतियोगिता में राजकीय सहायता प्राप्त वित्तविहीन, माध्यमिक विद्यालयों, उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अलावा केजीबीवी की छात्राएं भाग लेंगी। इनके अलावा जिला और मंडल स्तर पर अलग प्रतियोगिताएं आयोजित होगी।

प्रभारी जिला विद्यालय निरीक्षक गोरखपुर, अजीत सिंह ने इस संबंध में बताया है कि नई व्यवस्था के तहत जिले और मंडल की खेल प्रतिभाओं को प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने का इससे अवसर मिलेगा। इससे विद्यालय में खेल संस्कृति को भी नई मजबूती मिलेगी। गौर करें तो अभी तक खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से जिला स्तर

के खिलाड़ियों का दबदबा रहता था, लेकिन नई व्यवस्था से ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को भी अपने क्षमता को दिखाने का मंच मिलेगा। प्रतियोगिताएं जिला, मंडल और प्रदेश स्तर पर आयोजित की जाएगी। अंतर मंडलीय प्रतियोगिता में प्रदर्शन के आधार पर प्रदेश की टीम का गठन किया जाएगा। जो राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेगी। विभाग ने निर्देश दिया है कि प्रत्येक विद्यालय के छात्राएं कम से कम दो खेलों में प्रतिभा करें। इनमें एक टीम खेल और एक व्यक्तिगत खेल या दोनों टीम खेल शामिल हो सकते हैं। माध्यमिक शिक्षा विभाग ने जिला विद्यालय निरीक्षक को निर्देश दिया है कि अपने-अपने जिलों में प्रस्तावित प्रदेशीय प्रतियोगिताओं के आयोजन स्थल और तिथियां निर्धारित कर 25 जून तक उपलब्ध करा दें।



छत्तीसगढ़ में कंगना रनौत: सीएम साय के साथ देखी 'भारत भाग्य विधाता', नर्सों की वीरता को किया सलाम

भाजपा सांसद और बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत अपनी फिल्म 'भारत भाग्य विधाता' की विशेष स्क्रीनिंग के लिए रायपुर पहुंचीं। शहर के जोरा स्थित मॉल में आयोजित स्क्रीनिंग में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, सांसद बृजमोहन अग्रवाल सहित मंत्री और विधायक भी विशेष स्क्रीनिंग शामिल हुए। फिल्म देखने के बाद मुख्यमंत्री ने कंगना के अभिनय की सराहना की और कहा कि यह फिल्म 26/11 मुंबई आतंकी हमले के दौरान कामा अस्पताल की नर्सों के साहस और समर्पण की गाथा है। वहीं एयरपोर्ट पर मीडिया से चर्चा करते हुए कंगना रनौत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की जमकर प्रशंसा की और उन्हें वैश्विक नेतृत्व का प्रतीक बताया। भाजपा सांसद एवं अभिनेत्री कंगना रनौत अपनी नई फिल्म 'भारत भाग्य विधाता' की स्पेशल स्क्रीनिंग सीएम विष्णु देव साय के साथ देखीं। इस दौरान कंगना रनौत और मुख्यमंत्री साय ने फिल्म के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। रायपुर एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत में कंगना रनौत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की खुलकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को लगातार जनसमर्थन

मिल रहा है और वे विश्व के सबसे लोकप्रिय नेताओं में से एक बनकर उभर रहे हैं। कंगना ने कहा कि पूरी दुनिया नेतृत्व के लिए उनकी ओर देख रही

रनौत ने इसे देश के लिए गौरव का क्षण बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री को देशभर में जो सम्मान और लोकप्रियता मिल रही है, वह उनकी कार्यशैली और

कि यह सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि सेवा, समर्पण और साहस की प्रेरणादायक कहानी है, जिसे हर भारतीय को देखना चाहिए। भारतीय अस्पतालों में नर्सों की



फिल्म देखने के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कंगना रनौत का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी फिल्म की स्क्रीनिंग के लिए छत्तीसगढ़ को चुना, यह राज्य के लिए गौरव की बात है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कंगना ने फिल्म में नर्स की भूमिका को बेहद प्रभावशाली ढंग से निभाया है।

है और भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित होते हुए देखना गर्व की बात है। 10 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भारत के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले प्रधानमंत्री बनने के अवसर पर कंगना

नेतृत्व क्षमता का परिणाम है, दुनिया उन्हें वैश्विक मार्गदर्शन के प्रतीक के रूप में देख रही है। अपनी फिल्म 'भारत भाग्य विधाता' को लेकर कंगना रनौत ने लोगों से इसे देखने की अपील की। उन्होंने कहा

वर्दी पर ब्रिटिश प्रभाव और उसे भारतीय स्वरूप देने के सवाल पर कंगना ने कहा कि यह उनकी व्यक्तिगत राय हो सकती है, लेकिन नर्सों के लिए सबसे बेहतर वही होगा जो वे स्वयं पसंद करें।



2027 तक दिल्ली को मिलेंगी 59 नई एसटीपी, गृह मंत्री ने तय की जवाबदेही

राजधानी दिल्ली की जीवनदायिनी कही जाने वाली यमुना नदी को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति दिलाने के लिए केंद्र सरकार तेजी से कदम उठा रही है। अब हर 20 दिन पर यमुना की समीक्षा की जाएगी। यमुना की गिरती स्थिति पर गंभीर रुख अपनाते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सख्त निर्देश जारी किए हैं।

उन्होंने यमुना सफाई अभियान को समयबद्ध तरीके से पूरा करने का खाका खींचते हुए 2027 तक 59 नए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। साथ ही, अब इस परियोजना की प्रगति की समीक्षा हर 20 दिन में की जाएगी। लंबे समय से उपेक्षित रही यमुना की सफाई अब केंद्र सरकार के शीर्ष एजेंडे में शामिल हो गई है। हाल ही में हुई एक उच्च स्तरीय बैठक में गृह मंत्री अमित शाह ने साफ कर दिया कि यमुना का कायाकल्प केवल कागजी खानापूर्ति नहीं, बल्कि एक मिशन है। उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी दी है कि इस कार्य में कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। शाह ने स्पष्ट किया कि दिल्ली में सीवेज प्रबंधन प्रणाली को पूरी तरह



आम लोगों से 14 जून को सफाई करने की अपील की

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का कहना है, दिल्ली की जनता, जो वर्षों से यमुना की बदहाली को देख रही है, अब सरकार के इस सख्त रुख से उम्मीद लगाए बैठी है। यमुना का तट, जो कभी दिल्ली का गौरव हुआ करता था, एक बार फिर स्वच्छ और निर्मल हो, यही हर दिल्लीवासी की आकांक्षा है। उन्होंने आम लोगों से 14 जून को यमुना तट पर आने और सफाई करने की अपील की है। उन्होंने कहा यह 20-दिवसीय समीक्षा प्रक्रिया अब यह तय करेगी कि क्या दिल्ली सच में 2027 तक अपनी यमुना को प्रदूषण मुक्त देख पाएगी या यह भी पुरानी फाइलों में सिमट कर रह जाएगी

बदलने की आवश्यकता है, ताकि एक बूंद भी गंदा पानी बिना उपचार के यमुना में न गिरे। यमुना में गिरने वाले गंदे नालों की समस्या के समाधान के लिए सरकार ने 59 नए एसटीपी बनाने की महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है। इन

संयंत्रों के निर्माण से दिल्ली की सीवेज शोधन क्षमता में भारी वृद्धि होगी। वर्ष 2027 तक सभी 59 एसटीपी को पूरी तरह कार्यात्मक बनाने का लक्ष्य है। इन नए संयंत्रों में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया जाएगा, ताकि पानी को

गुणवत्ता मानकों के अनुरूप उपचारित किया जा सके। इन एसटीपी के लग जाने के बाद यमुना में सीधे गिरने वाले कचरे में भारी कमी आएगी, जिससे नदी के जलस्तर और गुणवत्ता में सुधार की उम्मीद है।



गिरिडीह पहुंची JPL टी-20 की ट्रॉफी, रांची टाइटंस के प्लेयर और टीम ऑनर ने किया शहर भ्रमण

इंडियन प्रीमियर लीग की तर्ज पर झारखंड प्रीमियर लीग 10 जून से होना है। जेपीएल की टीमों बन चुकी हैं। फ्रेंचाइजी अपनी-अपनी टीम के लिए खिलाड़ियों की बोली लगा चुके हैं। इस लीग का 10 जून से आगाज हो जाएगा। इस बीच इस लीग में गिरिडीह की अलग से चर्चा होनी है। यह चर्चा रांची टाइटंस को लेकर है। दरअसल, रांची टाइटंस टीम के ऑनर गिरिडीह के चर्चित व्यवसायी सलूजा गोल्ड के सतविंदर सिंह सलूजा हैं। सतविंदर सिंह, गिरिडीह के रहने वाले हैं और खेल के प्रति उनका झुकाव पहले से रहा है। ऐसे में इन्होंने टीम बनाई है, जिसका नाम रांची टाइटंस है। टीम में झारखंड के अलग-अलग जिले के खिलाड़ी भी शामिल हैं। निश्चित तौर पर गिरिडीह प्लस रांची दोनों जुड़ गया जो उत्साह पैदा कर रहा है। यह अच्छा मौका है खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने का। झारखण्ड के खिलाड़ी रविवार को जेपीएल 2026 टी 20 की ट्रॉफी रविवार को गिरिडीह पहुंची। ट्रॉफी के साथ रांची टाइटंस के खिलाड़ी और टीम ऑनर सलूजा गोल्ड ने शहर का भ्रमण किया। खिलाड़ियों के साथ ट्रॉफी पूरे शहर में घुमाई गई। ट्रॉफी यात्रा को एसपी डॉ. बिमल कुमार, मेयर प्रमिला मेहरा और डिप्टी मेयर सुमित कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर सलूजा गोल्ड के अमरजीत सिंह सलूजा, सतविंदर सिंह सलूजा, तरणजीत सिंह सलूजा, जोरावर सिंह सलूजा भी मौजूद रहे।



रांची टाइटंस में शामिल है खिलाड़ी

कप्तान ऑलराउंडर राजनदीप सिंह, उपकप्तान शिखर मोहन के अलावा टीम में आयुष भारद्वाज, सत्या सेतु, यश भगत, कुमार अंकित, श्रेष्ठ, युवराज सिंह, ओम सिंह, आर्यन हूदा, सचिन यादव, युवराज कुमार, मुकेश सिंह, प्रिंस मुर्मू, जतीन पांडेय, सौरभ सरकार, प्रेम कुमार चौरसिया, इशान ओम आदि शामिल हैं। टीम के कोच रतन कुमार, कौशल किशोर सिंह, टीम मैनेजर रजनीश सहाय मौजूद थे। इस मौके पर उप महापौर सुमित कुमार ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता से ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों का भी मनोबल बढ़ता है। निश्चित तौर पर जेपीएल एक अच्छी शुरुआत है।



देवघर की प्रशिक्षित महिलाओं को अब सरकारी सहारे का इंतजार, ट्रेनिंग के बाद नौकरी की मांग

जिले में महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय के द्वारा चलाए जा रहे स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रम के तहत ट्रेनिंग दी जा रही है। ट्रेनिंग में सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटीशियन, मछली पालन, सेल फोन रिपेयरिंग सहित कई हुनर सिखाए जाते हैं जिससे महिलाएं इन हुनर के दम पर पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें। देवघर में सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस योजना के तहत RSETI (रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूशन) में अब तक करीब 15 हजार महिलाओं को ट्रेड किया गया है। जो विभिन्न क्षेत्र में हुनर का प्रदर्शन कर अपना जीवन यापन कर रही हैं। रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूशन के निदेशक भोला बिलुंग बताते हैं कि ग्रामीण विकास मंत्रालय के इस योजना को गति देने के लिए हर जिले के बड़े बैंक सहयोग करते हैं। इसी के तहत देवघर में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया इस योजना के लाभ को ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं तक पहुंचाने का काम कर रही है। यहां से हुनर सीखने के बाद ज्यादातर महिलाएं अपने दम पर स्वरोजगार करती हैं और अपने परिवार की मदद करती हैं। केंद्र के इंचार्ज मिथिलेश कुमार बताते हैं कि इस संस्थान से ट्रेनिंग लेने के बाद आज की तारीख में करीब 25% महिलाएं अच्छे स्थान पर हैं, वहीं अन्य महिलाएं कहीं ना कहीं जरूर संघर्ष कर रही हैं। संस्था में ट्रेनर का काम कर रही चंपा पाल बताती हैं कि सरकार की ट्रेनिंग की सुविधा बेहद अच्छी है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को हूँद कर केंद्र में लाया जाता है और हुनर सीखने के साथ-साथ मुफ्त में उनके रहने खाने का भी इंतजाम किया जाता है। लेकिन नौकरी की बात पर उन्होंने कहा कि ज्यादातर महिलाएं अपने दम पर स्वरोजगार से ही आज सफल हुई हैं।

रोजगार से जोड़ती है तो इस ट्रेनिंग का ज्यादा लाभ मिलेगा

महिलाओं ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र से आने वाली महिलाएं हुनर तो सीख लेती हैं, लेकिन जब वह हुनर सीख कर अपने गांव जाती हैं तो अपने हुनर को निखारने का उनके पास कोई साधन नहीं बचता। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के पास रोजगार करने के लिए ना तो धन है और ना नौकरी हूँदने के लिए कोई साधन। ऐसे में सरकारी विभाग यदि प्रशिक्षित की हुई महिलाओं को चिन्हित कर उन्हें सीधा रोजगार से जोड़ती है तो इस ट्रेनिंग का उन्हें ज्यादा लाभ मिलेगा।





मुख्यमंत्री भजनलाल ने की गिरिराज महाराज की सप्तकोसीय परिक्रमा श्रीनाथजी मंदिर में पूजा की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ब्रज की पावन धरा पर सोमवार-मंगलवार रात को गोवर्धन गिरिराज महाराज की सप्तकोसीय परिक्रमा लगाई। मंगलवार सुबह श्रीनाथजी मंदिर में सपत्नीक पूजा-अर्चना, अभिषेक कर प्रदेश की सुख-समृद्धि, खुशहाली और जनकल्याण की कामना की। परिक्रमा के दौरान मुख्यमंत्री ने सामान्य श्रद्धालु की तरह धार्मिक परंपराओं का निर्वहन किया। वहीं, परिक्रमा मार्ग पर उमड़े श्रद्धालुओं ने जयकारों के साथ उनका स्वागत किया, जिससे भक्तिमय माहौल हो गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार शाम को डीग जिले के पूंछरी क्षेत्र पहुंचे। मंगलवार सुबह उन्होंने श्रीनाथजी मंदिर में विधि-विधान से विशेष पूजा-अर्चना, दुग्धाभिषेक किया और प्रदेशवासियों की सुख-शांति एवं समृद्धि की प्रार्थना की। इसके बाद उन्होंने गिरिराज महाराज की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। धार्मिक कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री ने गोवर्धन गिरिराज महाराज की सप्तकोसीय परिक्रमा भी की। सोमवार देर रात को उन्होंने सात दंडवत के साथ गिरिराज जी की सप्तकोसीय परिक्रमा शुरू की जो मंगलवार सुबह 4 बजे संपूर्ण की।

भंडारे का आयोजन में सीएम ने भाग लिया

मुख्यमंत्री को अपने बीच पाकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। परिक्रमा मार्ग पर जगह-जगह स्थानीय लोगों, साधु-संतों और विभिन्न सामाजिक संगठनों ने उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने परिक्रमार्थियों और श्रद्धालुओं के लिए आयोजित भंडारे में भी भाग लिया। उन्होंने स्वयं श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया और व्यवस्थाओं की जानकारी ली। भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। साथ ही साधु संतों को प्रसादि ग्रहण कराई।





मोदी के 12 साल पूरे होने पर NDA की हुई बैठक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 12 साल पूरे होने और भारत के सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने वाले चुने हुए प्रधानमंत्री बनने के मौके पर बुधवार को दोपहर 3 बजे भारत मंडपम में एक मीटिंग होने वाली है। स्टेज भारत मंडपम में शिफ्ट होगा, जहाँ एनडीए शासित सभी 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री, उप-मुख्यमंत्री और सीनियर नेता एक जरूरी मीटिंग के लिए इकट्ठा होंगे।

पीएम मोदी मीटिंग की अध्यक्षता करेंगे, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह और दूसरे अहम केंद्रीय मंत्री शामिल होंगे। इनमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल शामिल होंगे। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू समेत गठबंधन के नेताओं के भी हिस्सा लेने की उम्मीद है। एक सोर्स ने एएनआई को बताया कि यह मीटिंग ऐसे समय में हो रही है जब गठबंधन केंद्र में अपने 12 साल पूरे कर रहा है, और एजेंडा में प्रमुख योजनाएँ और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स का रिव्यू शामिल है ताकि यह पक्का किया जा सके कि फायदा आखिरी छोर तक पहुंचे, 2047 के लिए 'विकसित भारत' रोडमैप का जायजा लिया जाए, और वेस्ट एशिया संकट पर चर्चा की

1947 को देश के आजाद होने के बाद जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया

नरेंद्र मोदी ने 10 जून को सबसे लंबे समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। मोदी ने 26 मई 2014 को पीएम पद की शपथ ली थी। आज उनके कार्यकाल के 4399 दिन पूरे हो गए। इससे पहले यह रिकॉर्ड पूर्व पीएम जवाहरलाल नेहरू के पास था। वे 4398 दिनों तक इस पद रहे। मोदी का पीएम के तौर पर यह लगातार तीसरा कार्यकाल है। 15 अगस्त 1947 को देश के आजाद होने के बाद जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था। वे 15 अगस्त 1947 से 13 मई 1952 तक कुल 1732 दिन पीएम रहे।



जाए। इस बीच, विदेश मंत्रालय (MEA) ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में 'काफी बड़ा बदलाव' बताया, क्योंकि उन्होंने ऑफिस में 12 साल पूरे कर लिए हैं, और कहा कि इस दौरान देश की ग्लोबल पहचान और इंटरनेशनल असर काफी बढ़ा है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत के डिप्लोमैटिक कामों में इंटरनेशनल

सोलर अलायंस के जरिए क्लाइमेट एक्शन से लेकर यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) जैसे डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के इंटरनेशनल विस्तार तक, डेवलपिंग देशों के लिए एक अहम आवाज और ग्लोबल संकटों के दौरान सबसे पहले मदद करने वाले के तौर पर इसकी भूमिका जैसी पहल शामिल हैं। पीएम मोदी को केंद्रीय मंत्रियों, राजनीतिक नेताओं, दुनिया भर के

जाने-माने लोगों और अलग-अलग फील्ड की जानी-मानी हस्तियों से बधाई और मैसेज मिले हैं। 10 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार 4,399 दिन ऑफिस में पूरे किए। इससे पहले आम चुनाव के बाद पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का लगातार 4,398 दिनों तक काम करने का रिकॉर्ड टूट गया। यह कामयाबी देश के राजनीतिक इतिहास में एक अहम पल है।



सहकार से समृद्धि
आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर कृषि



इफको नैनो यूरिया प्लस और इफको नैनो डी.ए.पी. का बादा

लागत कम और लाभ ज्यादा

FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक

500 मिली
बोतल मात्र
₹ 225/- में

इफको
नैनो
यूरिया
प्लस
(तरल)



500 मिली
बोतल मात्र
₹ 600/- में

इफको
नैनो
डी.ए.पी.
(तरल)



इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड, राँची (झारखण्ड)

राज्य विपणन कार्यालय: एम1 (डी/एस) हरमू हाउसिंग कॉलोनी, राँची-834002

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 1800 103 1967; वेबसाइट : www.nanourea.in / www.nanodap.in



मोदी दुश्मनों से सरस्ती से निपटे और सुशासन लाए, 12 साल के रिकॉर्ड पर बोले मोहन यादव

मोदी अपने और देश के दुश्मनों से सरस्ती से निपटे हैं और सुशासन लाए हैं। ये कहना है मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव का। मोहन यादव ने बुधवार को भोपाल के गुफा मंदिर में पूजा-अर्चना करने के बाद पीएम मोदी की तारीफ में ये कसीदे पढ़े। उन्होंने प्रधानमंत्री के 12 साल पूरे होने और लगातार 4,399 दिन पीएम ऑफिस में पूरे करने पर मंदिर में प्रार्थना की और उनकी लंबी उम्र की कामना की। पीएम मोदी ने 10 जून को भारत के सबसे लंबे समय तक प्रजातांत्रिक तरीके से चुने गए प्रधानमंत्री रहने का रिकॉर्ड बनाया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल को एक ऐतिहासिक व मील का पत्थर बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, “प्रधानमंत्री देश में अच्छा शासन लाए हैं और दुनिया भर में भारत की स्थिति को सशक्त किया है। देश आजाद होने के बाद इतने लंबे समय तक प्रजातांत्रिक तरीके से चुने गए नेता के तौर पर काम करना हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड है। हम भोपाल में अपने सभी नेताओं और

कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन का नॉमिनेशन खारिज होने पर मोहन यादव ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, “ये पूरा घटनाक्रम कांग्रेस पार्टी की अपनी गलतियों की वजह से हुआ है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस ने खुद हारने के डर से फॉर्म में गलतियां कीं। यह बुनियादी लापरवाही की बात है। अगर कोई सालों तक राजनीति में रहने के बाद भी फॉर्म ठीक से नहीं भर सकता, तो ये उनकी अंदरूनी नाकामी है।”



कार्यकर्ताओं के साथ इस खास पल को मना रहे हैं। हम उनकी लंबी उम्र और लगातार सफल शासन के लिए प्रार्थना करते हैं। उन्होंने देश में सुशासन लाया है और दुश्मनों से सरस्ती से निपटा

है।” मुख्यमंत्री ने इस दौरान अगले लोकसभा चुनावों को लेकर भी बड़ा दावा कर दिया। उन्होंने कहा, “भारतीय जनता पार्टी की परंपरा महेश केवट जैसे आम कार्यकर्ता से लेकर बड़े नेताओं

तक, सबके साथ काम करने की है। हमें पूरा विश्वास है कि प्रधानमंत्री मोदी की लीडरशिप में, हम मध्य प्रदेश में अगले आम चुनावों में सभी 29 लोकसभा सीटें जीतेंगे।”



कुजू का मंदिर-मस्जिद है सौहार्द की मिसाल पूरे देश को देती है शांति और भाईचारे का संदेश

आशीष कुमार मुखर्जी

झारखंड के रामगढ़ जिले का कुजू क्षेत्र आज उस दौर में देश के लिए प्रेरणा बनकर उभरा है, जब अक्सर मंदिर और मस्जिद को लेकर विवादों की खबरें सुर्खियां बनती रहती हैं। यहां धार्मिक आस्था के दो प्रतीक—मंदिर और मस्जिद—महज कुछ कदमों की दूरी पर स्थित हैं, लेकिन लोगों के दिलों में कोई दूरी नहीं है। यही वजह है कि कुजू को सांप्रदायिक सौहार्द और गंगा-जमुनी तहजीब की जीवंत मिसाल माना जाता है। कुजू मध्य स्थित लगभग 120 वर्ष पुराना दुर्गा मंदिर और उसके समीप बना शिव मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र हैं। अपनी भव्यता और कलात्मक संरचना के कारण ये मंदिर क्षेत्र की पहचान बन चुका है। वहीं मंदिर परिसर से करीब 15 मीटर की दूरी पर स्थित मस्जिद भी लगभग एक सदी पुराने इतिहास की गवाह है। वर्षों से दोनों धार्मिक स्थल एक-दूसरे के पड़ोसी हैं और दोनों समुदायों के लोग प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना के साथ यहां जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

स्थानीय समाजसेवी एवं पूर्व सदर कयूम खान बताते हैं कि मंदिर और मस्जिद की यह निकटता केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि दिलों की भी निकटता है। यहां कभी धार्मिक कटुता को

120 वर्ष पुराना दुर्गा मंदिर और उसके समीप बना शिव मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र हैं। अपनी भव्यता और कलात्मक संरचना के कारण ये मंदिर क्षेत्र की पहचान बन चुका है।



जगह नहीं मिली। शकील खान जैसे युवा भी मानते हैं कि कुजू की असली पहचान हिंदू-मुस्लिम एकता और भाईचारा है, जिसे यहां की नई पीढ़ी भी आगे बढ़ा रही है। कुजू में धार्मिक पर्व केवल एक समुदाय का नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र का उत्सव बन जाता है। रामनवमी के अवसर

पर मुस्लिम समुदाय के लोग जुलूस मार्गों पर श्रद्धालुओं के लिए फल, पानी और शरबत की व्यवस्था करते हैं। वहीं मोहरम के दौरान हिंदू समुदाय के लोग बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाते हैं और पारंपरिक लाठी खेल के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।



ईद के अवसर पर हिंदू परिवार अपने मुस्लिम भाइयों के घर पहुंचकर सेवइयों का स्वाद लेते हैं, जबकि दुर्गा पूजा और दीपावली में मुस्लिम परिवार मिठाइयों और शुभकामनाओं के साथ खुशियां साझा करते हैं। वर्षों से चली आ रही यह परंपरा दोनों समुदायों को एक मजबूत सामाजिक सूत्र में बांधे हुए है। स्थानीय निवासी अर्जुन केशरी और शिव कुमार प्रसाद कहते हैं कि कुजू में धर्म अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन लोगों की सोच और दिल एक हैं। यही कारण है कि यहां कभी भी धार्मिक वैमनस्य को नपनने का अवसर नहीं मिला। आज जब समाज को एकता, सद्भाव और आपसी सम्मान की सबसे अधिक आवश्यकता है, तब कुजू का मंदिर और मस्जिद केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया हैं। ये दोनों घरोंहरे हर दिन यह संदेश देती हैं कि विविधता में ही भारत की शक्ति है और भाईचारे में ही समाज की असली मजबूती। कुजू की यह कहानी बताती है कि अगर दिलों में सम्मान और मोहब्बत हो, तो मंदिर और मस्जिद के बीच की दूरी कभी मायने नहीं रखती। एकता, शांति और इंसानियत का यह संदेश कुजू आज पूरे देश को दे रहा है।

ईद के अवसर पर हिंदू परिवार अपने मुस्लिम भाइयों के घर पहुंचकर सेवइयों का स्वाद लेते हैं, जबकि दुर्गा पूजा और दीपावली में मुस्लिम परिवार मिठाइयों और शुभकामनाओं के साथ खुशियां साझा करते हैं। वर्षों से चली आ रही यह परंपरा दोनों समुदायों को एक मजबूत सामाजिक सूत्र में बांधे हुए है।





एक कप चाय, एक झूठी दोस्ती और लुटी हुई जिंदगी ट्रेनों में सक्रिय नशाखुरानी गिरोह से सावधान!

दिनेश कुमार रजक || मिहिजाम

रात की यात्रा थी। हावड़ा से जसीडीह जाने वाली ट्रेन अपने तय समय पर पटरियों पर दौड़ रही थी। डिब्बे में बैठे अधिकांश यात्री अपने-अपने गंतव्य की ओर बह रहे थे। कोई मोबाइल पर बात कर रहा था, कोई खिड़की से बाहर अंधेरे में गुजरते गांवों की रोशनी देख रहा था, तो कोई सफर की थकान मिटाने के लिए ऊंच रहा था। इन्हीं यात्रियों में एक 57 वर्षीय व्यक्ति भी था, जिसकी जेब में वर्षों की मेहनत की कमाई थी और मन में घर पहुंचने की खुशी। उसे क्या पता था कि उसी डिब्बे में बैठा एक व्यक्ति उसकी हर गतिविधि पर नजर रख रहा है। वह कोई सामान्य सहयात्री नहीं, बल्कि एक ऐसा शिकारी था जो इंसानी भरोसे को हथियार बनाकर लोगों को अपना शिकार बनाता था। उसकी मुस्कान नकली थी, उसकी विनम्रता एक जाल थी और उसकी दोस्ती एक सुनियोजित साजिश। कुछ घंटों बाद एक कप चाय ने सब कुछ बदल दिया। जब पीड़ित की आंख खुली तो न दोस्त था, न पैसे और न ही वह अपने गंतव्य स्टेशन पर था। उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल थी! एक अनजान व्यक्ति पर भरोसा करना।

यह सिर्फ एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह भारतीय रेल में सक्रिय नशाखुरानी गिरोहों की भयावह सच्चाई है, जो हर दिन किसी न किसी यात्री को अपना शिकार बनाने की ताक में रहते हैं। देवघर जिले के सिरसा गांव निवासी विजय कुमार ओझा जो कि रोजगार के

120 वर्ष पुराना दुर्गा मंदिर और उसके समीप बना शिव मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र हैं। अपनी भव्यता और कलात्मक संरचना के कारण ये मंदिर क्षेत्र की पहचान बन चुका है।



सिलसिले में हावड़ा में रहते थे। 3 फरवरी 2026 को वे हावड़ा जंक्शन से हावड़ा-मोकामा एक्सप्रेस में सवार हुए। उनके पास 35 हजार रुपये नकद थे, जो उनकी मेहनत की गाढ़ी कमाई थी। ट्रेन आगे बढ़ी और सफर शुरू हुआ। कुछ ही देर में बगल की सीट पर बैठे एक व्यक्ति ने बातचीत शुरू की। पहले सामान्य परिचय हुआ। फिर गांव-घर की बातें हुईं। कुछ देर बाद दोनों के बीच ऐसा माहौल बन गया मानो वर्षों से परिचित हों। यही वह

क्षण था जिसका इंतजार अपराधी कर रहा था। नशाखुरानी गिरोह के सदस्य किसी यात्री को अचानक निशाना नहीं बनाते। वे पहले उसका विश्वास जीतते हैं। वे उसकी आर्थिक स्थिति, यात्रा की दिशा, व्यवहार और सामान का बारीकी से अध्ययन करते हैं। जब उन्हें यकीन हो जाता है कि सामने वाला व्यक्ति शिकार बनने योग्य है, तभी वे अपना जाल बुनते हैं। विजय कुमार भी इसी जाल में फंस गए।



सबसे बड़ा हथियार: हमारी भावुकता

भारतीय समाज की सबसे बड़ी खूबी है अपनापन। लेकिन यही खूबी कई बार कमजोरी बन जाती है। हम जल्दी विश्वास कर लेते हैं। कोई दो मीठी बातें कर ले तो हम उसे अपना समझ बैठते हैं। ट्रेनों में यही भावनात्मक कमजोरी अपराधियों का सबसे बड़ा हथियार बनती है। वे जानते हैं कि भारतीय यात्री बातचीत पसंद करते हैं। वे जानते हैं कि लोग सफर में मित्र बना लेते हैं। वे जानते हैं कि अधिकांश लोग किसी के दिए बिस्कुट या चाय को मना नहीं कर पाते। और यही आदत उन्हें शिकार बना देती है।

ऑपरेशन दुर्योधन मंडल

सूचना मिलते ही सीबीआई इंस्पेक्टर आलोक गोराई के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई। जामताड़ा आरपीएफ और स्थानीय पुलिस को साथ लेकर रणनीति बनाई गई। रात का समय चुना गया ताकि आरोपी भाग न सके। टीम दो हिस्सों में बंट गई। एक टीम स्थानीय थाना पहुंची जबकि दूसरी सीधे आरोपी के घर की ओर बढ़ी। घर की घेराबंदी कर दी गई। दरवाजा खटखटाया गया। अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। जब आरोपी की पत्नी ने दरवाजा खोलने से मना कर दिया तो अधिकारियों ने अलग रास्ता अपनाया। इंस्पेक्टर आलोक गोराई छत पर चढ़े और आंगन में कूद गए। इसके बाद अंदर से मुख्य दरवाजा खोला गया। घर की तलाशी शुरू हुई। लेकिन आरोपी दिखाई नहीं दिया। कुछ देर बाद एक बड़े सैंडूक पर संदेह हुआ। सैंडूक खोला गया। अंदर कुख्यात अपराधी दुर्योधन मंडल छिपा बैठा था। करीब चार महीने तक कानून से आंख-मिचौली खेलने वाला अपराधी आखिरकार पुलिस के सामने था। रात लगभग 11:55 बजे उसे गिरफ्तार कर लिया गया। आदतन अपराधी का लंबा इतिहास जांच में सामने आया कि दुर्योधन मंडल कोई नया अपराधी नहीं था। उसके खिलाफ हावड़ा, धनबाद,

टाटा, रांची, आसनसोल, जसीडीह, मधुपुर सहित कई स्थानों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। यह तथ्य कई गंभीर सवाल खड़े करता है। यदि एक अपराधी वर्षों तक विभिन्न स्थानों पर इसी तरह की घटनाओं को अंजाम देता रहा तो आखिर वह बार-बार कानून की पकड़ से कैसे बचता रहा? कितने लोग उसके शिकार बने होंगे? कितनों ने शर्म या निराशा के कारण शिकायत दर्ज नहीं कराई होगी? कितनों ने अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई गंवाई होगी? इन सवालों का जवाब शायद कभी पूरी तरह नहीं मिल पाएगा। नशाखुरानी गिरोह आखिर काम कैसे करते हैं? नशाखुरानी गिरोहों की कार्यप्रणाली बेहद सुनियोजित होती है। वे आमतौर पर ऐसे यात्रियों को निशाना बनाते हैं जो अकेले सफर कर रहे हों। पहले दोस्ती की जाती है। फिर बातचीत के जरिए जानकारी जुटाई जाती है। इसके बाद चाय, कॉफी, पानी, मिठाई, बिस्कुट या अन्य खाद्य पदार्थ पेश किए जाते हैं। इनमें नशीला पदार्थ मिला होता है। जैसे ही व्यक्ति बेहोश होता है, उसका सामान और नकदी लेकर अपराधी फरार हो जाते हैं। कई मामलों में पीड़ितों की हालत इतनी गंभीर हो जाती है कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है।

एक कप चाय और बेहोशी का अंधेरा

जब ट्रेन आसनसोल पहुंचा तो आरोपी ने दोस्ती का अगला चरण शुरू किया। उसने चाय लाने की पेशकश की। सामान्य परिस्थिति में यह एक मित्रवत व्यवहार लगता है। लेकिन उस चाय में नशीला पदार्थ मिला हुआ था। विजय कुमार ने बिना किसी संदेह के चाय पी ली। कुछ ही देर बाद उनके शरीर पर नशे का असर होने लगा। आंखें भारी होने लगीं, चेतना कमजोर पड़ने लगी और शरीर ने जवाब देना शुरू कर दिया। जिस व्यक्ति को जसीडीह स्टेशन पर उतरना था, वह गहरी बेहोशी में चला गया। उधर अपराधी अपने काम में जुट गया। उसने पीड़ित के बैग और जेबों की तलाशी ली। 35 हजार रुपये निकाल लिए और मौका मिलते ही ट्रेन से उतरकर

फरार हो गया। कुछ मिनटों में उसने एक मेहनतकश व्यक्ति की पूरी जमा पूंजी लूट ली थी। जब होश आया तो सब खत्म हो चुका था नशे की वजह से विजय कुमार अपना स्टेशन पार कर गए। जब काफी देर बाद उन्हें होश आया तो वे घबराहट और भय से भर गए।

उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि उनके साथ क्या हुआ है। सिर भारी था, शरीर कमजोर था और यादें बिखरी हुई थीं। उन्होंने अपने सामान की जांच की। रुपये गायब थे। जिस व्यक्ति को वे अपना नया दोस्त समझ रहे थे, वही उनका सबसे बड़ा दुश्मन निकला। उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। सफर की खुशी पलभर में दर्द और पछतावे में बदल गई।



एक सामाजिक संदेश

कुख्यात दुर्योधन मंडल की गिरफ्तारी निश्चित रूप से रेलवे सुरक्षा बल की बड़ी सफलता है। लेकिन असली जीत तब होगी जब ऐसे अपराधों को होने से पहले रोका जाए। इसके लिए सिर्फ पुलिस या रेलवे की जिम्मेदारी नहीं है। हर यात्री की जिम्मेदारी है कि वह सतर्क रहे। हर परिवार की जिम्मेदारी है कि यात्रा पर जाने वाले सदस्य को जागरूक करे। हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि संदिग्ध गतिविधियों की सूचना दे।

झिलुआ: साइबर अपराध में अखिल तो नशाखुरानी में कुख्यात

जामताड़ा जिले का झिलुआ क्षेत्र लंबे समय से साइबर अपराध के लिए बदनाम रहा है। लेकिन कम लोग जानते हैं कि यह इलाका नशाखुरानी गिरोहों की गतिविधियों के लिए भी चर्चित रहा है। यहां के कई अपराधी विभिन्न राज्यों में जाकर ट्रेन यात्रियों को निशाना बनाते रहे हैं। वे कभी साधु बन जाते हैं, कभी व्यापारी, कभी मजदूर और कभी छात्र। उनका असली हथियार कोई बंदूक नहीं, बल्कि भरोसा होता है।

रेलवे सुरक्षा बल की तत्परता

स्थिति को समझते हुए आसपास के यात्रियों और रेलवे सुरक्षा बल के जवानों ने मदद की। पीड़ित को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई। अस्पताल में उपचार के बाद जब उनकी स्थिति सामान्य हुई तो उन्होंने पूरी घटना की जानकारी रेलवे सुरक्षा बल को दी। अंततः 6 फरवरी को आधिकारिक शिकायत दर्ज कराई गई। मामला गंभीर था। यह सिर्फ चोरी नहीं थी, बल्कि नशीला पदार्थ देकर लूटपाट का संगठित अपराध था। रेलवे सुरक्षा बल और अपराध जांच शाखा ने तुरंत जांच शुरू कर दी। चार महीने तक चलता रहा तलाश

का अभियान आरोपी घटना के बाद मुंबई भाग गया। सामान्य तौर पर ऐसे अपराधी लगातार अपना ठिकाना बदलते रहते हैं ताकि पुलिस की पकड़ से दूर रह सकें। लेकिन रेलवे सुरक्षा बल ने हार नहीं मानी। चार महीने तक लगातार तकनीकी और मानवीय स्तर पर जांच चलती रही। मुखाबिर् तंत्र सक्रिय किया गया। पुराने रिकॉर्ड खंगाले गए। संदिग्धों की गतिविधियों पर नजर रखी गई। आखिरकार 8 जून को एक महत्वपूर्ण सूचना मिली। सूचना थी कि कुख्यात नशाखुरानी अपराधी दुर्योधन मंडल अपने घर में छिपा हुआ है।

सावधानी ही सुरक्षा है

रेलवे सुरक्षा बल लगातार जागरूकता अभियान चलाता है। स्टेशनों पर घोषणाएं होती हैं। पोस्टर लगाए जाते हैं। फिर भी लोग भूल कर बैठते हैं। यात्रा के दौरान कुछ मूलभूत नियम हमेशा याद रखने चाहिए। किसी अनजान व्यक्ति से खाने-पीने की वस्तु न लें। अपनी आर्थिक स्थिति की जानकारी किसी को न दें। नकदी और कीमती सामान सुरक्षित रखें। जरूरत से ज्यादा व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें। संदिग्ध गतिविधि दिखने पर तुरंत रेलवे सुरक्षा बल के जवान को सूचना दें। बेहोशी, चक्कर या असामान्य स्थिति महसूस होने पर तुरंत मदद लें। रेलवे हेल्पलाइन 139 पर तुरंत संपर्क करें।

निष्कर्ष: सफर में भरोसा नहीं, सतर्कता साथ रखें

विजय कुमार ओझा की कहानी हमें एक गहरा सबक देती है। अपराधी हमेशा डरावने चेहरे वाले नहीं होते। वे मुस्कुराते हैं, बातचीत करते हैं, दोस्ती करते हैं और भरोसा जीतते हैं। फिर उसी भरोसे को हथियार बनाकर हमला करते हैं। एक कप चाय, कुछ मीठी बातें और थोड़ी सी लापरवाही किसी की वर्षों की मेहनत को पलभर में छीन सकती है। रेल यात्रा भारत की जीवनरेखा है। हर दिन करोड़ों लोग सफर करते हैं। अधिकांश यात्राएं सुरक्षित होती हैं, लेकिन कुछ अपराधी इस भरोसे को तोड़ने का काम करते हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सुरक्षा कवच न पुलिस है, न तकनीक और न कोई कानून। सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है, आपकी जागरूकता, आपकी सतर्कता और आपकी समझदारी। याद रखिए, चलती ट्रेन में अनजाने से हुई दोस्ती कभी-कभी जिंदगी भर का पछतावा बन सकती है। इसलिए सफर में मुस्कुराइए, बातचीत कीजिए, लेकिन खाने-पीने की चीजें केवल अपने भरोसे की रखें। क्योंकि सुरक्षा की शुरुआत स्वयं से होती है।



अमेरिका में 50 डॉलर के Mango Box से लेकर ₹1.5 लाख के Mango Pass तक, क्यों बढ़ रहा है भारतीय आमों का ग्लोबल जुनून भारत में आम गर्मियों का फल है, लेकिन अमेरिका में यह 'सीजनल लगजरी' बन चुका है।

‘एडिबल गोल्ड’ बन चुका है भारतीय आम

भारत में आम गर्मियों का सामान्य स्वाद हो सकता है, लेकिन अमेरिका में यही फल अब ‘प्रीमियम अनुभव’ बन चुका है। लोग फ्लाइट ट्रेक कर रहे हैं, प्री-ऑर्डर बुक कर रहे हैं और 10-12 आमों के बॉक्स के लिए 50-60 डॉलर तक खर्च कर रहे हैं। भारतीय आम अब सिर्फ फल नहीं, बल्कि स्वाद, पहचान और वैश्विक बाजार - तीनों का प्रतीक बनते जा रहे हैं।

मुंबई, मालदा या लखनऊ के बाजारों में आम का मौसम हर साल उत्साह लेकर आता है। लेकिन हजारों किलोमीटर दूर अमेरिका में यही मौसम एक अलग तरह का जुनून पैदा करता है। भारतीय मूल के लोग सोशल मीडिया और व्हाट्सएप ग्रुप्स पर आम की खेप का इंतजार करते हैं, एयर कार्गो की जानकारी साझा करते हैं और प्रीमियम कीमत देकर “अपने देश का स्वाद” खरीदते हैं। भारत में आम एक फल हो सकता है, लेकिन विदेशों में यह तेजी से “सीजनल लक्जरी” बनता जा रहा है।

न्यू जर्सी के एक भारतीय स्टोर के बाहर सुबह से हलचल है। लोगों के हाथों में मोबाइल फोन हैं और बातचीत का विषय सिर्फ एक - “क्या हापुस की खेप पहुंच गई?” कुछ लोग पहले से बुक किए गए Mango Box लेने आए हैं। कुछ ग्राहक स्टोर कर्मचारियों से पूछ रहे हैं कि “कैसर कब आएगा?” वहीं सोशल मीडिया ग्रुप्स में एयर इंडिया और कार्गो फ्लाइट्स की ट्रैकिंग चल रही है। यह दृश्य किसी नए गैजेट लॉन्च का नहीं, बल्कि भारतीय आमों के सीजन का है। अमेरिका में भारतीय आम अब सिर्फ फल नहीं रहे। वे घर की याद, खास पहचान और स्वाद—तीनों का मिश्रण बन चुके हैं।



जब आम बन गया

‘प्रीमियम अनुभव’

भारत में आम गर्मियों का सामान्य हिस्सा है। सड़क किनारे ठेलों से लेकर बड़े बाजारों तक हर जगह इसकी भरमार दिखाई देती है। लेकिन अमेरिका और यूरोप जैसे देशों में यही फल एक सीमित मौसमी विलासिता की तरह देखा जाता है। यही वजह है कि वहां भारतीय आमों के लिए प्री-ऑर्डर बुक होते हैं, विशेष “Mango Pass” बेचे जाते हैं और पूरे सीजन के लिए खास सदस्यता योजनाएं तक चल रही हैं। कुछ विक्रेता “मैंगो पास” के नाम पर पूरे सीजन की बुकिंग लेते हैं, जिनकी कीमत 500 डॉलर से 2,000 डॉलर तक पहुंच जाती है। भारतीय मुद्रा में यह लगभग 40,000 से 1.5 लाख से भी अधिक बैठता है। वहीं 10-12 आमों के एक बॉक्स की कीमत 50-60 डॉलर तक पहुंच रही है। यानी कई बार एक आम की कीमत भारत में एक पूरे किलो आम से भी अधिक पड़ती है।

इतनी महंगी क्यों हो जाती है आम की मिठास?

यह सवाल अक्सर लोगों के मन में आता है कि भारत में आसानी से मिलने वाला आम विदेशों में इतना महंगा क्यों हो जाता है। असल वजह सिर्फ मांग नहीं, बल्कि पूरी सप्लाय चेन है।

भारत दुनिया के कुल आम उत्पादन का लगभग 40-50% हिस्सा पैदा करता है। सालाना उत्पादन 20 मिलियन मीट्रिक टन से भी अधिक माना जाता है। लेकिन इस विशाल उत्पादन का केवल लगभग 1% हिस्सा ही निर्यात हो पाता है। यानी विदेशों में भारतीय आम “दुर्लभ स्वाद” बन जाते हैं।



बाग से एयर कार्गो तक: लंबा सफर

भारतीय आमों का निर्यात अब पहले की तुलना में कहीं अधिक व्यवस्थित हो चुका है। निर्यातक अब Vapor Heat Treatment (VHT), आधुनिक पैकहाउस सुविधाओं, GI Tagging और उत्पाद ट्रेसबिलिटी जैसी प्रक्रियाओं को अपनाने पर जोर दे रहे हैं। इनका उद्देश्य सिर्फ गुणवत्ता बनाए रखना नहीं, बल्कि "Produce of India" ब्रांड को मजबूत करना भी है। विशेषज्ञ मानते हैं कि वैश्विक बाजार में अब सिर्फ स्वाद काफी नहीं है। उपभोक्ता यह भी जानना चाहते हैं कि फल कहां उगा, कैसे पैक हुआ और कितनी सुरक्षित सप्लाई चेन से होकर आया। इसीलिए भारतीय निर्यातक अब पैकेजिंग, ब्रांडिंग और प्रीमियम प्रेजेंटेशन पर भी पहले से ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

Nostalgia भी बेच

रहा है आम

अमेरिका में भारतीय आमों की मांग सिर्फ स्वाद की वजह से नहीं है। इसके पीछे भावनात्मक जुड़ाव भी बहुत बड़ा कारण है। भारतीय मूल के लाखों लोग हर साल आम के मौसम को अपने बचपन, परिवार और भारतीय गर्मियों की यादों से जोड़ते हैं। कई परिवारों के लिए आम का डिब्बा सिर्फ फल नहीं, बल्कि "घर की खुशबू" लेकर आता है। कुछ लोग बताते हैं कि आम काटते ही उन्हें अपने पुराने घर, छत पर ठंडे पानी में रखे आम और गर्मी की छुट्टियां याद आने लगती हैं। इसीलिए सोशल मीडिया पर लोग "First Mango of the Season" पोस्ट करते हैं, व्हाट्सएप ग्रुप्स में आम की खेप पहुंचने की जानकारी साझा करते हैं और कई बार स्टॉक खत्म होने से पहले ही एडवांस बुकिंग कर लेते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार भारतीय आम अब विदेशों में बसे भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बन चुके हैं।



निर्यात का बढ़ता कारोबार

भारतीय आम अब सिर्फ भारतीय समुदाय की दुकानों तक सीमित नहीं हैं। अमेरिका, ब्रिटेन और मध्य पूर्व की कई बड़ी रिटेल चेन में भी उनकी मौजूदगी बढ़ रही है। एपीडा और एग्री एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका भारतीय आमों का तेजी से बढ़ता बाजार बन रहा है। 2024 में अमेरिका को भारतीय आमों का निर्यात लगभग

10 मिलियन डॉलर के आसपास रहा, जबकि ब्रिटेन में भी एथनिक फूड मार्केट और रिटेल चेन के कारण मांग लगातार बढ़ रही है। विशेषज्ञों के अनुसार बेहतरीन कोल्ड-चेन इंफ्रास्ट्रक्चर, तेज एयर कार्गो कनेक्टिविटी और प्रीमियम फूट ब्रांडिंग आने वाले दशकों में भारतीय आमों के वैश्विक बाजार को और बड़ा बना सकते हैं।

इसके पीछे कई कारण हैं:

- आम जल्दी खराब होने वाला फल है
- निर्यात के लिए सख्त गुणवत्ता मानक लागू होते हैं
- एयर फ्रेट लागत बहुत अधिक होती है
- और अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण प्रक्रियाएं भी महंगी पड़ती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार अमेरिकी बाजार तक पहुंचने से पहले आमों को कई स्तरों की जांच और ट्रीटमेंट प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। कई खेपें तोड़ई के 48-72 घंटों के भीतर मुंबई या हैदराबाद से एयर कार्गो के जरिए न्यूयॉर्क और शिकागो जैसे शहरों तक पहुंचा दी जाती हैं, ताकि स्वाद और गुणवत्ता बनी रहे।

कौन से भारतीय आम हैं सबसे बड़े सितारे?

अगर अमेरिका में भारतीय आमों की लोकप्रियता की बात हो, तो महाराष्ट्र का हापुस यानी Alphonso सबसे ऊपर माना जाता है। इसकी मलाईदार बनावट, गहरा केसरिया रंग और विशिष्ट खुशबू ने इसे प्रीमियम केटेगरी में स्थापित कर दिया है। कई भारतीय परिवारों के लिए हापुस की खुशबू गर्मियों की पहली याद जैसी होती है। गुजरात का केसर भी तेजी से लोकप्रिय हुआ है। इसका मीठा स्वाद और केसर जैसी हल्की सुगंध इसे अलग पहचान देती है। इसके अलावा दक्षिण भारत का बंगनपल्ली अपने बड़े आकार और मुलायम गूदे के लिए पसंद किया जाता है, तोतापुरी प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में महत्वपूर्ण माना जाता है। जबकि उत्तर भारत का दशहरी अपनी पारंपरिक मिठास और रसदार स्वाद के कारण भारतीय समुदाय के बीच बेहद लोकप्रिय है विशेषज्ञों के अनुसार अलग-अलग भारतीय समुदायों की पसंद भी अलग होती है। कई परिवार आम चुनते समय सिर्फ स्वाद नहीं, बल्कि अपने बचपन और क्षेत्रीय यादों को भी खोजते हैं।

अब सिर्फ फल नहीं, एक ग्लोबल ब्रांड

भारतीय आम अब सिर्फ कृषि उत्पाद नहीं रह गए हैं। वे धीरे-धीरे दुनिया की प्रीमियम खाद्य पहचान का हिस्सा बनते जा रहे हैं। जिस तरह जापान के खास खरबूजे और मध्य पूर्व की प्रीमियम खजूर दुनिया भर में खास पहचान रखते हैं, उसी तरह भारतीय अल्फांसो और केसर आम भी अब वैश्विक स्वाद बाजार में अपनी जगह बना रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर निर्यात ढांचा मजबूत हुआ, पोस्ट-हार्वेस्ट नुकसान कम हुए और भारतीय आमों की ब्रांडिंग बेहतर हुई, तो उनका वैश्विक बाजार कई गुना तक बढ़ सकता है। भारत के लिए यह सिर्फ निर्यात की कहानी नहीं, बल्कि "सॉफ्ट फूड पावर" की कहानी भी बन सकती है।



आम का मौसम, अब वैश्विक उत्सव

भारत में आम सिर्फ गर्मियों का फल नहीं, बल्कि संस्कृति का हिस्सा है। और अब यही संस्कृति दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी अपनी जगह बना रही है। अमेरिका में भारतीय आमों के लिए लगने वाली कतारें

सिर्फ स्वाद की कहानी नहीं कहतीं—वे उस भावनात्मक रिश्ते की भी कहानी हैं, जो हजारों किलोमीटर दूर रहने वाले लोगों को अपने देश से जोड़ता है। शायद यही वजह है कि हजारों किलोमीटर दूर बसे लोगों के लिए भारतीय आम सिर्फ फल नहीं, बल्कि हर गर्मी में लौटती हुई घर की याद हैं।

भारतीय आम का वैश्विक सफर

बाग से वैश्विक बाजार तक – गुणवत्ता, तकनीक और विश्वास के साथ

1. बाग से कटाई
चयनित बागों से सही समय पर तोड़ाई

2. पैकहाउस प्रोसेसिंग
ग्रेडिंग, सॉर्टिंग, क्लीनिंग और पैकिंग

3. वैपर हीट ट्रीटमेंट (VHT)
कीट निवृत्त और निर्यात मानकों के लिए अनिवार्य प्रक्रिया

4. पैकिंग और लेबलिंग
प्रिमियम पैकिंग, GI टैगिंग और ट्रेसबिलिटी सिस्टम

5. एयर कार्गो के जरिए निर्यात
ताज़गी बनाए रखने के लिए निर्वज्रित तापमान में तेज़ दुलाई

6. वैश्विक बाजार तक पहुंच
विदेशों में स्टोर्स, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ग्राहकों के घर तक

भारतीय आम – वैश्विक पहचान

- भारत विश्व में आम का **40-50%** उत्पादन करता है
- दुनिया में निर्यात हिस्सेदारी सिर्फ **~1%** के आसपास
- उचित ढांचा, कम नुकसान और बेहतर ब्रांडिंग से बाजार कई गुना बढ़ सकता है

मांग और मूल्य

MANGO BOX

Mango Box (3-4kg)
\$50-\$60
(लगभग ₹4,000 – ₹5,000)

MANGO PASS

Mango Pass (सीजन भर प्रीमियम आम)
up to \$2,000
(लगभग ₹1.6 लाख+)

दुनिया में लोकप्रिय भारतीय आम

अल्फांसो

स्वाद, सुगंध और बनावट का बेहतरीन मेल

केसर

गहरा रंग, मीठा स्वाद और बेहतरीन क्वालिटी

दशहरी

लंबा आकार, रसीला गुदा और शानदार स्वाद

भारतीय आम – सिर्फ फल नहीं, भावनाओं और यादों का स्वाद



₹2,000 में 'मालिक' बनेंगे किसान

पाइन ग्रीन एग्रो का FPC मॉडल बदल सकता है ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तस्वीर

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

भारत में खेती अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रह गई है। बदलते कृषि परिदृश्य में किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी उपज का सही दाम हासिल करना और बढ़ती लागत को नियंत्रित करना है। इसी चुनौती के बीच हिमाचल प्रदेश की 'पाइन ग्रीन एग्रो फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनी' ने एक ऐसा मॉडल सामने रखा है, जो छोटे किसानों को 'उत्पादक' से आगे बढ़ाकर 'भागीदार' बनाने की बात करता है। कंपनी ने किसानों के लिए सदस्यता अभियान शुरू किया है, जिसके तहत कोई भी किसान 2,000 के निवेश पर कंपनी का शेयरधारक बन सकता है। कंपनी का दावा है कि इस पहल से किसानों को न केवल संगठित बाजार मिलेगा, बल्कि उनकी मोलभाव क्षमता भी बढ़ेगी।



पाइन ग्रीन एग्रो के मुताबिक, सदस्य किसानों को कई स्तरों पर सहायता दी जाएगी

- ▶ उन्नत कृषि तकनीकों पर प्रशिक्षण
- ▶ बागवानी, डेयरी और ऑर्गेनिक खेती पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन
- ▶ सरकारी योजनाओं और सब्सिडी तक सीधी जानकारी
- ▶ बीज, खाद और कृषि उपकरण रियायती दरों पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था
- ▶ सामूहिक खरीद और बिक्री के जरिए लागत कम करने का प्रयास

खेती को 'बिजनेस मॉडल' में बदलने की कोशिश

भारत में अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग से आते हैं। बिखरे हुए उत्पादन और सीमित बाजार पहुंच के कारण वे अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहते हैं। पाइन ग्रीन एग्रो इसी संरचना को बदलने की कोशिश कर रही है। कंपनी के चेयरमैन मेद सिंह का कहना है कि खेती को अब

पारंपरिक सोच से निकालकर संगठित व्यावसायिक मॉडल में बदलने की जरूरत है। सिंह बताते हैं, "जब किसान अकेले बाजार जाता है तो उसकी सौदेबाजी की ताकत सीमित होती है। लेकिन संगठन के रूप में वही किसान बाजार की दिशा तय कर सकता है।"





FPC मॉडल: कैसे जुड़ें?

* वेबसाइट: <https://www.pinegreenfarmlink.com>

* ईमेल: contact@pinegreenfarmlink.com

* कार्यालय दूरभाष: 01892-239000

* व्हाट्सएप हेल्पलाइन: +91 98169 23781



FPC मॉडल क्यों अहम माना जा रहा है?

विशेषज्ञ लंबे समय से किसान उत्पादक कंपनियों (FPC) को कृषि क्षेत्र में बदलाव का प्रभावी माध्यम मानते रहे हैं। इस मॉडल में किसान सामूहिक रूप से संसाधन खरीदते हैं, उत्पादन बेचते हैं और प्रोसेसिंग व मार्केटिंग जैसी गतिविधियों में हिस्सेदारी लेते हैं।

बिचौलियों से मुक्ति का दावा

भारतीय कृषि बाजार में बिचौलियों की भूमिका लंबे समय से विवाद का विषय रही है। कंपनी का दावा है कि उसका मॉडल किसानों को सीधे बड़े खरीदारों और प्रोसेसिंग उद्योगों से जोड़ेगा, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य मिल सकेगा।

इसके अलावा कंपनी भविष्य में कोल्ड स्टोरेज, फूड प्रोसेसिंग यूनिट और वैल्यू एडिशन इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की भी योजना बना

रही है। कृषि विशेषज्ञ मानते हैं कि यदि यह मॉडल जमीनी स्तर पर सफल होता है तो फसल बर्बादी कम करने और ग्रामीण रोजगार बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

किसानों के लिए 'डिविडेंड' का नया विचार पारंपरिक सहकारी समितियों से अलग, FPC संरचना किसानों को शेयरधारक के रूप में जोड़ती है। इसका मतलब यह है कि कंपनी के मुनाफे का हिस्सा भविष्य में लाभांश (Dividend) के रूप में किसानों तक पहुंच सकता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में यह मॉडल इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि इससे किसानों की आय केवल फसल बिक्री तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे कृषि व्यवसाय के साझेदार भी बनते हैं।





केंचुए और मधुमक्खियां गायब हो रहीं...

अगर खेत की मिट्टी खोदने पर केंचुए नहीं दिख रहे और फूलों पर मधुमक्खियों की गुंज कम हो गई है, तो यह सिर्फ एक सामान्य बदलाव नहीं। वैज्ञानिक इसे खेती, मिट्टी और खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चेतावनी मान रहे हैं। अत्यधिक रासायनिक खेती, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता में गिरावट अब कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की बुनियाद को प्रभावित करने लगी है।

क्या खेती एक 'साइलेंट इकोलॉजिकल क्राइसिस' की ओर बढ़ रही है?

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

कभी भारतीय गांवों में खेत की मिट्टी पलटते ही केंचुए दिखाई देना आम बात थी। आम और लीची के बागों में फूल आने के मौसम में मधुमक्खियों की गुंज पूरे वातावरण को जीवंत बना देती थी। किसान इन्हें प्रकृति का सामान्य हिस्सा मानते थे। लेकिन अब तस्वीर धीरे-धीरे बदल रही है। कई किसान बताते हैं कि खेतों में पहले जैसी मिट्टी की "जीवंतता" नहीं रही। फूलों वाले पौधों पर मधुमक्खियों की संख्या कम दिखाई देती है। वैज्ञानिकों के लिए यह केवल एक जैविक बदलाव नहीं, बल्कि खेती के भविष्य से जुड़ा गंभीर संकेत है। दुनिया भर में वैज्ञानिक अब एक "साइलेंट इकोलॉजिकल क्राइसिस" की चर्चा कर रहे हैं—ऐसा संकट जिसकी आवाज सुनाई नहीं देती, लेकिन जिसका असर मिट्टी, फसलों और पर्यावरण में साफ दिखाई देने लगा है।

संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) और हालिया वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार परागण करने वाले कीटों और लाभकारी मिट्टी जीवों की संख्या तेजी से घट रही है। इसके पीछे अत्यधिक रासायनिक खेती, जलवायु परिवर्तन, सूक्ष्म प्लास्टिक, प्रदूषण और मिट्टी में जैविक पदार्थों की कमी जैसे कारणों को जिम्मेदार माना जा रहा है। विशेषज्ञ अब चेतावनी दे रहे हैं कि यदि केंचुओं और मधुमक्खियों की गिरती संख्या को गंभीरता से नहीं लिया गया, तो भविष्य में खाद्य सुरक्षा, मिट्टी की उर्वरता और फल-सब्जी उत्पादन पर गहरा असर पड़ सकता है।

केंचुआ: मिट्टी का 'प्राकृतिक इंजीनियर'

केंचुए को अक्सर एक साधारण जीव समझ लिया जाता है, लेकिन कृषि विज्ञान में इसकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है। वैज्ञानिक इसे "धरती का प्राकृतिक इंजीनियर" कहते हैं। केंचुआ मिट्टी को भुरभुरी बनाता है, उसमें हवा और पानी का प्रवाह बढ़ाता है और कार्बनिक पदार्थों को विघटित कर पौधों के लिए उपलब्ध पोषक तत्वों में बदलता है। जिस खेत में पर्याप्त संख्या में केंचुए पाए जाते हैं, वहां की मिट्टी सामान्यतः अधिक उपजाऊ और जैविक रूप से सक्रिय मानी जाती है। हालिया शोधों में यह भी सामने आया है कि अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों, जहरीले कीटनाशकों और जैविक कार्बन की कमी का सबसे पहला असर केंचुओं की आबादी पर पड़ता है। यही कारण है कि वैज्ञानिक अब केंचुओं को "मिट्टी के स्वास्थ्य का जैव संकेतक" भी मानने लगे हैं।



जब केंचुए गायब होने लगते हैं...

विशेषज्ञों के मुताबिक खेतों से केंचुओं का गायब होना केवल एक जीव का खत्म होना नहीं है। यह मिट्टी की पूरी जैविक प्रणाली के कमजोर पड़ने का संकेत हो सकता है। जब मिट्टी में केंचुओं की संख्या घटती है, तो मिट्टी की जैविक सक्रियता कम होने लगती है। लाभकारी सूक्ष्मजीव प्रभावित होते हैं, मिट्टी कठोर होने लगती है और उसकी जल धारण क्षमता कमजोर पड़ती है। इसका सीधा असर फसलों की जड़ों और उर्वरकों की उपयोग क्षमता पर पड़ता है। धीरे-धीरे किसान को अधिक सिंचाई, अधिक उर्वरक और अधिक रासायनिक हस्तक्षेप की जरूरत महसूस होने लगती है। विशेषज्ञों का कहना है कि "मृत मिट्टी" की शुरुआत वहीं से होती है, जहां मिट्टी के जीव धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं।

मधुमक्खियां: खेती की अदृश्य मजदूर

मधुमक्खियों को अक्सर केवल शहद उत्पादन से जोड़कर देखा जाता है, जबकि उनकी सबसे बड़ी भूमिका परागण में होती है। दुनिया की लगभग 75 प्रतिशत फूलदार फसलें किसी न किसी रूप में परागण करने वाले कीटों पर निर्भर हैं और इनमें मधुमक्खियों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। फल, सब्जी, तिलहन और बागवानी फसलों में मधुमक्खियों की सक्रियता सीधे उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित करती है। लीची, आम, सरसों, सूरजमुखी, खीरा, तरबूज और कई मसाला फसलों में बेहतर फल सेटिंग और अधिक उत्पादन के लिए मधुमक्खियां बेहद जरूरी हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि जिन क्षेत्रों में मधुमक्खियों की सक्रियता अधिक होती है।



“इंसेक्ट अपोकैलिप्स”

की चर्चा क्यों?

दुनिया के कई वैज्ञानिक अब “इंसेक्ट अपोकैलिप्स” यानी लाभकारी कीटों के बड़े संकट की चर्चा कर रहे हैं। यूरोप, अमेरिका और एशिया के कई हिस्सों में उड़ने वाले कीटों की संख्या में भारी गिरावट दर्ज की गई है। यदि यही स्थिति जारी रही, तो भविष्य में परागण संकट गहरा सकता है। इसका असर केवल खेती तक सीमित नहीं रहेगा। फल और सब्जी उत्पादन घटने से खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं और पोषण सुरक्षा पर भी असर पड़ सकता है।

बिहार और पूर्वी भारत के

लिए क्यों गंभीर है यह संकट?

बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों की खेती काफी हद तक बागवानी और परागण आधारित फसलों पर निर्भर है। विशेषकर लीची और आम के बागों में मधुमक्खियों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। लेकिन फूल अवस्था में अधाधुनिक कीटनाशक छिड़काव, अत्यधिक गर्मी और मिट्टी में घटते जैविक पदार्थों के कारण लाभकारी कीटों और मिट्टी जीवों की संख्या प्रभावित हो रही है। कई किसानों का अनुभव है कि पहले जहां खेतों में मिट्टी पलटते ही केंचुए दिखाई देते थे, अब वे बहुत कम दिखते हैं। इसी तरह फूलों पर मधुमक्खियों की सक्रियता भी पहले जैसी नहीं रही।

आखिर क्यों घट रही हैं मधुमक्खियां?

विशेषज्ञ इसके पीछे कई कारण बताते हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण अत्यधिक रासायनिक खेती को माना जा रहा है। नियोनिकोटिनॉइड जैसे जहरीले कीटनाशक मधुमक्खियों की तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करते हैं। इससे उनकी दिशा पहचानने, भोजन खोजने और वापस छत्ते तक लौटने की क्षमता कमजोर हो जाती है। फूल अवस्था में

कीटनाशकों का छिड़काव विशेष रूप से खतरनाक माना जाता है, क्योंकि इसी समय मधुमक्खियां सबसे अधिक सक्रिय रहती हैं। इसके अलावा मोनोक्रॉपिंग यानी लगातार एक ही फसल उगाने की प्रवृत्ति भी समस्या बढ़ा रही है। खेतों की मेड़ों और जंगली फूलदार पौधों के खत्म होने से मधुमक्खियों के प्राकृतिक भोजन स्रोत तेजी से घट रहे हैं।

समाधान क्या हो सकता है?

विशेषज्ञ अब “मधुमक्खी मित्र” और “मिट्टी मित्र” खेती मॉडल पर जोर दे रहे हैं। गोबर की सड़ी खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट और हरी खाद के प्रयोग से मिट्टी में जैविक पदार्थ बढ़ाए जा सकते हैं। इससे केंचुओं और लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ने में मदद मिलती है। फूल आने के समय जहरीले कीटनाशकों के छिड़काव से बचने की सलाह दी जा रही है। यदि छिड़काव जरूरी हो, तो शाम के बाद कम विषैले चयनात्मक कीटनाशकों का उपयोग बेहतर माना जाता है। विशेषज्ञ खेतों की मेड़ों पर गेंदा, तुलसी, सूरजमुखी और अन्य फूलदार पौधे लगाने की भी सलाह देते हैं, ताकि मधुमक्खियों के लिए भोजन स्रोत बने रहें। इसके साथ ही पराली या फसल अवशेष जलाने से बचना और नियमित मिट्टी परीक्षण कराना भी जरूरी माना जा रहा है।

खेती का भविष्य केवल उत्पादन नहीं

कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले समय में केवल अधिक उत्पादन ही खेती की सफलता का पैमाना नहीं होगा। वास्तविक चुनौती ऐसी खेती विकसित करने की होगी जो मिट्टी, पानी, जैव विविधता और पर्यावरण को भी सुरक्षित रख सके। क्योंकि यदि खेतों से केंचुए गायब हो रहे हैं और फूलों पर मधुमक्खियों की गूंज कम हो रही है, तो यह प्रकृति का साफ संकेत है कि खेती की वर्तमान दिशा में सुधार की जरूरत है। केंचुए और मधुमक्खियां केवल छोटे जीव नहीं हैं। वे कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की “जीवित धड़कन” हैं। इनके बिना स्वस्थ मिट्टी, टिकाऊ खेती और सुरक्षित खाद्य प्रणाली की कल्पना मुश्किल है। आने वाले समय में वही खेती टिकाऊ साबित होगी, जिसमें केवल फसल नहीं, बल्कि मिट्टी, पानी, जैव विविधता और प्रकृति भी सुरक्षित रहे।





टिकाऊ खेती और भविष्य की खाद्य सुरक्षा दोनों खतरे में

“यदि केंचुए और मधुमक्खियां घटती रहें, तो टिकाऊ खेती और भविष्य की खाद्य सुरक्षा दोनों खतरे में पड़ जाएंगी।”

5. किसान क्या करें? - व्यावहारिक समाधान **जैविक पदार्थ बढ़ाएं:** गोबर खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट और हरी खाद का प्रयोग करें। फूल अवस्था में कीटनाशकों से बचें: फूल आने के समय छिड़काव न करें। जरूरत हो

तो शाम के बाद कम विषैले कीटनाशकों का उपयोग करें।

मधुमक्खी मित्र खेती अपनाएं: खेतों की मेड़ों पर गेंदा, तुलसी, सुरजमुखी और सहजन जैसे फूलदार पौधे लगाएं।

फसल अवशेष न जलाएं: पराली या अवशेष जलाने से मिट्टी के लाभकारी जीव नष्ट हो जाते हैं।

मिट्टी परीक्षण कराएं: संतुलित पोषण से मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर रहता है।

प्राकृतिक खेती तत्वों को शामिल करें:

जीवामृत, घनजीवामृत, मल्लिङ्ग और जैव उर्वरकों का उपयोग बढ़ाएं।

जीवित मिट्टी, जीवित पर्यावरण और जीवित **जैव विविधता** — यही टिकाऊ खेती की असली पहचान है!

केंचुआ और मधुमक्खियां बचेंगी, तभी खेती बचेगी!

केंचुआ और मधुमक्खियां बचेंगी, तभी खेती बचेगी!

केंचुआ (Kenchua) - मिट्टी का स्वास्थ्य



अत्यधिक कीटनाशक



मोनोकॉपिंग और फूलों की कमी



जलवायु परिवर्तन



मिट्टी में जैविक कार्बन की कमी



माइक्रोप्लास्टिक और प्रदूषण

सबसे पहले प्रभावित

मिट्टी की संरचना बिगड़ती है

जल धारण क्षमता घटती है

जड़ों की वृद्धि कमजोर होती है

मिट्टी की जैविक सक्रियता कम होती है

मिट्टी और परागण तंत्र का संतुलन बिगड़ता है

मिट्टी और परागण तंत्र का संतुलन बिगड़ता है

मिट्टी और परागण तंत्र का संतुलन बिगड़ता है

मिट्टी और परागण तंत्र का संतुलन बिगड़ता है

मिट्टी और परागण तंत्र का संतुलन बिगड़ता है

मधुमक्खी (Madhumakhi) - परागणकर्ता



सबसे पहले प्रभावित

परागण घटता है

फल सेटिंग कम होती है

उत्पादन और गुणवत्ता प्रभावित होती है

खेती पर असर



अधिक उर्वरक की जरूरत



अधिक सिंचाई की आवश्यकता



कम उत्पादन



छोटे आकार के फल



स्वाद और गुणवत्ता में गिरावट

भविष्य का खतरा



खाद्य सुरक्षा संकट



मिट्टी की जैविक मृत्यु



जैव विविधता में गिरावट



खेती की बढ़ती लागत



हरित क्रांति ने पंजाब को देश का अन्न भंडार बनाया, लेकिन इसी दौर में सिंचाई का मॉडल नहरों से गहरे ग्राउंडवॉटर पर शिफ्ट हो गया। अब दुनिया के कई देश सिंचाई के पानी में ऑक्सीजन बढ़ाने पर रिसर्च कर रहे हैं, जबकि पंजाब ने दशकों तक ऑक्सीजन की कमी वाला ग्राउंडवॉटर खेतों में डाला। क्या मिट्टी की गिरती जैविक क्षमता के पीछे यही अनदेखा फैक्टर हो सकता है?

पंजाब का 'ऑक्सीजन कर्ज़'

क्या हरित क्रांति ने मिट्टी की जैविक सांसें कमजोर कर दीं?

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

पंजाब के गांवों में बूढ़े किसान आज भी एक बात दोहराते हैं—“पहले ज़मीन जिंदा थी।” उन्हें वह दौर याद है जब कुछ फीट नीचे ही पानी मिल जाता था। छोटी मोटरों से सिंचाई हो जाती थी। कम खाद में भी गेहूं और धान बेहतर उगते थे। बारिश के बाद खेतों में केंचुए दिखाई देते थे और मिट्टी लंबे समय तक नरम बनी रहती थी। आज तस्वीर बदल चुकी है। कई जिलों में पानी सैकड़ों फीट नीचे पहुंच चुका है। बड़े बोरवेल और भारी मोटरें अब खेती की मजबूरी बन गए हैं। बिजली की खपत बढ़ गई है। खाद और कीटनाशकों का इस्तेमाल कई गुना बढ़ चुका है। किसान बताते हैं कि जो मिट्टी कभी कम इनपुट में भरपूर उत्पादन देती थी, अब वही लगातार केमिकल सपोर्ट पर निर्भर होती जा रही है। पंजाब के खेती संकट पर दशकों से बहस होती रही है। किसी ने मुफ्त बिजली को जिम्मेदार बताया, किसी ने धान-गेहूं के मोनोकल्चर को। पर्यावरण विशेषज्ञों ने पराली, पेस्टीसाइड और रासायनिक खादों के अत्यधिक इस्तेमाल को दोषी ठहराया। अर्थशास्त्रियों ने सब्सिडी के स्ट्रक्चर और मार्केट इंसेंटिव्स की आलोचना की। ग्राउंडवॉटर के गिरते स्तर और प्रदूषण पर भी लगातार रिपोर्टें आती रहीं। ये सभी वजहें महत्वपूर्ण हैं। लेकिन इस पूरी बहस में एक सवाल लगभग गायब रहा - सिंचाई के पानी की बायोलॉजिकल हालत का क्या हुआ?

दुनिया के कई देश अब सिंचाई के पानी को केवल “पानी” नहीं मानते

पानी सिर्फ नमी नहीं, एक बायोलॉजिकल फैक्टर भी दुनिया के कई देश अब सिंचाई के पानी को केवल “पानी” नहीं मानते। वे यह भी देख रहे हैं कि उस पानी में घुली ऑक्सीजन कितनी है और उसका मिट्टी पर क्या असर पड़ता है। जापान, चीन, साउथ कोरिया, इजराइल और यूरोप के कुछ हिस्सों में वैज्ञानिक यह अध्ययन कर रहे हैं कि सिंचाई के पानी में घुली हुई ऑक्सीजन मिट्टी की फर्टिलिटी, जड़ों की सांस, माइक्रोबियल एक्टिविटी और ग्राउंडवॉटर रिचार्ज को कैसे प्रभावित करती है।

ऑक्सीजेनेटेड इरिगेशन, एरेटेड ड्रिप सिस्टम और नैनोबबल टेक्नोलॉजी जैसी तकनीकों पर तेजी से रिसर्च हो रही है। कई देशों में इन्हें ग्रीनहाउस फार्मिंग, बागवानी और क्लाइमेट-रेजिलिएंट एग्रीकल्चर में टेस्ट किया जा रहा है। प्रिसिजन एग्रीकल्चर में इन्वेस्ट करने वाले देश अब सिंचाई के पानी को सिर्फ नमी और न्यूट्रिएंट्स का माध्यम नहीं मान रहे। वे इसकी बायोलॉजिकल क्वालिटी पर भी ध्यान दे रहे हैं। इसी इंटरनेशनल कॉन्टेक्ट में पंजाब की कहानी अलग दिखाई देती है।



हरित क्रांति और एक अदृश्य बदलाव

1960 और 1970 के दशक में हरित क्रांति ने पंजाब की खेती को पूरी तरह बदल दिया। गेहूं और धान का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचा। पंजाब देश के फूड प्रोव्हायरमेंट सिस्टम की रीढ़ बन गया। लेकिन इसी दौर में एक और बदलाव भी हुआ - नहर आधारित सिंचाई की जगह धीरे-धीरे ट्यूबवेल और गहरे ग्राउंडवॉटर ने ले ली। नदियों और नहरों का सतही पानी वातावरण के संपर्क में रहता है, इसलिए

उसमें नैचुरली घुली हुई ऑक्सीजन होती है। इसके विपरीत, लंबे समय तक जमीन के नीचे बंद रहने वाले गहरे ग्राउंडवॉटर में ऑक्सीजन का स्तर बहुत कम हो सकता है। हाइड्रोजियोलॉजिस्ट वर्षों से इस अंतर को जानते हैं। कई एक्वीफर्स में घुली हुई ऑक्सीजन का स्तर 1 मिलीग्राम प्रति लीटर से भी नीचे पहुंच जाता है। कुछ जगहों पर यह लगभग जीरो कंडीशन तक चला जाता है।



बढ़ती खाद, घटती प्रतिक्रिया

हरित क्रांति के शुरुआती वर्षों में उत्पादन तेजी से बढ़ा। लेकिन समय के साथ फर्टिलाइजर पर निर्भरता भी लगातार बढ़ती गई। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक पंजाब में रासायनिक उर्वरकों की खपत 1970-71 में लगभग 2.13 लाख मीट्रिक टन थी, जो 2015-16 तक बढ़कर 20 लाख मीट्रिक टन से अधिक हो गई। उच्च उत्पादकता वाली खेती में अतिरिक्त पोषण की जरूरत होना स्वाभाविक है। लेकिन सवाल यह है कि दशकों बाद भी फर्टिलाइजर की मात्रा लगातार क्यों बढ़ती रही? कई किसान बताते हैं कि जो खाद पहले एक बार डालने से असर करती थी, अब वही पूरे सीजन में कई बार डालनी पड़ती है। मिट्टी की प्रतिक्रिया कमजोर हुई तो किसानों ने और केमिकल सपोर्ट जोड़ दिया। पैदावार बनाए रखने का दबाव बढ़ा तो इनपुट लागत और ऊपर चली गई। यहीं से बहस केवल केमिकल नहीं, बल्कि मिट्टी की बायोलॉजिकल गिरावट की ओर भी जाती है।

मिट्टी एक जीवित सिस्टम है

मिट्टी केवल धूल, रेत और खनिजों का मिश्रण नहीं है। यह एक जीवित बायोलॉजिकल सिस्टम है। स्वस्थ मिट्टी में अरबों माइक्रोऑर्गेनिज्म, फंगस, केंचुए और एरोबिक बैक्टीरिया लगातार सक्रिय रहते हैं। यही जीव जड़ों के आसपास ऑर्गेनिक मैटर को तोड़ते हैं और न्यूट्रिएंट साइकलिंग को बनाए रखते हैं। ये सभी प्रक्रियाएं ऑक्सीजन पर निर्भर करती हैं।



दुनिया ऑक्सीजन वापस ला रही है

चीन इस क्षेत्र में सबसे एक्टिव देशों में शामिल है। वहां की एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज़ कपास, मक्का, गेहूं और ग्रीनहाउस खेती में ऑक्सीजनेटेड सिंचाई पर रिसर्च कर रही हैं। कई स्टडीज़ में बेहतर जड़ विकास, माइक्रोबियल एक्टिविटी और पानी के अधिक कुशल उपयोग की जानकारी दी गई है। जापान फाइन-बबल और नैनोबबल टेक्नोलॉजी पर काम कर रहा है, जिसका उद्देश्य जड़ों के आसपास ऑक्सीजन की

उपलब्धता बढ़ाना है। साउथ कोरिया के स्मार्ट फार्मिंग मॉडल में अब pH, तापमान और न्यूट्रिएंट्स के साथ-साथ घुली हुई ऑक्सीजन भी मॉनिटर की जा रही है। इजराइल और यूरोप के कुछ हिस्सों में भी क्लाइमेट-रेजिलिएंट खेती के तहत ऑक्सीजन मैनेजमेंट पर रिसर्च हो रही है। यानी दुनिया की एडवांस्ड एग्रीकल्चर सिस्टम्स अब सिंचाई के बायोलॉजिकल डायमेंशन को गंभीरता से लेने लगी हैं।

पंजाब का अनदेखा ब्लाइंड स्पॉट : इसी संदर्भ में पंजाब का मॉडल अब एक बायोलॉजिकल ब्लाइंड स्पॉट जैसा दिखाई देता है। दशकों तक गहरे ग्राउंडवॉटर के इस्तेमाल के बावजूद सिंचाई के पानी में ऑक्सीजन स्तर पर लगभग कोई मेनस्ट्रीम स्टडी नहीं हुई। कृषि नीति मुख्यतः उत्पादन, जल दोहन और केमिकल इनपुट पर केंद्रित रही। इस दौरान भूजल स्तर लगातार गिरा, मिट्टी का ऑर्गेनिक कार्बन घटा, पानी सोखने की क्षमता कम हुई, सिंचाई की लागत बढ़ी और मिट्टी की जैविक सक्रियता कमजोर पड़ी। कई किसान खुले तौर पर कहते हैं कि मिट्टी पहले जैसी "सांस" नहीं लेती।

इंटरनेशनल मिट्टी रिसर्च लगातार दिखा रही है कि लंबे समय तक कम ऑक्सीजन वाली परिस्थितियां

- ▶ माइक्रोबियल एक्टिविटी घटाती हैं
 - ▶ जड़ों की सांस लेने की क्षमता कम करती हैं
 - ▶ मिट्टी के ढांचे को कमजोर करती हैं
 - ▶ पानी के अवशोषण को कम करती हैं
 - ▶ मिट्टी को सख्त और दबा हुआ बना सकती हैं
- हेल्दी मिट्टी स्पंज की तरह काम करती है। वह बारिश और सिंचाई के पानी को अंदर खींचती है। लेकिन जब मिट्टी की बायोलॉजिकल एक्टिविटी कमजोर पड़ती है तो पानी का बड़ा हिस्सा रनऑफ बनकर बह जाता है। यानी ग्राउंडवॉटर रिचार्ज भी सिर्फ बारिश पर नहीं, बल्कि मिट्टी की जैविक क्षमता पर निर्भर करता है।

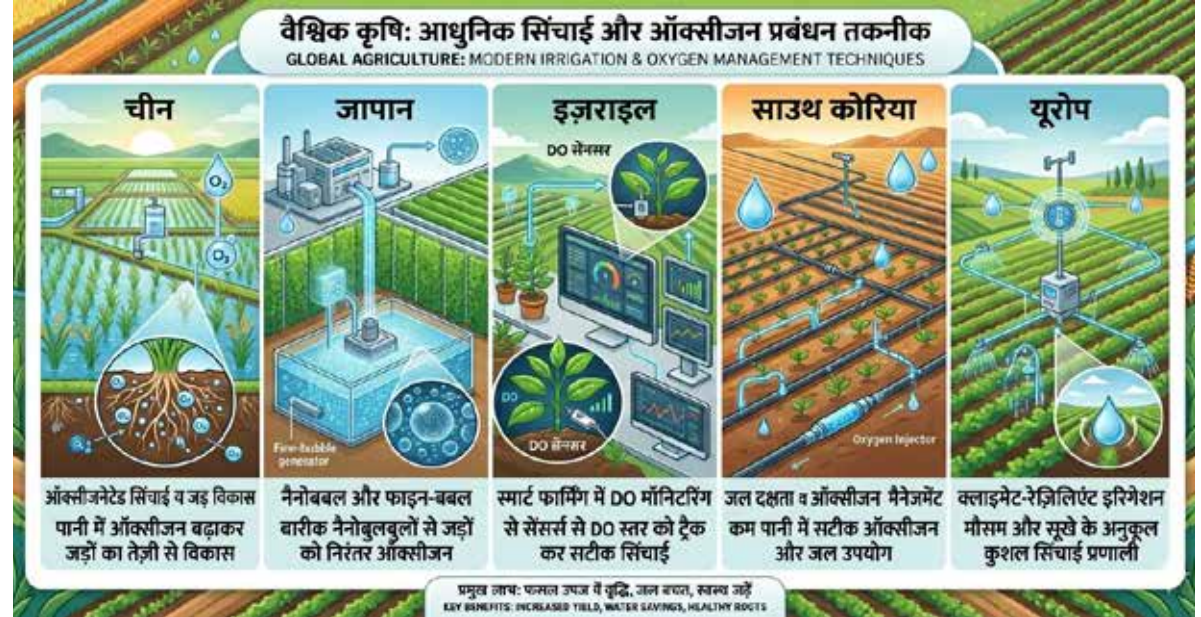
कैंसर बेल्ट और कंटैमिनेशन की चिंता

पंजाब के कई इलाकों में ग्राउंडवॉटर कंटैमिनेशन को लेकर चिंताएं भी बढ़ीं। सरकारी रिपोर्टों में नाइट्रेट, फ्लोराइड, यूरेनियम और कुछ हेवी मेटल्स के संकेत सामने आए। मालवा क्षेत्र का तथाकथित “कैंसर बेल्ट” लंबे समय से बहस का विषय रहा है। कई स्टडीज में पेस्टीसाइड्स, इंडस्ट्रियल पॉल्यूशन और कृषि रसायनों की भूमिका की जांच की गई। हालांकि यहां वैज्ञानिक सावधानी जरूरी है। अब तक कोई निर्णायक पीयर-रिव्यूड स्टडी यह साबित नहीं करती कि पंजाब के कृषि संकट का मुख्य कारण केवल घुली हुई ऑक्सीजन की कमी है। मिट्टी की गिरावट और स्वास्थ्य संकटों के पीछे कई फैक्टर्स एक साथ काम करते हैं। लेकिन बड़ा सवाल अब भी बना हुआ है- इतने बड़े कृषि बदलाव के बावजूद सिंचाई के पानी की बायोलॉजिकल क्वालिटी पर गंभीर रिसर्च क्यों नहीं हुई?

भारत अब धीरे-धीरे इस दिशा में बढ़ रहा है

भारत ने हाल के वर्षों में इस दिशा में शुरुआती कदम उठाने शुरू किए हैं। इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट ने नैनोबबल इरिगेशन सिस्टम का मूल्यांकन किया है। कुछ पायलट प्रोजेक्ट महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में भी चल रहे हैं, खासकर बागवानी और सुरक्षित खेती के क्षेत्र में।

लेकिन अभी भी घुली हुई ऑक्सीजन भारतीय सिंचाई मॉनिटरिंग का नियमित हिस्सा नहीं बनी है। यानी दुनिया जहां सिंचाई के पानी में ऑक्सीजन “वापस डालने” की कोशिश कर रही है, वहीं भारत के बड़े कृषि क्षेत्र अभी भी मुख्यतः पानी की मात्रा और केमिकल क्वालिटी तक सीमित हैं।



भविष्य की खेती का बड़ा सवाल

अगर भविष्य की रिसर्च यह साबित करती है कि ऑक्सीजन-रहित सिंचाई मिट्टी की जैविक सक्रियता और ग्राउंडवॉटर रिचार्ज को प्रभावित करती है, तो मॉडर्न एग्रीकल्चर को हरित क्रांति के कई मूल सिद्धांतों पर दोबारा विचार करना पड़ सकता है। क्योंकि खेती केवल केमिकल और उत्पादन का गणित नहीं है। मिट्टी सबसे पहले एक जीवित सिस्टम है। और शायद पंजाब का सबसे बड़ा सवाल यह नहीं कि खेतों में कितना पानी गया - बल्कि यह कि खेतों तक पहुंचने वाला पानी “कैसा” था।

पंजाब संकट के प्रमुख संकेत



कुलमिलाकर, पंजाब ने पचास वर्षों तक यह मापा कि जमीन के नीचे कितना पानी बचा है। लेकिन शायद बहुत कम लोगों ने यह पूछा कि उस पानी में “जीवन” कितना बचा है।



पॉली बैग में नींबू की पूरी दुनिया

अब खेती होगी 'पोर्टेबल'

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

एक समय था जब नींबू की खेती का मतलब बड़े खेत, स्थायी बाग और लंबा इंतजार माना जाता था। लेकिन अब खेती की दुनिया तेजी से बदल रही है। बदलते मौसम, घटती कृषि भूमि और शहरों की बढ़ती आबादी ने खेती को नए रास्ते तलाशने पर मजबूर कर दिया है। इसी बदलाव के बीच एक नई तकनीक तेजी से चर्चा में है - पॉली बैग में नींबू की खेती। सुनने में यह एक छोटा प्रयोग लग सकता है, लेकिन कृषि विशेषज्ञ इसे आने वाले समय की "पोर्टेबल फार्मिंग" का हिस्सा मान रहे हैं। यानी ऐसी खेती जिसे जरूरत के हिसाब से कहीं भी शिफ्ट किया जा सके। अब छतों, बालकनियों, छोटे प्लॉट्स और यहां तक कि सीमित जगह वाले गांवों में भी नींबू के पौधे व्यावसायिक स्तर पर उगाए जा रहे हैं। खास बात यह है कि यह तकनीक सिर्फ शौकिया गार्डनिंग तक सीमित नहीं रही, बल्कि कम लागत में नियमित आय का जरिया भी बनती जा रही है।

क्यों बदल रही है खेती की तस्वीर?

भारत में खेती अब केवल "ज्यादा जमीन" का खेल नहीं रही। आज सबसे बड़ा सवाल है - कम जगह में ज्यादा उत्पादन कैसे लिया जाए। जलवायु परिवर्तन ने इस चुनौती को और गंभीर बना दिया है। कभी अचानक तेज गर्मी, कभी अनियमित बारिश और कभी ओलावृष्टि - पारंपरिक बागवानी को लगातार जोखिम में डाल रहे हैं।

ऐसे में पॉली बैग तकनीक किसानों को एक तरह का "कंट्रोल्ड माइक्रो-एनवायरमेंट" देती है। पौधे को नियंत्रित माध्यम, सीमित पानी और संतुलित पोषण के साथ विकसित किया जाता है। यही वजह है कि 2024-26 के दौरान इस मॉडल में किसानों और शहरी बागवानों की रुचि तेजी से बढ़ी है।



नींबू क्यों बन रहा है 'स्मार्ट क्रॉप'?

एसिड लाइम यानी नींबू अब केवल रसोई तक सीमित फल नहीं रहा। कोविड-19 के बाद इसकी मांग में तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई। विटामिन-C और इम्युनिटी से जुड़ी जागरूकता बढ़ने के बाद घरेलू बाजार से लेकर होटल, जूस इंडस्ट्री और प्रोसेसिंग सेक्टर तक इसकी खपत बढ़ी है। आज नींबू का इस्तेमाल पेय उद्योग, होटल कारोबार, अचार और प्रोसेसिंग इंडस्ट्री से लेकर आयुर्वेदिक उत्पादों तक में हो रहा है। यही वजह है कि इसे ऐसी फसल माना जा रहा है जिसकी मांग लगभग पूरे साल बनी रहती है। छोटे किसान अब इसे "रेगुलर कैश फ्लो" वाली फसल के रूप में देखने लगे हैं।

पॉली बैग तकनीक आखिर है क्या?

सरल भाषा में समझें तो यह "कंटेनर बेस्ड फ्रूट फार्मिंग" है। इसमें नींबू के पौधों को बड़े पॉली बैग में तैयार विशेष माध्यम में लगाया जाता है। इन बैग्स को जरूरत के अनुसार छत, आंगन, नेट हाउस या खुले स्थान पर रखा जा सकता है। यह मॉडल खासकर उन लोगों के लिए उपयोगी माना जा रहा है जिनके पास सीमित जमीन है या जो कम लागत में हाई-वैल्यू खेती शुरू करना चाहते हैं। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी इसे तेजी से अपना रहे हैं, क्योंकि इसमें कम जगह में बेहतर प्रबंधन संभव है।



खेती जो 'चल' भी सकती है

इस तकनीक की सबसे बड़ी खासियत है - पौधों की गतिशीलता। पारंपरिक खेती में एक बार पौधा लग गया तो मौसम की मार झेलना उसकी मजबूरी होती है। लेकिन पॉली बैग तकनीक में तेज गर्मी, भारी बारिश या ओलावृष्टि की स्थिति में पौधों को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट किया जा सकता है। यही वजह है कि कई कृषि विशेषज्ञ इसे "पोर्टेबल एग्रीकल्चर" का शुरुआती मॉडल मान रहे हैं।

रोग नियंत्रण में भी आसान

नींबू की खेती में मिट्टी जनित रोग बड़ी समस्या माने जाते हैं। फाइटोफ्थोरा, जड़ गलन और नेमाटोड जैसी समस्याएं पारंपरिक बागों में नुकसान पहुंचाती हैं। लेकिन पॉली बैग तकनीक में नियंत्रित माध्यम और बेहतर जल निकासी के कारण इन रोगों का खतरा अपेक्षाकृत कम हो जाता है। विशेषज्ञ अब ट्राइकोडर्मा और स्यूडोमोनास जैसे जैविक एजेंट्स के इस्तेमाल पर भी जोर दे रहे हैं, जिससे रासायनिक दवाओं पर निर्भरता कम की जा सके।

कम जगह, ज्यादा पौधे

पारंपरिक बागवानी में पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखनी पड़ती है। लेकिन पॉली बैग तकनीक में स्पेस मैनेजमेंट ज्यादा प्रभावी हो जाता है। छोटे प्लॉट, छत या आंगन में भी बड़ी संख्या में पौधे लगाए जा सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में जहां जमीन महंगी और सीमित है, वहां यह मॉडल खास महत्व रखता है।

सही किस्म चुनना सबसे जरूरी

कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक पॉली बैग खेती में सही वैरायटी का चयन बेहद महत्वपूर्ण है। उत्तर भारत के लिए कागजी नींबू, बालाजी नींबू और विक्रम नींबू जैसी किस्में बेहतर मानी जा रही हैं। इनकी खासियत यह है कि ये मध्यम आकार की होती हैं, जल्दी फल देना शुरू करती हैं और रोगों के प्रति अपेक्षाकृत सहनशील मानी जाती हैं। विशेषज्ञ प्रमाणित नर्सरी से ही पौधे खरीदने की सलाह देते हैं, क्योंकि खराब पौधा पूरी यूनिट को प्रभावित कर सकता है।



पॉली बैग की तैयारी भी विज्ञान है

यह केवल पौधा बैग में लगाने भर की प्रक्रिया नहीं है। सही माध्यम तैयार करना सफलता की कुंजी माना जाता है। आमतौर पर 40 से 60 लीटर क्षमता वाले पॉली बैग उपयोग किए जाते हैं और नीचे जल निकासी के लिए 6-8 छेद जरूरी माने जाते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक उपजाऊ दोमट मिट्टी, अच्छी सड़ी गोबर खाद और वर्मिकम्पोस्ट या कोकोपीट का संतुलित मिश्रण सबसे बेहतर परिणाम देता है। अब 2026 में कई विशेषज्ञ बायोचार और प्लाईट मिलाने की भी सलाह दे रहे हैं, जिससे जल धारण क्षमता और जड़ों की सक्रियता बेहतर होती है। ट्राइकोडर्मा जैसे जैविक तत्वों को माध्यम में मिलाने से फफूंद जनित रोगों की रोकथाम में भी मदद मिलती है।

पानी कम, लेकिन सही तरीके से पॉली बैग खेती का एक बड़ा फायदा यह भी है कि पानी की बर्बादी कम होती है। ड्रिप या माइक्रो-सिंचाई सिस्टम के जरिए पौधों को जरूरत के हिसाब से पानी दिया जा सकता है। गर्मियों में सप्ताह में 2-3 बार सिंचाई पर्याप्त मानी जाती है, जबकि सर्दियों में यह अंतराल बढ़ जाता है। हालांकि विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि जलजमाव सबसे बड़ा खतरा बन सकता है। अगर बैग में पानी रुक गया तो जड़ें तेजी से प्रभावित हो सकती हैं।



उत्पादन कितना मिल सकता है?

उचित प्रबंधन की स्थिति में एक पौधा सालाना 8 से 15 किलोग्राम तक उत्पादन दे सकता है। रोपण के लगभग 6-9 महीने बाद फल आना शुरू हो जाता है, जबकि 2-3 वर्षों में पौधे पूर्ण उत्पादन क्षमता तक पहुंच सकते हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि फल की तुड़ाई हल्के पीले रंग की अवस्था में करनी चाहिए और कैंची से सावधानीपूर्वक कटाई करनी चाहिए।

खेती का नया दर्शन

पॉली बैग में नींबू की खेती केवल तकनीक नहीं, बल्कि खेती के बदलते दर्शन का संकेत भी है। यह उस दौर की खेती है जहां जमीन कम है, मौसम अनिश्चित है, पानी सीमित है, लेकिन बाजार की मांग लगातार बनी हुई है। ऐसे समय में “मोबाइल”, “कंट्रोल्ड” और “हाई-वैल्यू” खेती मॉडल भविष्य की दिशा तय कर सकते हैं।

माइक्रो-न्यूट्रिएंट्स का नया ट्रेंड

2025-26 के दौरान माइक्रो-न्यूट्रिएंट स्प्रे का चलन तेजी से बढ़ा है। जिंक (Zn), बोरॉन (B) और आयरन (Fe) आधारित स्प्रे से फल सेट और गुणवत्ता में 15-20 प्रतिशत तक सुधार देखने की बात कई प्रायोगिक रिपोर्टों में सामने आई है। इसी तरह घुलनशील NPK उर्वरकों के फर्टिगेशन मॉडल को भी बेहतर परिणाम देने वाला माना जा रहा है।

शहरों में नया एग्री-बिजनेस मॉडल

दिलचस्प बात यह है कि पॉली बैग में नींबू की खेती अब केवल किसानों तक सीमित नहीं रही। कई शहरों में युवा इसे “अर्बन एग्री-बिजनेस” के रूप में अपना रहे हैं। कुछ लोग रूफटॉप फार्मिंग, ऑर्गेनिक होम डिलीवरी, फार्म-टू-होम मॉडल और ऑनलाइन प्लांट सेलिंग के जरिए इससे कमाई कर रहे हैं। नींबू की सालभर मांग होने के कारण छोटे स्तर पर भी यह मॉडल नियमित आय देने की क्षमता रखता है।



पॉली बैग खेती क्यों बन रही है लोकप्रिय?

कम जगह में अधिक पौधे लगाने की सुविधा, पौधों को जरूरत पड़ने पर शिफ्ट करने की क्षमता, पानी और खाद की बचत तथा रोग प्रबंधन में आसानी—ये सभी कारण पॉली बैग तकनीक को तेजी से लोकप्रिय बना रहे हैं। खास बात यह है कि इसे छत, आंगन और छोटे प्लॉट में भी अपनाया जा सकता है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि सफल खेती के लिए प्रमाणित नर्सरी से पौधे लेना, बेहतर जल निकासी रखना, माइक्रो-सिंचाई अपनाना और समय-समय पर छंटाई करना बेहद जरूरी है। जैविक एजेंट्स के उपयोग और जलजमाव से बचाव पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। खेती की दुनिया तेजी से बदल रही है। आने वाले समय में शायद खेती केवल खेतों तक सीमित नहीं रहेगी। और तब पॉली बैग में उगता एक छोटा-सा नींबू, भारत की “स्मार्ट एग्रीकल्चर” कहानी का बड़ा प्रतीक बन सकता है।

प्रो. (डॉ.) एस. के. सिंह, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। पौध रोग विज्ञान और मृदा सूक्ष्मजीविकी के क्षेत्र में उनका दीर्घ अनुभव रहा है, और वे जैव नियंत्रण तथा सतत कृषि के प्रमुख विशेषज्ञों में गिने जाते हैं।



कभी अपनी खुशबू, मिठास और स्वाद के लिए मशहूर रहे उत्तर भारत के आम और लीची अब जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे हैं। असामान्य वर्षा, हीटवेव, तेज आंधी और बढ़ती आर्द्रता ने न केवल उत्पादन घटाया है, बल्कि फलों की गुणवत्ता और बाजार मूल्य पर भी असर डालना शुरू कर दिया है।

बदलता मौसम

छीन रहा आम और लीची की मिठास

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

उत्तर भारत में गर्मियों का मौसम कभी आम और लीची की खुशबू से पहचाना जाता था। बिहार की शाही लीची और मालदा, लंगड़ा, दशहरी, जर्दालु और अम्रपाली जैसे आम केवल फल नहीं, बल्कि क्षेत्रीय पहचान का हिस्सा माने जाते रहे हैं। इनकी मिठास, सुगंध और स्वाद को स्थानीय जलवायु की सबसे बड़ी देन माना जाता था। लेकिन अब वही मौसम बदल रहा है। पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन ने उत्तर भारत की बागवानी व्यवस्था को गहराई से प्रभावित करना शुरू कर दिया है। अप्रैल और मई में बेमौसम वर्षा, लंबे हीटवेव, तेज आंधी, अत्यधिक आर्द्रता और अनियमित तापमान अब आम और लीची उत्पादन के पारंपरिक चक्र को बिगाड़ रहे हैं। इसका असर सिर्फ उत्पादन तक सीमित नहीं है। विशेषज्ञों का कहना है कि अब फलों की मिठास, रंग, आकार, सुगंध, भंडारण क्षमता और बाजार गुणवत्ता तक प्रभावित होने लगी है।

जुताई का विज्ञान : रोटोवेटर आखिर करता क्या है?

रोटोवेटर को समझने के लिए सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि 'ताकत' - यानी पावर - ट्रैक्टर से मिट्टी तक कैसे पहुँचती है। पारंपरिक हल के मामले में ट्रैक्टर केवल उसे ज़मीन पर घसीटता है। पूरी प्रक्रिया ट्रैक्टर की खींचने की ताकत (ट्रैक्शन) पर निर्भर होती है। लेकिन रोटोवेटर इस व्यवस्था को पूरी तरह बदल देता है। यह केवल घसीटा नहीं जाता, बल्कि ट्रैक्टर के इंजन की शक्ति का इस्तेमाल करते हुए मिट्टी को सक्रिय रूप से काटता, पलटता और तैयार करता है।



बढ़ रही हैं रोगों की समस्याएँ

बढ़ती आर्द्रता और असामान्य वर्षा ने रोगों का खतरा भी बढ़ा दिया है। आम में एन्थ्रेक्नोज, पाउडरी मिल्ड्यू, ब्लैक टिप और डंगल सड़न जैसी समस्याएँ तेजी से फैल रही हैं। इन रोगों के कारण फलों पर काले धब्बे बन जाते हैं, पकने की प्रक्रिया प्रभावित होती है और भंडारण क्षमता कम हो जाती है। निर्यात गुणवत्ता वाले फलों में भी अब रोगजनित समस्याएँ बढ़ने लगी हैं। इसका सीधा असर किसानों की आय और बाजार कीमतों पर पड़ रहा है।

बढ़ती आर्द्रता और असामान्य वर्षा ने रोगों का खतरा भी बढ़ा दिया है। आम में एन्थ्रेक्नोज, पाउडरी मिल्ड्यू, ब्लैक टिप और डंगल सड़न जैसी

आखिर स्वाद क्यों बदल रहा है?

किसी भी फल का स्वाद केवल उसकी किस्म पर निर्भर नहीं करता। तापमान, धूप, मिट्टी की नमी और पकने के दौरान मौसम की स्थिति भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। विशेषज्ञों के मुताबिक आम और लीची में प्राकृतिक मिठास विकसित होने के लिए पकने के अंतिम चरण में पर्याप्त धूप, संतुलित तापमान और नियंत्रित नमी जरूरी होती है। दिन और रात के तापमान में संतुलित अंतर भी शर्करा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन अब मौसम की अनिश्चितता इस पूरी प्रक्रिया को बाधित कर रही है।

अप्रैल-मई की बारिश ने बदला खेल

2026 में बिहार और उत्तर भारत के कई हिस्सों में अप्रैल और मई के दौरान सामान्य से अधिक वर्षा दर्ज की गई। यही वह समय होता है जब आम और लीची में मिठास बनने की प्रक्रिया सबसे तेज होती है। अत्यधिक वर्षा के कारण फलों में पानी की मात्रा बढ़ जाती है। इससे कुल घुलनशील ठोस पदार्थ (TSS) कम हो जाते हैं और शर्करा संचय प्रभावित होता है। नतीजा यह कि फल दिखने में ठीक लग सकते हैं, लेकिन स्वाद फीका पड़ जाता है। मालदा, लंगड़ा और शाही लीची जैसी किस्मों में इस वर्ष मिठास और सुगंध कम होने की शिकायतें कई क्षेत्रों से सामने आई हैं।

धूप कम हुई तो स्वाद भी बदल गया

फल पकने के दौरान पर्याप्त सूर्य प्रकाश बेहद जरूरी माना जाता है। लगातार बादल छाए रहने से प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित होती है। विशेषज्ञ बताते हैं कि इससे शर्करा निर्माण कम हो जाता है, रंग विकास कमजोर पड़ता है और गूदे की गुणवत्ता प्रभावित होती है। यही कारण है कि कई बार फल बाहर से आकर्षक दिखते हैं, लेकिन खाने पर अपेक्षित स्वाद नहीं मिलता।

आंधियों से टूट रहा उत्पादन चक्र

अप्रैल और मई की आंधियां पहले भी आती थीं, लेकिन अब उनकी तीव्रता और आवृत्ति दोनों बढ़ती दिखाई दे रही हैं। तेज हवाओं के कारण कच्चे फल समय से पहले गिर जाते हैं। कई बार शाखाएं तक टूट जाती हैं, जिससे पेड़ों पर अतिरिक्त तनाव बढ़ता है। फल गिरने से उत्पादन कम होता है और बचे हुए फलों का आकार भी छोटा रह जाता है। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई बागवानी क्षेत्रों में किसानों ने इस साल बड़े पैमाने पर “फ्रूट ड्रॉप” की शिकायत की है।



समय से पहले तुड़ाई भी बन रही समस्या

मौसम की अनिश्चितता और बाजार दबाव के कारण कई किसान अब फलों की समय पूर्व तुड़ाई करने लगे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अपरिपक्व अवस्था में तोड़े गए आमों में प्राकृतिक मिठास विकसित नहीं हो पाती। गूदा रेशेदार रह जाता है और सुगंध भी पूरी तरह नहीं बनती। इसी तरह समय से पहले तोड़ी गई लीची में उसकी प्राकृतिक लालिमा और स्वाद प्रभावित हो जाता है। यह प्रवृत्ति अल्पकालिक लाभ तो दे सकती है, लेकिन लंबे समय में क्षेत्रीय फलों की ब्रांड वैल्यू को नुकसान पहुंचा सकती है।

लीची सबसे ज्यादा संवेदनशील क्यों?

लीची को अत्यंत संवेदनशील फल फसल माना जाता है। तापमान और नमी में मामूली बदलाव भी इसकी गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक लंबे समय तक गर्मी रहने के बाद अचानक वर्षा होने पर लीची के फल तेजी से पानी अवशोषित करते हैं। इससे उनका छिलका फटने लगता है। इसे “फ्रूट क्रैकिंग” कहा जाता है। मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर और पूर्वी चंपारण जैसे क्षेत्रों में यह समस्या अब तेजी से बढ़ रही है।

सनबर्न और ब्राउनिंग का बढ़ता खतरा

अत्यधिक तापमान और लू के कारण लीची के फलों पर “सनबर्न” की समस्या भी बढ़ रही है। इस स्थिति में फल की बाहरी सतह झुलस जाती है और उसका लाल रंग धीरे-धीरे भूरा पड़ने लगता है। कटाई के बाद भी उच्च तापमान के कारण लीची तेजी से खराब होने लगती है। यानी मौसम का असर केवल खेत तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सप्लाइ चेन और बाजार तक पहुंचता है।



मधुमक्खियाँ भी हो रही हैं प्रभावित

जलवायु परिवर्तन केवल पौधों को ही नहीं, बल्कि परागण करने वाले कीटों को भी प्रभावित कर रहा है। अत्यधिक गर्मी और अनियमित मौसम के कारण मधुमक्खियों की सक्रियता कम हो रही है। इसका सीधा असर फल सेटिंग पर पड़ता है। कई बार फलों का आकार छोटा रह जाता है और कुल उत्पादन भी घट सकता है। विशेषज्ञ इसे भविष्य के लिए गंभीर चेतावनी मान रहे हैं, क्योंकि बागवानी की पूरी उत्पादकता परागण तंत्र पर काफी हद तक निर्भर करती है।

वैज्ञानिक तुड़ाई क्यों जरूरी है?

विशेषज्ञों का कहना है कि उचित परिपक्वता स्तर पर तुड़ाई करने से स्वाद और गुणवत्ता को काफी हद तक बचाया जा सकता है। जल्दबाजी में की गई तुड़ाई किसानों को तत्काल बाजार लाभ तो दे सकती है, लेकिन इससे उपभोक्ताओं का भरोसा कमजोर पड़ता है। लंबे समय में यह पूरे क्षेत्र की फल पहचान और ब्रांड वैल्यू को प्रभावित कर सकता है। उत्तर भारत की बागवानी अब केवल उत्पादन की चुनौती नहीं झेल रही, बल्कि अपनी पहचान बचाने की लड़ाई भी लड़ रही है। कभी जिन आमों और लीचियों की मिठास मौसम की पहचान मानी जाती थी, आज वही मौसम उनके स्वाद को बदल रहा है। अगर समय रहते जलवायु-स्मार्ट तकनीकों, वैज्ञानिक बागवानी प्रबंधन और मौसम आधारित कृषि रणनीतियों को नहीं अपनाया गया, तो आने वाले वर्षों में उत्तर भारत के प्रसिद्ध फलों की पारंपरिक खुशबू और स्वाद केवल यादों में सिमट सकते हैं।

क्या “सुरक्षित मौसम” अब अतीत बन रहा है?

अब कम दिनों में भारी वर्षा, लंबे सूखे अंतराल, अचानक आंधी और तेज वज्रपात जैसी घटनाएं सामान्य होती जा रही हैं। इससे बागवानी का वह “स्थिर मौसम मॉडल” कमजोर पड़ रहा है, जिस पर दशकों से आम और लीची की खेती आधारित थी। विशेषज्ञों के मुताबिक अगर यही स्थिति जारी रही, तो भविष्य में उत्पादन के साथ-साथ स्वाद और गुणवत्ता की क्षेत्रीय पहचान भी प्रभावित हो सकती है।



अब रास्ता क्या है?

विशेषज्ञ अब “क्लाइमेट-स्मार्ट हॉर्टिकल्चर” पर जोर दे रहे हैं। इसके तहत विंडब्रेक पौधों का रोपण, ड्रिप सिंचाई, मल्टिप्लिंग, मौसम आधारित स्प्रे प्रबंधन और संतुलित पोषण जैसी तकनीकों को अपनाने की सलाह दी जा रही है। कैल्शियम और सूक्ष्म पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग से फलों की गुणवत्ता बनाए रखने में मदद मिल सकती है। इसके साथ ही फसल बीमा और मौसम आधारित कृषि सलाह को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

कांटों में छिपी
रफ्तार

जिसे दुनिया ने धीमा समझा

रेगिस्तान में खड़ा कैक्टस हमेशा धैर्य, ठहराव और धीमे जीवन का प्रतीक माना गया। लेकिन नए वैज्ञानिक शोध ने इस छवि को उलट दिया है। शोधकर्ताओं के अनुसार कैक्टस नई प्रजातियां बनाने और खुद को बदलने की क्षमता में बेहद तेज़ है। यह खोज केवल वनस्पति विज्ञान की नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के दौर में जीवन की नई रणनीतियों को समझने की कहानी भी है।

वह विकास की दौड़ में निकला सबसे तेज़ पौधों में से एक

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

फूलों में छिपा विकास का रहस्य

दोपहर की झुलसाती धूप में रेगिस्तान लगभग स्थिर दिखाई देता है। दूर तक फैली रेत के बीच एक कैक्टस खड़ा है—न हिलता, न बदलता, न कहीं जाता हुआ। मानो समय ने उसे वहीं रोक दिया हो। लेकिन विज्ञान अब कह रहा है कि यह दृश्य धोखा है। जिस कैक्टस को दुनिया ने “धीमा पौधा” मान लिया था, वह असल में विकास यानी evolution की दुनिया का तेज़ खिलाड़ी है। ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग समेत कई संस्थानों के वैज्ञानिकों ने पाया है कि कैक्टस प्रजातियां आश्चर्यजनक गति से विकसित होती हैं और नई प्रजातियां बनाने की क्षमता रखती हैं। यह अध्ययन प्रतिष्ठित जर्नल Biology Letters में प्रकाशित हुआ है और इसने विकासवाद से जुड़ी एक पुरानी धारणा को चुनौती दी है कि जो जीव धीरे बढ़ते हैं, वे धीरे विकसित भी होते हैं।

वैज्ञानिकों ने 750 से अधिक कैक्टस प्रजातियों और 107 वंशों का विश्लेषण किया। उनका मकसद यह समझना था कि आखिर कैक्टस परिवार में इतनी विविधता क्यों दिखाई देती है। शोध में एक दिलचस्प पैटर्न सामने आया। वैज्ञानिकों ने पाया कि जिन कैक्टस प्रजातियों के फूल तेजी से बदल रहे थे, उनमें नई प्रजातियां बनने की रफ्तार भी अधिक थी। यानी विकास की असली ताकत किसी “परफेक्ट आकार” में नहीं, बल्कि तेजी से बदलने की क्षमता में छिपी है। यह निष्कर्ष इसलिए अहम है क्योंकि लंबे समय तक जीवविज्ञान में यह माना जाता रहा कि रेगिस्तान जैसी कठोर जगहों पर रहने वाले जीव अपेक्षाकृत स्थिर होते हैं। कैक्टस इस सोच को उलट देता है।



रेगिस्तान: ठहराव नहीं, प्रयोगशाला

रेगिस्तान बाहर से शांत दिख सकता है, लेकिन वहां जीवन लगातार दबाव में रहता है। कभी बारिश का पैटर्न बदलता है, कभी तापमान, कभी परागण करने वाले जीव। ऐसे माहौल में जीवित वही रह पाता है जो तेजी से खुद को ढाल सके। कैक्टस ने करोड़ों वर्षों में यही कला विकसित की। उसकी पत्तियां कांटों में बदल गईं ताकि पानी कम खर्च हो। तना ही प्रकाश संश्लेषण करने लगा। कई

प्रजातियां रात में गैसों का आदान-प्रदान करती हैं ताकि नमी बचाई जा सके। लेकिन असली खेल उसके फूलों में चल रहा था। वैज्ञानिकों का मानना है कि फूलों के आकार, रंग और संरचना में तेजी से हुए बदलावों ने अलग-अलग परागणकर्ताओं—जैसे चमगादड़ों, पतंगों, मधुमक्खियों और पक्षियों—को आकर्षित किया। यही बदलाव धीरे-धीरे नई प्रजातियों के जन्म का कारण बने।

“धीमा दिखना” और “धीमा होना” अलग बातें हैं

कैक्टस की सबसे दिलचस्प बात यही है कि उसका बाहरी व्यक्तित्व और उसकी जैविक गति एक-दूसरे के विपरीत हैं। ऊपर से वह स्थिर दिखता है, लेकिन भीतर उसके जीन और प्रजनन रणनीतियां लगातार बदलती रहती हैं। यानी प्रकृति में वास्तविक गति हमेशा दिखाई नहीं देती। यह विचार आज के दौर में और भी प्रासंगिक लगता है। जलवायु संकट, बदलती पारिस्थितिकी और अस्थिर मौसम के बीच वही प्रजातियां टिक पाएंगी जो तेजी से अनुकूलन कर सकेंगी।

भविष्य का पौधा? धरती गर्म हो रही है। सूखे बढ़ रहे हैं। कई इलाकों में खेती कठिन होती जा रही है। ऐसे समय में वैज्ञानिक उन पौधों को समझने की कोशिश कर रहे हैं जो बेहद कम पानी और चरम तापमान में भी जीवित रह सकते हैं। कैक्टस इस भविष्य की झलक देता है। उसकी जल-संरक्षण क्षमता और तेजी से अनुकूलन करने की जैविक क्षमता आने वाले समय में कृषि विज्ञान और जैव विविधता संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। संभव है कि भविष्य की सूखा-रोधी फसलों के विकास में भी कैक्टस से मिली समझ काम आए।



कैक्टस कैसे बना

Evolution का 'स्पीडस्टर'

जिसे दुनिया ने धीमा समझा, वह नई प्रजातियां बनाने में है बेहद तेज़

नए शोध (Journal: Biology Letters) के अनुसार कैक्टस के फूलों में तेज़ बदलाव नई प्रजातियों के जन्म की रफ्तार को बढ़ाते हैं।

- 1** रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियां कम पानी, तेज़ धूप, बड़ी तापमान भिन्नता और सूखी हवाएँ—जीवन के लिए बड़ी चुनौती।
- 2** पानी बचाने के लिए अद्भुत बदलाव पत्तियाँ → काँटे, मोटा, सट्टर तना रात में गैस विनिमय (CAM) मोन जैसी सतह, पानी की बचत
- 3** फूलों में तेज़ और विविध बदलाव रंग, आकार, आकारिकी, आकार और खुलने का समय तेज़ी से बदलता है।
- 4** नए परागणकर्ता आकर्षित होते गए हर परागणकर्ता अलग प्रकार के फूलों को पसंद करता है इससे प्रजातियों के बीच अलगाव बढ़ता है
- 5** नई प्रजातियाँ तेज़ी से बनती हैं अलग-अलग क्षेत्रों में अलग फूल, अलग विशेषताएँ, अलग प्रजातियाँ।

कैक्टस के बारे में 7 दिलचस्प तथ्य

- दुनिया में 1,500+ प्रजातियाँ
- ज्यादातर प्रजातियाँ अमेरिका महाद्वीप में
- कान्ठे असल में बदली हुई पत्तियाँ हैं
- कुछ कैक्टस 200 साल तक जीवित रह सकते हैं
- कई प्रजातियाँ रात में 'सोने' लगती हैं
- धमनादक भी इनके परागणकर्ता हैं
- फूलों में तेज़ बदलाव नई प्रजातियों की रफ्तार बढ़ाते हैं

कैक्टस बनाम आम पौधे

विशेषता	आम पौधे	कैक्टस
पत्तियाँ	बड़ी	कान्ठे/बहुत छोटी
पानी की जरूरत	ज्यादा	बहुत कम
रंग विविधता	रंग में अधिकता	अधिकतर लाल में
जीवन लंबाई	कम	सालों तक
जीवन शैली	मिठा	तेज़ अनुकूलन
पुष्प	सजावटी	मूल्यवर्धक

भविष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण?

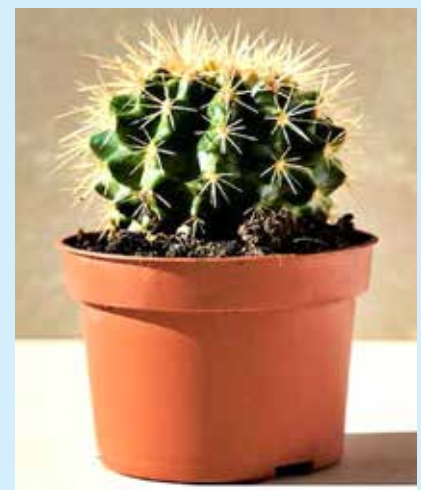
- सूखा-रोधी फसलों की खोज में मदद
- जलवायु परिवर्तन के दौर में जीवन का संकेत
- रेगिस्तानी और शुष्क क्षेत्रों के लिए टिकाऊ समाधान
- जैव विविधता संरक्षण के लिए संकेत

शोध की झलक
750+ कैक्टस प्रजातियाँ 107 देश फूलों के बदलाव की गति और प्रजाति निर्माण की रफ्तार का विश्लेषण

“जो पौधा स्थिर दिखता है, वह भीतर सबसे तेज़ी से बदल रहा हो सकता है।”
— वैज्ञानिक निष्कर्ष

स्रोत: University of Reading et al., Biology Letters (2023)

- आखिर “Evolution की रफ्तार” मापते कैसे हैं वैज्ञानिक?
- वैज्ञानिक डीएनए और प्रजातियों के पारिवारिक संबंधों का अध्ययन करते हैं
- वे देखते हैं कि कितनी तेज़ी से नई प्रजातियाँ बनीं
- फूलों और संरचनाओं में बदलाव की गति का विश्लेषण किया जाता है
- कंप्यूटर मॉडल से evolutionary speed निकाली जाती है



प्रकृति का शांत सबक

कैक्टस की कहानी केवल वनस्पति विज्ञान की कहानी नहीं है। यह हमें प्रकृति का एक गहरा नियम भी समझाती है - जीवित वही रहता है जो बदलना सीखता है। और शायद यही वजह है कि रेगिस्तान का यह शांत पौधा करोड़ों वर्षों बाद भी धरती पर कायम है। जब दुनिया उसे स्थिर समझ रही थी, वह चुपचाप खुद को भविष्य के लिए तैयार कर रहा था।

बारिश पर भी
होगा कारोबार

क्या भारत में शुरू हो रहा है

जलवायु जोखिम का नया बाजार?

मुंबई की बारिश अब सिर्फ रोमांस, बाढ़ और ट्रैफिक जाम की कहानी नहीं रही। NCDEX ने देश का पहला वर्षा-आधारित वायदा अनुबंध लॉन्च कर मौसम को भी वित्तीय बाजार का हिस्सा बना दिया है। यह पहल केवल एक नए वित्तीय उत्पाद की शुरुआत नहीं, बल्कि जलवायु जोखिम को आर्थिक जोखिम मानकर उससे निपटने की दिशा में भारत का पहला बड़ा कदम है।

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

“रिमझिम गिरे सावन, सुलग-सुलग जाए मन...” मुंबई तीन चीजों के लिए दुनिया भर में मशहूर है - बॉलीवुड, दलाल स्ट्रीट और बारिश। मुंबई की बारिश सिर्फ एक मौसम नहीं, बल्कि एक अनुभव है। मरीन ड्राइव की भीगी सड़कें, लोकल ट्रेनों की रफ्तार, सड़क किनारे की कटिंग चाय और फिल्मों में बारिश से जुड़े रोमांटिक दृश्य दशकों से इस शहर की पहचान रहे हैं। लेकिन बारिश का एक दूसरा चेहरा भी है-बाढ़, जाम, ट्रेनों में देरी, रुके हुए निर्माण कार्य, बाधित सप्लाई चेन और कारोबार को होने वाला भारी आर्थिक नुकसान।

अब तक बारिश को प्रकृति का हिस्सा माना जाता था। लेकिन बदलती अर्थव्यवस्था और बढ़ते जलवायु जोखिमों के दौर में मौसम केवल प्राकृतिक घटना नहीं रह गया है। वह एक आर्थिक जोखिम बन चुका है। इसी बदलती सोच का परिणाम है कि नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज (NCDEX) ने देश का पहला वर्षा-आधारित फ्यूचर्स कॉन्ट्रैक्ट ‘RAINMUMBAI’ लॉन्च किया है। यह सिर्फ एक नया वित्तीय उत्पाद नहीं, बल्कि भारत में जलवायु जोखिम को वित्तीय जोखिम के रूप में स्वीकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। यह पहल ऐसे समय में आई है जब जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की अनिश्चितता लगातार बढ़ रही है और उसका प्रभाव खेती से लेकर उद्योग, परिवहन, ऊर्जा, बीमा और शहरी अर्थव्यवस्था तक हर क्षेत्र पर दिखाई दे रहा है।

क्यों जरूरी पड़ा ऐसा उत्पाद?

भारत दुनिया की सबसे अधिक मानसून-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। कम बारिश होने पर फसल उत्पादन प्रभावित होता है, खाद्य महंगाई बढ़ती है और ग्रामीण मांग कमजोर पड़ती है। वहीं अत्यधिक वर्षा बाढ़, जलभराव और परिवहन अवरोध पैदा कर आर्थिक गतिविधियों को बाधित करती है। मुंबई इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। हर साल मानसून के दौरान शहर में परिवहन, निर्माण, खुदरा व्यापार, बिजली आपूर्ति और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र प्रभावित होते हैं। जुलाई

2005 की भीषण बाढ़ ने शहर को कई दिनों तक ठप कर दिया था और हजारों करोड़ रुपये का आर्थिक नुकसान हुआ था। बाद के वर्षों में भी भारी वर्षा के कारण बीमा दावों, निर्माण लागत और परिचालन खर्चों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। इसके बावजूद अब तक कारोबार जगत के पास बारिश से जुड़े जोखिमों से बचाव का कोई प्रत्यक्ष वित्तीय साधन उपलब्ध नहीं था। यही कमी यह नया वर्षा वायदा अनुबंध भरने की कोशिश करता है।



जलवायु परिवर्तन के दौर में बढ़ रही है जरूरत

पिछले कुछ वर्षों में भारत में मौसम की चरम घटनाओं की आवृत्ति बढ़ी है। कहीं अचानक बाढ़ आती है, कहीं लंबे समय तक सूखा पड़ता है, तो कहीं कुछ घंटों की बारिश पूरे शहर की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देती है। जलवायु वैज्ञानिक लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि भविष्य में मानसून की प्रकृति और अधिक अनिश्चित हो सकती है। इसका असर सिर्फ खेती तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि ऊर्जा मांग, खाद्य आपूर्ति, परिवहन नेटवर्क, बीमा उद्योग और वित्तीय बाजारों तक पहुंचेगा। दुनिया के कई विकसित देशों में मौसम आधारित वित्तीय उत्पाद वर्षों से उपयोग में हैं। अमेरिका और यूरोप में ऊर्जा कंपनियां, बीमा कंपनियां, कृषि व्यवसाय और उपयोगिता क्षेत्र मौसम डेरिवेटिव्स का उपयोग जोखिम प्रबंधन के लिए करते हैं। भारत में यह वर्षा आधारित डेरिवेटिव इसी वैश्विक प्रवृत्ति की शुरुआत माना जा सकता है।

मुंबई वर्षा वायदा कैसे काम करता है?

NCDEX द्वारा शुरू किया गया यह वर्षा आधारित वायदा अनुबंध एक कैश-सेटलड वेदर डेरिवेटिव है, जिसका निपटान भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) द्वारा जारी आधिकारिक वर्षा आंकड़ों के आधार पर किया जाता है। यह उत्पाद वर्षा की गणना के लिए क्यूमुलैटिव डिवाइजन रेनफॉल (CDR) पद्धति का उपयोग करता है, जिसे IIT बॉम्बे के सहयोग से विकसित किया गया है। इसके माध्यम से मानसून के दौरान हुई वास्तविक वर्षा और ऐतिहासिक औसत वर्षा के बीच अंतर को मापा जाता है। यह कॉन्ट्रैक्ट जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर के लिए उपलब्ध है।

प्रमुख विशेषताएं

- कैश-सेटलड वायदा अनुबंध
- IMD डेटा पर आधारित निपटान
- NCDEX प्लेटफॉर्म पर ट्रेडिंग
- लगभग 10 प्रतिशत प्रारंभिक मार्जिन
- प्रतिदिन मार्क-टू-मार्केट सेटलमेंट
- वर्षा में 1 मिमी बदलाव का मूल्य ₹50

यदि वास्तविक वर्षा अनुमान से अधिक या कम होती है, तो उसी के अनुसार अनुबंध का मूल्य बदलता है। दूसरे शब्दों में कहे तो बारिश अब एक मापने योग्य और व्यापार योग्य वित्तीय चर बन गई है।



किन क्षेत्रों को होगा फायदा?

- 1. निर्माण और अवसंरचना क्षेत्र:** भारी बारिश के कारण निर्माण कार्य रुक जाते हैं, श्रम लागत बढ़ जाती है और परियोजनाओं में देरी होती है। वर्षा आधारित वायदा ऐसे जोखिमों की आंशिक भरपाई कर सकते हैं।
- 2. लॉजिस्टिक्स और परिवहन:** मुंबई जैसे शहरों में कुछ घंटों की भारी बारिश भी माल ढुलाई और यातायात को प्रभावित कर देती है। लॉजिस्टिक्स कंपनियां संभावित नुकसान के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा प्राप्त कर सकती हैं।
- 3. बीमा कंपनियां:** मौसम संबंधी दावों में बढ़ोतरी के दौरान बीमा कंपनियां अतिरिक्त जोखिम प्रबंधन

उपकरण के रूप में इनका उपयोग कर सकती हैं।

4. बिजली और उपयोगिता क्षेत्र: बारिश का सीधा प्रभाव बिजली की मांग और खपत पैटर्न पर पड़ता है। मौसम आधारित अनुबंध राजस्व स्थिरता में सहायक हो सकते हैं।

5. कृषि और कमोडिटी क्षेत्र: कृषि क्षेत्र पर वर्षा का प्रभाव सबसे प्रत्यक्ष होता है। बुवाई, उत्पादन, फसल गुणवत्ता, मंडियों में आवक और खाद्य मुद्रास्फीति सभी मानसून पर निर्भर करते हैं। ऐसे में मौसम आधारित वित्तीय साधन कृषि कारोबारियों और एग्री-बिजनेस कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण जोखिम प्रबंधन उपकरण बन सकते हैं।



किसानों के लिए इसका क्या अर्थ है?

फिलहाल यह वर्षा वायदा उत्पाद सीधे किसानों के लिए तैयार नहीं किया गया है। यह मुख्य रूप से संस्थागत निवेशकों, व्यापारियों, कंपनियों और बड़े व्यावसायिक उपभोक्ताओं के लिए है। फिर भी इसका महत्व किसानों के लिए कम नहीं है। यदि भारत में मौसम आधारित डेरिवेटिव्स का बाजार विकसित होता है, तो भविष्य में कृषि कंपनियाँ, किसान उत्पादक संगठन (FPO), खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और कृषि आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े संस्थान मौसम की अनिश्चितता से बचाव के लिए ऐसे उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। जैसे आज किसान फसल बीमा का लाभ लेते हैं, वैसे ही आने वाले वर्षों में मौसम जोखिम प्रबंधन के और अधिक उन्नत वित्तीय विकल्प विकसित हो सकते हैं।



भारत में जलवायु जोखिम आधारित वित्तीय युग की शुरुआत

यह वर्षा आधारित वायदा अनुबंध केवल एक नया वित्तीय उत्पाद नहीं है। यह उस व्यापक बदलाव का संकेत है जिसमें जलवायु को केवल पर्यावरणीय चुनौती नहीं, बल्कि आर्थिक और वित्तीय जोखिम के रूप में देखा जा रहा है। जिस प्रकार कमोडिटी, मुद्रा और ब्याज दरों से जुड़े जोखिमों के लिए वित्तीय उत्पाद विकसित हुए, उसी प्रकार भविष्य में तापमान, सूखा, बाढ़, जल उपलब्धता और अन्य मौसम संबंधी कारकों पर आधारित वित्तीय साधन भी विकसित हो सकते हैं। भारत जैसे मानसून-निर्भर देश के लिए यह बदलाव विशेष महत्व रखता है।

निष्कर्ष: दशकों तक भारत में मानसून को प्रकृति की कृपा या नाराजगी के रूप में देखा जाता रहा। किसान आसमान की ओर देखते थे, कारोबारी मौसम विभाग की भविष्यवाणियों पर नजर रखते थे और शहर बारिश के आगे बेबस हो जाते थे। लेकिन बदलते समय के साथ मौसम अब केवल प्राकृतिक घटना नहीं रह गया है। वह एक मापने योग्य आर्थिक जोखिम बन चुका है।

मुंबई वर्षा वायदा अनुबंध इसी बदलाव का प्रतीक है। यह केवल बारिश पर आधारित एक नया वित्तीय उत्पाद नहीं, बल्कि उस भविष्य की झलक है जहाँ जलवायु जोखिमों को भी वित्तीय बाजारों के माध्यम से प्रबंधित करने की कोशिश की जाएगी। वर्षों तक मुंबई की बारिश ने गीत, कहानियाँ, जाम और बाढ़ पैदा की। अब वह एक नया बाजार भी बना रही है।



फसल बीमा और वर्षा वायदा में अंतर

फसल बीमा	वर्षा वायदा
नुकसान के बाद मुआवजा	जोखिम के दौरान हेजिंग
किसान केंद्रित	व्यवसाय केंद्रित
दावा प्रक्रिया आवश्यक	बाजार आधारित निपटान
भौतिक नुकसान जरूरी	वर्षा डेटा पर्याप्त
सरकारी भागीदारी	एक्सचेंज आधारित व्यवस्था





खुरपे से मशीन तक...

छोटे किसानों का नया हथियार बना मिनी पावर वीडर

निराई-गुड़ाई जैसे सबसे मुश्किल और मेहनत वाले काम को आसान बना रही यह छोटी मशीन। कम लागत, कम मेहनत और ज्यादा उत्पादकता के दम पर मिनी पावर वीडर भारतीय खेतों में चुपचाप एक नई कृषि क्रांति लिख रहा है।

रफ्तार मीडिया | संवाददाता

सुबह के सात बजे हैं। महाराष्ट्र के नासिक जिले के एक खेत में कपास की कतारों के बीच एक किसान एक छोटी-सी मशीन के पीछे चलता दिखाई देता है। मशीन की आवाज ट्रैक्टर जैसी नहीं है, लेकिन उसका असर किसी बड़ी मशीन से कम भी नहीं। जहां कभी चार-पांच मजदूर पूरे दिन झुककर निराई-गुड़ाई करते थे, वहां अब कुछ घंटों में काम पूरा हो रहा है। मशीन मिट्टी को भुरभुरा करती हुई आगे बढ़ती है और खरपतवारों को जड़ से उखाड़ती जाती है। भारतीय खेती में अक्सर सबसे बड़े बदलाव शोर-शराबे के साथ नहीं आते। वे चुपचाप खेत की मेड़ों से होकर गुजरते हैं। मिनी पावर वीडर भी ऐसी ही एक तकनीक है, जो खेती के सबसे कठिन और अलोकप्रिय काम को आसान बना रही है। अगर किसी किसान से पूछा जाए कि खेती का सबसे थकाऊ और समय लेने वाला काम कौन-सा है, तो जवाब अक्सर होगा— निराई-गुड़ाई। खरपतवार (weeds) खेत के वे खामोश दुश्मन हैं जो फसल का पानी, पोषक तत्व और धूप चुरा लेते हैं। दशकों तक इनसे लड़ाई खुरपे और मजदूरों की मेहनत के भरोसे लड़ी जाती रही। लेकिन बढ़ती मजदूरी, श्रमिकों की कमी और समय के दबाव ने किसानों को नए विकल्प तलाशने पर मजबूर किया है। यहीं से शुरू होती है मिनी पावर वीडर की कहानी।

छोटी मशीन, बड़ा विज्ञान

पहली नजर में मिनी पावर वीडर एक साधारण मशीन लग सकती है, लेकिन इसकी डिजाइन बेहद सोच-समझकर तैयार की गई है। इसे फसलों की कतारों के बीच चलाने के लिए बनाया गया है ताकि खरपतवार साफ हों और मुख्य फसल सुरक्षित रहे। मशीन का दिल इसका इंजन होता है। हल्के मॉडल 50 से 63 सीसी के 2-स्ट्रोक इंजन के साथ आते हैं, जबकि अधिक ताकतवर मशीनों में 200 सीसी तक के 4-स्ट्रोक इंजन लगाए जाते हैं। इनकी क्षमता आमतौर पर 2 से 7 हॉर्सपावर के बीच होती

है। इंजन की तेज गति को सीधे मिट्टी में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इसलिए गियरबॉक्स या बेल्ट-पुली सिस्टम के जरिए उसकी स्पीड कम और टॉर्क बढ़ाया जाता है। नतीजतन नीचे लगे स्टील के ब्लेड मिट्टी में उतरकर खरपतवार की जड़ों को काटते हैं, मिट्टी को ढीला करते हैं और मशीन को आगे बढ़ाते हैं। ऑपरेटर को सिर्फ इसके पीछे चलकर दिशा नियंत्रित करनी होती है। अनुभव कुछ वैसा ही होता है जैसे कोई धीमी रफ्तार वाली मोटरसाइकिल चला रहा हो।



क्यों बढ़ रही है इसकी मांग?

भारत के करीब 86 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत वर्ग में आते हैं। उनके पास दो हेक्टेयर से भी कम जमीन होती है। ऐसे किसानों के लिए ट्रैक्टर खरीदना हर बार संभव नहीं होता, लेकिन मिनी पावर वीडर उनकी जरूरत और बजट दोनों के हिसाब से फिट बैठता है। बाजार में उपलब्ध हल्के मॉडल 15,000 से 25,000 रुपये के बीच मिल जाते हैं। मध्यम क्षमता वाले लोकप्रिय मॉडल 35,000 से 60,000 रुपये तक आते हैं, जबकि बड़े डीजल आधारित मॉडल की कीमत एक लाख रुपये तक पहुंच सकती है। लेकिन कहानी सिर्फ खरीद तक सीमित नहीं है।



किराए पर भी उपलब्ध

देश के कई राज्यों में कस्टम हायरिंग सेंटर (CHC) और कृषि मशीनरी बैंक किसानों को किराए पर मशीन उपलब्ध करा रहे हैं।

आमतौर पर 300 से 500 रुपये प्रति घंटे के किराए पर मिलने वाला मिनी पावर वीडर एक घंटे में उतना काम कर सकता है, जितना तीन

मजदूर पूरे दिन में करते हैं। यही वजह है कि छोटे किसान भी बिना बड़ी पूंजी लगाए इस तकनीक का फायदा उठा पा रहे हैं।

तीन दिन का काम अब चार घंटे में

नासिक के किसान संजय पाटिल बताते हैं कि पहले निराई-गुड़ाई के लिए छह से आठ मजदूर लगाने पड़ते थे। "बरसात के मौसम में मजदूर मिलना मुश्किल हो जाता था। कई बार खरपतवार बढ़ते रहते थे और हम सिर्फ इंतजार करते रहते थे। दो साल पहले हमने पावर वीडर खरीदा। अब वही काम चार-पांच घंटे में पूरा हो जाता है," वे कहते हैं। उनके मुताबिक मशीन ने सिर्फ लागत नहीं घटाई, बल्कि काम को समय पर पूरा करना भी संभव बनाया है।

महिलाओं के लिए राहत

भारतीय खेती में महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। लेकिन निराई-गुड़ाई जैसे काम सबसे ज्यादा शारीरिक दबाव भी उन्हीं पर डालते हैं। लगातार झुककर घंटों काम करने से कमर और रीढ़ की समस्याएं आम हैं। हल्के वजन वाले आधुनिक पावर वीडर इस दबाव को काफी हद तक कम करते हैं। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि छोटे और हल्के मॉडल ग्रामीण महिलाओं के लिए कृषि मशीनीकरण का सबसे उपयोगी चेहरा बन सकते हैं।

सिर्फ खरपतवार नहीं हटाता

विशेषज्ञों के मुताबिक मिनी पावर वीडर का असर सिर्फ निराई तक सीमित नहीं है। जब मशीन मिट्टी की ऊपरी परत को तोड़ती है तो जड़ों तक ऑक्सीजन का प्रवाह बेहतर होता है। मिट्टी की जल सोखने की क्षमता बढ़ती है और बारिश का पानी बहकर कम बर्बाद होता है। इससे फसल की बढ़वार पर सकारात्मक असर पड़ता है। मक्का, कपास, गन्ना, मिर्च, टमाटर और दूसरी कतार वाली फसलों में इसका उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।



सरकार का दांव

खरपतवार कई फसलों में उत्पादन को 30 से 40 प्रतिशत तक प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए केंद्र और राज्य सरकारें मशीनीकृत निराई को बढ़ावा दे रही हैं। सब-मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मेकेनाइजेशन (SMAM) और विभिन्न राज्य योजनाओं के तहत किसानों को 40 से 50 प्रतिशत तक सब्सिडी उपलब्ध है। कई राज्यों में महिला किसानों, अनुसूचित जाति-जनजाति और सीमांत किसानों को अतिरिक्त लाभ भी दिया जाता है।

चुनौतियां भी कम नहीं

हर तकनीक की तरह मिनी पावर वीडर की भी अपनी सीमाएं हैं। लंबे समय तक उपयोग के दौरान कंपन ऑपरेटर के हाथों और कंधों पर असर डाल सकता है। इसी वजह से निर्माता अब एंटी-वाइब्रेशन रबर माउंट और बेहतर ग्रिप वाले हैंडल विकसित कर रहे हैं। दूसरी बड़ी समस्या सस्ती और बिना ब्रांड वाली आयातित मशीनों की है। शुरुआती कीमत कम होने के बावजूद इनके स्पेयर पार्ट्स आसानी से उपलब्ध नहीं होते। नतीजतन छोटी खराबी भी मशीन को लंबे समय तक बंद कर सकती है। ट्रेनिंग की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। खासकर 2-स्ट्रोक इंजन वाले मॉडल में पेट्रोल और ऑयल का सही मिश्रण बेहद जरूरी होता है। छोटी सी गलती इंजन को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है।



RAFTAAR INSTITUTE OF MEDIA STUDIES

Admission Started for Crash/Vocational Course in Mass Communication

We Are Ready to Welcome You at
Raftaar Institute of Media Studies



**Be Ready
to
Join**

Course

100%
PLACEMENT
ASSISTANCE

Anchor

Reporter

Scriptwriter

Video Editor

Cameraman

Helpline Number
6203592707, 9334722857

**UTTAM NIWAS, HARMU HOUSING COLONY
RANCHI- 02, JHARKHAND**



वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप 2026

भारत ने स्वर्ण पदक का लगाया शतक

वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप 2026 सोमवार (8 जून) को अहमदाबाद के EKA एरिना में समाप्त हो गया। मेजबान भारत ने पहली वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 114 मेडल जीते, जिनमें 102 गोल्ड मेडल शामिल थे। दूसरे स्थान पर जापान रहा, जिसने तीन गोल्ड, तीन सिल्वर और पांच ब्रॉन्ज मेडल जीते। अर्जेंटीना तीसरे स्थान पर रहा, जिसकी इकलौती एथलीट नबीला बाराजा ने दो गोल्ड और तीन सिल्वर मेडल जीतकर यह कामयाबी दिलाई।

सर्वाधिक पदक जीतने के मामले में पड़ोसी देश नेपाल की टीम दूसरे स्थान पर रही, जिसने एक स्वर्ण, 36 रजत और 15 कांस्य पदक के साथ कुल 52 पदक जीते। हालांकि टीम पदक तालिका में पांचवें स्थान पर रही। उज्बेकिस्तान ने कुल 25 मेडल जीते, जिनमें एक गोल्ड, 13 सिल्वर और 11 ब्रॉन्ज मेडल शामिल थे।

प्रतियोगिता में 79 देशों के 522 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इसमें से 31 देशों ने कम से कम एक पदक जीता। दस देश स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहे। इस चैंपियनशिप में मेजबान भारत ने छह आयु वर्ग में 122 खिलाड़ी उतारे जिसमें सब जूनियर पुरुष और महिला (10-14 वर्ष), जूनियर पुरुष और महिला (14-18 वर्ष), सीनियर (18-28 वर्ष), सीनियर ए (28-35 वर्ष), सीनियर बी (35-45



वर्ष) और सीनियर सी (45-55 वर्ष) वर्ग शामिल हैं। अहमदाबाद में आयोजित पहली वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप एक

ऐतिहासिक घटना थी। यह योगासन के विकास में एक अहम मोड़ साबित हुई, जिसने भारत की इस प्राचीन कला को

एक ग्लोबल कॉम्पिटिटिव स्पोर्ट्स के तौर पर स्थापित किया और ओलंपिक मूवमेंट में इसे मान्यता दिलाने की दिशा में मजबूत कदम उठाए। वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप 2026 को युवा मामले और खेल मंत्रालय, आरुष मंत्रालय, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI), स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ गुजरात, गुजरात टूरिज्म और गुजरात योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन का सहयोग मिला। इन सभी ने मिलकर योगासन को एक ग्लोबल स्पोर्ट्स के तौर पर स्थापित किया और ओलंपिक में मान्यता दिलाने का रास्ता तैयार किया।



रोमांचक मुकाबले में आठ रन से जीता भारत ए सात रन पर चार विकेट गंवाना श्रीलंका ए को पड़ा भारी

क्र

तुराज गायकवाड़ के शतक के बाद गेंदबाज के दमदार प्रदर्शन ने भारत ए ने त्रिकोणीय सीरीज के पहले मुकाबले में श्रीलंका ए को आठ रन से हराया। भारत ए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में छह विकेट पर 277 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका ए की पूरी टीम 48.5 ओवर में 269 रन पर ऑलआउट हो गई। श्रीलंका को अंतिम ओवरों में सात रन के भीतर चार विकेट गंवाना भारी पड़ा और भारत ए ने इस तरह उसके मुंह से जीत छीन ली।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंका ए को निरोसन डिकवेला और अविष्का फर्नांडो ने अच्छी शुरुआत दिलाई। इन दोनों बल्लेबाजों ने पहले विकेट के लिए 93 रन जोड़े। लेकिन आयुष बदोनी ने पहले अविष्का (45) और फिर निरोसन (47) को आउट कर भारत ए को दो सफलता दिलाई। विपरज निगम ने इसके बाद नुवानिंदु फर्नांडो (8) को आउट किया। इसके बाद सदीरा समरविक्रमा और कप्तान सहान अराचिगे के बीच चौथे विकेट के लिए 78 रनों की साझेदारी हुई। अनुकूल रॉय ने समरविक्रमा (46)

भारत ए के लिए ऋतुराज और तिलक के अलावा प्रियांश आर्या ने 32, आयुष बदोनी ने 24, वैभव सूर्यवंशी ने 14 और प्रभसिमरन सिंह ने दो रन बनाए। वहीं, सूर्याश शेडगे नाबाद 26 और अनुकूल एक रन बनाकर नाबाद लौटे। श्रीलंका ए की ओर से मोहम्मद शिराज ने दो विकेट लिए, जबकि करुणारत्ने, गारुका संकेथ और वानुजा सहन को एक-एक सफलता मिली।



को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। चार विकेट गिरने के बावजूद अराचिगे टिके रहे और उन्होंने अर्धशतक पूरा किया। लेकिन दूसरे छोर से विकेट गिरते रहे और श्रीलंका ए पर दबाव भी बढ़ता चला गया। रविनिंदु फर्नांडो (1) के रूप में श्रीलंका ए को पांचवां झटका लगा। फिर चमीका करुणारत्ने (9) भी



पवेलियन लौट गए। अराचिगे क्रीज पर टिके रहे, लेकिन मैच का रुख तब बदल गया जब अंशुल कंबोज ने उन्हें बोल्ट कर श्रीलंका को सातवां झटका दिया। अराचिगे 72 गेंदों पर छह चौकों और दो छक्कों की मदद से 74 रन बनाकर आउट हुए। अराचिगे जब पवेलियन लौटे तो श्रीलंका का स्कोर सात विकेट

पर 262 रन था। यहां से भी टीम आसानी से मुकाबला जीत सकती थी, लेकिन श्रीलंका ए ने सात रन के भीतर आखिरी के चार विकेट गंवा दिए और भारत जीत दर्ज करने में सफल रहा। भारत ए के लिए अरशद खान, अनुकूल, आयुष और विपरज ने दो-दो विकेट झटके, जबकि कंबोज को एक सफलता मिली।



भीड़ से घिरीं श्रद्धा कपूर, ऐसे संभाला मामला; कहा- 'थोड़ा पीछे जाइए'; जमकर वायरल हो रहा वीडियो

स आमतौर पर हंसते-मुस्कुराते नजर आने वाली श्रद्धा इस बार थोड़ी परेशान दिखीं, जब फोटोग्राफर्स ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया। अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वर्ग और पहचान के बीच नए सेतु की आलिया भट्ट की दोस्त आकांक्षा रंजन बनेंगी दुल्हनिया, लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड से करेंगी शादी? जाने पूरी जानकारीदरअसल, श्रद्धा अपनी कार तक पहुंचीं, लेकिन भीड़ इतनी ज्यादा थी कि वह ठीक से कार का दरवाजा भी नहीं खोल पा रही थीं। इस स्थिति में वह थोड़ी असहज जरूर लगें, लेकिन उन्होंने इस मामले को शांति से संभाला। श्रद्धा ने बड़े ही शांत और विनम्र तरीके से पैपराजी से कहा, 'आप लोगों को थोड़ा पीछे जाना पड़ेगा, ये खुल नहीं रहा है।' उनके इस शांत रवैये की सोशल मीडिया पर काफी तारीफ हो रही है। थोड़ी देर बाद जब फोटोग्राफर्स पीछे हटे, तब श्रद्धा आराम से कार में बैठ पाईं। इस पूरे दौरान उन्होंने अपना व्यवहार बहुत ही सुलझा हुआ रखा। श्रद्धा कपूर जल्द ही फिल्म 'ईथा' में नजर आने वाली हैं, जिसे लक्ष्मण उतेकर डायरेक्ट कर रहे हैं और दिनेश विजन प्रोड्यूस कर रहे हैं। इस फिल्म में श्रद्धा पहली बार रणदीप हुड्डा के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। साथ ही मोहम्मद जीशान अय्यूब भी इसमें अहम भूमिका निभाते नजर आएंगे।

बताया जा रहा है कि फिल्म में श्रद्धा, मशहूर लोक कलाकार बिठाबाई का किरदार निभाएंगी, जो महाराष्ट्र की लावणी और तमाशा कला के लिए जानी जाती थीं। यह फिल्म रक्षा बंधन के मौके पर, यानी 28 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।



ONGOING PROJECT



Shree balaje enclave, namkur



Nandan enclave, tupurani

MODE OF PAYMENT

At the time of booking	20%
At the time of Foundation	20%
At the time of 1st floor casting	10%
At the time of 2nd floor casting	10%
At the time of 3rd floor casting	10%
At the time of 4th floor casting	10%
At the time of 5th floor casting	10%
Staircase and plaster and finishing work	10%
At the time of occupancy	10%

Terms and Conditions
 *Royalty Tax Charges will be extra
 as per Government Bureau
 *Electricity charged Extra

LOCATION MAP



PROJECT BY
NANDAN HEIGHTS LLP

☐ **Project Name** - Shree Balaje Enclave, Namkur, Bangalore, Karnataka
☐ **Project Name** - Nandan Heights Enclave, Tupurani, Bangalore, Karnataka


Nandan Heights LLP
 Address: Nandan Heights LLP, Nandan Heights Enclave, Tupurani, Bangalore, Karnataka
 Phone: 080-12345678

NANDAN HEIGHTS LLP

Projects

Saraswati Nandan Enclave

CNT FREE
TMC APPROVED



Well Planned 2 BHK Apartments
 at
 Tupurani (Bangalore)

BOOKING CONTACT NO
6203592707, 9334457379, 7970599666

☐ **Project Name** - Saraswati Nandan Enclave, Tupurani, Bangalore, Karnataka

附錄 A

附錄五- 續



SITE ADDRESS :

BELLAHI, OPPOSITE GAYA AIRPORT
GAYA (BIHAR)



raftaarhr@gmail.com



6203592707,8709733241,6203764769



7970599666

**सलुजा गोल्ड****TMT BARS****मज़बूती
सबकुछ है**